नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

# नंदन



मार्च '९०

४ रुपए



वाह । कितना प्यारा है उपहार
सचमुच इसका नहीं जवाब
मन बार - बार खाने को मचले
ऐसा है मॉर्टन का स्वाद ।
मॉर्टन स्वीट्स व टॉफियाँ — वर्षों से पूरे परिवार की मनपसन्द । स्वादिष्ट व पौष्टिक - इतने सारे जायकों में । चीनी, ग्लूकोज व क्रीमयुक्त शुद्ध दूध, के गुणों से भरपूर । चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेर्यस, सुप्रीम, चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मज़ेदार स्वादों में उपलब्ध ।
मुस्कुराहट भरा मॉर्टन का साथ ।
MORTON
SWEETS
मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ० मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार
CC/M-3/89 HIN
चेतावनी :
MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अपर गैंगेज सूगर एंड इंडस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिन्ह है । किसी भी प्रकार से व्यापार- चिन्ह अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है ।




## अंकुर बाल बुक क्लब

### पिंकी सीरीज के अन्य कामिक्स

पिंकी के मम्मी पापा
पिंकी और जोकर
पिंकी और चैरिटी का टिकट
पिंकी की पूसी
पिंकी और दादा जी का अखबार
पिंकी का पिल्ला
पिंकी और नानी की कहानी
पिंकी और हातिमताई
पिंकी और रंगीन कैमरा
पिंकी और साबुन के बुलबुले
पिंकी और मल्लिका का खिताब
पिंकी और मियां चिल्गोजा
पिंकी और झपट जी की पतंग
पिंकी और बंगाली रसगुल्ले
पिंकी और मुफ्त के बेर
पिंकी और छूमन्तर
पिंकी और टू-इन-वन

### सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा:–

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाकटिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। **सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।** पहली वी.पी. में बच्चों के जोक्स फ्री भेजी जायेगी।
3. हर माह छः पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम छः पुस्तकें निर्धारित करेंगे। यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में छः पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम 6 पुस्तकें मंगवाना जरुरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जायेगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 8 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 6 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

मुफ्त

**सदस्यता कूपन**

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।

नाम ........................................
पिता का नाम ........................................
पता ........................................
डाकखाना .................................... जिला ....................................

**डायमंड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002**





फार्म-4 (नियम 8 देखिये)

## नंदन

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थान | : नई दिल्ली |
| 2. | प्रकाशन अवधि | : मासिक |
| 3. | मुद्रक का नाम | : राजेन्द्र प्रसाद |
| | क्या भारत का नागरिक है? | : हाँ |
| | (यदि विदेशी है तो मूल देश) | : × × × |
| | पता | : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001 |
| 4. | प्रकाशक का नाम | : राजेन्द्र प्रसाद |
| | क्या भारत का नागरिक है? | : हाँ |
| | (यदि विदेशी है तो मूल देश) | : × × × |
| | पता | : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001 |
| 5. | सम्पादक का नाम | : जयप्रकाश भारती |
| | क्या भारत का नागरिक है? | : हाँ |
| | (यदि विदेशी है तो मूल देश) | : × × × |
| | पता | : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001 |
| 6. | उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों | : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001 |

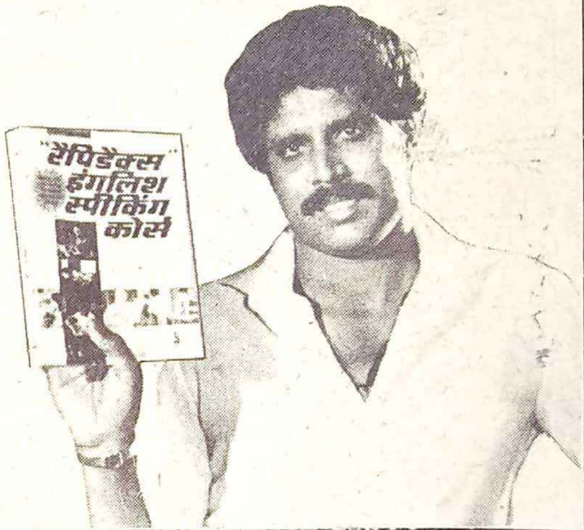
**मैं, राजेन्द्र प्रसाद, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।**

ह०/- (राजेन्द्र प्रसाद)

दिनांक : 28 फरवरी, 1990

प्रकाशक

प्रिय अभिभावक,
आपका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है,
अंग्रेजी अच्छी तरह लिख-पढ़ लेता है;
उसकी एकमात्र समस्या..........
वह इसे बोलने में हिचकता या अटकता है!




इसका समाधान बता रहे हैं
उसके प्रिय खिलाड़ी **कपिल देव**—

**"अंग्रेजी बोलचाल सीखने का एकमात्र सोर्स रैपिडैक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स"**

एक ऐसी पुस्तक,
जो बिक्री के अपने बनाए रिकॉर्ड भी निरंतर तोड़ती रही है
**3,00,00,000 तीन करोड़ पाठकों की पसंद**

It's really a good book to learn spoken English

—Kapil Dev



अपने बच्चे को
**'रैपिडैक्स'** ले दीजिए...
फिर देखिए फर्क!

इसके सरल-सुबोध पाठ
अंग्रेजी पढ़ने की दिशा में उसका उचित मार्गदर्शन करेंगे

कुछ ही समय में वह अंग्रेजी में बातचीत करने लगेगा
वह भी सही और फर्राटेदार अंग्रेजी में...

उसे उसकी मातृभाषा के माध्यम से ही सिखाएं
12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

सभी भाषाओं में
बड़े साइज के
400 से अधिक पृष्ठ
और मूल्य एक ही : 36/-
डाकखर्च : 5/-
प्रत्येक

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता

**पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006**

नया शो रूम : 10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

Vandana PM H 72

# आओ बात करें

समयपुर गांव में एक सेठ रहता था। नाम था राजीमल। कहने को लोग सेठ कहते, पर था दुकानदार ही। गांव के किसान कपास अच्छी उगा लेते थे। मौसम के दिनों में औरतें आ-आकर राजीमल से सामान खरीदतीं। पैसों के बदले कपास दे जातीं।

सेठ राजीमल के यहां एक कोठा कपास से भर गया। उसी गांव में एक चोर था। उसने राजीमल के यहां कपास भरा कोठा देख लिया। मन ही मन सोचा—क्यों न कपास ही चुराई जाए!

एक रात की बात। रात अंधेरी थी। चोर राजीमल के घर में घुस गया। सेठ बरामदे में सो रहा था। उसे चोर की आहट मिल गई। पर वह चुप रहा। इतना ही नहीं, खर्र-खर्र कर खर्राटे भरने लगा। कुछ ही दूर सेठानी सोई थी। वह तो पहले ही नींद में खोई घर्र-घर्र कर रही थी।

चोर समझ गया कि ऐसा अवसर फिर हाथ नहीं आएगा। बस, उसने सिर पर बंधी चादर खोलकर वहीं बिछा दी। धीरे-से कपास के कोठे में घुस गया। दोनों हाथों में भर-भरकर कपास चादर पर डालने लगा। वह कोठे में जाता और कपास लेकर बाहर आता।

चोर कोठे में था। इसी बीच राजीमल ने चादर खींच ली। उसे सिर के नीचे दबा लिया।

उधर जब कपास का काफी बड़ा ढेर लग गया, तो चोर ने सोचा कि अब गठरी बांध ले। उसने चादर का छोर ढूंढ़ा, तो मिला नहीं। चोर हैरान हुआ। तभी सेठ बोल उठा—"अरी राधू की मां! बात तो सुन . . ."

चोर सावधान हो गया। एक कोने में छिप गया।

सेठानी जग गई, तो बोली—"तुम्हें तो ठीक से नींद नहीं आती, मुझे क्यों जगा रहे हो?"

राजीमल बोला—"अरी, मुझे बड़ा बढ़िया सपना आया। तू सुन ले अभी . . ."

सेठानी बोली—"सुना दो।"

सेठ कहने लगा—"एक चोर था। चोरी करने एक सेठ के घर में जा घुसा।"

राधू की मां ने हामी भरी। बोली—"फिर!"

राजीमल बोला—"फिर क्या, वहां कपास भरा कोठा देखा, तो बावले ने सोचा—कपास ही चुराऊं।"

". . . अच्छा! कुछ और न मिला।" —राधू की मां ने हुंकारा देते हुए कहा। चोर खड़ा-खड़ा सूख रहा था। कहां फंस गया!

"राधू की मां, उस मूरख ने अपनी चादर जमीन पर बिछा दी, बटोर-बटोरकर उस पर कपास का ढेर लगाने लगा।" —राजीमल बोला।

पत्नी बोली—"फिर क्या हुआ?"

"काफी कपास हो गई, तो वह गांठ बांधने लगा। पर चादर तो वहां थी ही नहीं।" —राजीमल ने कहा।

—"कहां चली गई चादर?"

—"अरी, उड़न छू हो गई और कहां जाती?"

पत्नी बोली—"फिर क्या हुआ?"

—"फिर हुआ यह कि सेठ की नींद खुल गई और वह चिल्लाने लगा चोर-चोर-चोर!"

राधू की मां समझ गई। वह उठ बैठी। तभी उसने देखा कि चोर बाहर की ओर लपका जा रहा है। वह कहता जा रहा था—"चादर हड़प ली। मैं चोर या तू?"

फागुन का मौसम आता है हंसी-ठिठोली लेकर। ढोल बजते हैं, रंग छलकते हैं। तुम सब भी मन बहलाओ और खुशियों के रंगों में नहाओ।

—तुम्हारे भइया

जय प्रकाश भारती

# नंदन

मार्च '९०

वर्ष : २६ अंक : ५


## कहां क्या है




मुखपृष्ठ : जी.एस. भट्ट; एलबम : हरीश वर्मा

सम्पादक

**जयप्रकाश भारती**





सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'

उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन



# खेल खेल

—देवेन्द्रकुमार

राजकुमार अजय का सातवां जन्म दिन था। इसे धूमधाम से मनाने की तैयारियां की गई थीं! दूर-दूर के राज्यों को न्योते भेजे गए थे। पूरा नगर रात में परी-लोक की तरह जगमगा उठता था। अजय भी खूब प्रसन्न था—उसका मित्र विजय भी इस अवसर पर आया था।

विजय पड़ोसी राजा अभयवर्द्धन का बेटा था। अजय और विजय की तरह अभयवर्द्धन तथा अजय के पिता आदित्य भी आपस में गहरे मित्र थे। अजय और विजय हर समय, हर कहीं साथ-साथ दिखाई देते। खेलना-खाना-सोना सब इकट्ठे होता। यह देखकर आदित्य ने एक बार हंसकर कहा था—"अगर दोनों में से एक लड़की होता, तो दोनों का विवाह कर देते।" यह सुन, आनंदवर्द्धन काफी देर तक हंसते रहे थे।

जन्म-दिन का समारोह समाप्त हो गया। सब मेहमान विदा हो गए, पर अभयवर्द्धन को आदित्य ने रोक लिया था। अजय विजय से अलग होने को ही तैयार नहीं था। अभय बार-बार चलने को कहते, पर आदित्य कह देते—"भई, मैं क्या कहूं, अजय से पूछ लो।"

सुबह का समय था। खुली धूप में अजय और विजय उद्यान में खेल रहे थे। अजय ने कहा था—"विजय, आज हम राजा-राजा खेलेंगे।" खेल में दोनों राजा बने। उनके किले बने। मिट्टी के किले बनाने में कई दास लगे हुए थे। किले बनने के बाद दोनों राजा मिले। थोड़ी देर बाद ही उनमें लड़ाई छिड़ गई। आखिर राजा थे, तो युद्ध भी होना ही था। सैनिकों की भूमिका नौकर निभा रहे थे। दोनों छोटी-छोटी लकड़ी की तलवारें लिए एक-दूसरे से जूझ रहे थे। एकाएक विजय दौड़ा हुआ आया और उसने पैर की ठोकर से अजय का किला तोड़ दिया।

यह देख, अजय ने लकड़ी की तलवार फेंक दी। वह रो पड़ा—"मेरा किला तोड़ दिया। विजय ने मेरा किला तोड़ दिया।" विजय ने उसे समझाना चाहा, पर अजय था कि रोए जा रहा था। विजय कुछ देर वहां खड़ा रहा, फिर अपने पिता के पास चला गया।

अजय अपने टूटे किले के पास बैठा आंसू गिरा रहा था। राजा आदित्य को खबर मिली, तो वह हंसते हुए आ गए। उन्हें पूरी बात पता चल चुकी थी। उन्होंने हंसकर उसकी पीठ थपथपा दी। बोले—"बेटा, यह मिट्टी का किला था, टूट गया तो क्या हुआ ? अपना असली किला तो शान से खड़ा हुआ है।"

"अगर वह भी टूट गया तो ?"—अजय ने कहा। सुनकर राजा आदित्य का चेहरा गम्भीर हो गया। उन्होंने चारों ओर नजर घुमाई। किले की ऊंची-ऊंची दीवारें, उन पर बने बुर्ज धूप में चमक रहे थे। वह सोचने लगे—'क्या सचमुच यह भी हो सकता है! क्या कभी यह किला भी गिर सकता है ? नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।'

वह अजय को समझा-बुझाकर महल में ले गए। पर उस रात उन्हें नींद नहीं आई। यही सोचते रहे—अगर कभी किले पर आक्रमण हो गया तो ? मन ज्यादा अशांत हुआ, तो उन्होंने मंत्री को बुलवा

भेजा। उससे मन की चिंता कही। मंत्री को तो पहले ही सारा किस्सा मालूम था। उसने कहा—"महाराज, कभी-कभी बच्चे की बातें भी भविष्यवाणी की तरह होती हैं। हमें राजकुमार की बात का मर्म समझना चाहिए। जो आज मित्र हैं, वे कल शत्रु बनकर वैर भी निकाल सकते हैं। हमें भविष्य की बात अवश्य सोचनी चाहिए।" फिर वह बताने लगा कि अभयवर्द्धन की सेना कितनी बड़ी है, वह हर समय नए-नए हथियारों का निर्माण करवाता रहता है।

"कहीं वह मित्रता की आड़ में आक्रमण की तैयारी तो नहीं कर रहा है ?"—आदित्य ने शंका भरे स्वर में कहा।

मंत्री ने कहा—"महाराज, किसी के मन की थाह कैसे ली जा सकती है ? अभयवर्द्धन ने अपने सैनिकों की संख्या भी बढ़ाई है। मुझे तो दाल में कुछ काला नजर आता है।"

राजा आदित्य जितना सोचते, उलझते जाते। सुबह तक उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि अभयवर्द्धन दोस्ती का दिखावा कर रहा है और मौका पाते ही आक्रमण करेगा।

उसी दिन राजा अभयवर्द्धन विजय के साथ चले गए। आज किसी ने उनसे रुकने को नहीं कहा। अजय तो झगड़े के बाद से विजय से एक भी शब्द नहीं बोला था। कुछ दिनों में मैत्री विषैली हो गई। अभयवर्द्धन के जासूसों ने भी उन्हें सतर्क कर दिया—आदित्य आक्रमण की तैयारी कर रहे हैं।

दोनों ओर सैनिक तैयारियां शुरू हो गईं। पहले दोनों राज्य की सीमाएं खुली रहती थीं। लोग बेरोक-टोक आते-जाते थे। अब बंधन लग गया। तरह-तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। एक दिन राजा आदित्य और अभयवर्द्धन की सैनिक टुकड़ियों में जरा-सी बात पर मुठभेड़ हो गई। दोनों ओर के कई सैनिक मारे गए। वातावरण और भी बिगड़ गया। पर राजा अजय-विजय को इस बारे में ज्यादा पता नहीं था। पता होता भी, तो वे क्या करते, उनका खेल बिगड़ चुका था। अजय सोचता था—'मुझे विजय से इस तरह नहीं लड़ना चाहिए था।' विजय के मन में आता, अगर मैंने खेल-खेल में उसका किला न तोड़ा होता, तो गड़बड़ न होती।'

एक दिन अजय ने राजा आदित्य से कहा—"पिता जी, मैं विजय से मिलना चाहता हूं।" यह सुनते ही आदित्य बुरी तरह भड़क उठे। उन्होंने कहा—"मेरे सामने भूलकर भी उसका नाम मत लेना। नहीं तो अच्छा न होगा। वह और उसके पिता हमारे दुश्मन हैं।"

नन्हे अजय की समझ में न आता कि एकाएक विजय उनका दुश्मन कैसे हो गया ? पर पिता को क्रोधित देखकर वह चुप रह गया।

विजय का मन जैसे उस दिन से बुझ-सा गया। उसने खाना छोड़ दिया। हर समय गुम, उदास रहता। एक दिन उसे तेज ज्वर चढ़ आया। बुखार में बड़बड़ाता रहता। राजवैद्य की चिकित्सा से ज्वर तो उतर गया, पर उदासी तो मन में थी। वह कैसे दूर होती ?

उन्हीं दिनों राजा अभयवर्द्धन के गुरु जीवनाथ भ्रमण करते हुए राजधानी में आए। उन्हें पूरी घटना पता थी। अभयवर्द्धन ने विजय के बारे में कहा। उसे देखकर जीवनाथ बोले—"राजमहल के कृत्रिम



वातावरण में कुछ न होगा। कुछ दिन के लिए विजय को मेरे आश्रम में भेज दो। हरे-भरे शांत वातावरण में रहेगा, तो जल्दी ठीक हो जाएगा।''

''महाराज, आजकल युद्ध काल है। न जाने पड़ोसी राजा आदित्य कब आक्रमण कर दे?''—अभय वर्द्धन ने चिंतित स्वर में कहा।

जीवनाथ मुसकराने लगे। बोले—''आश्रम से युद्ध और कलह दूर रहती हैं। वहां कोई भय नहीं।''

राजा अभयवर्द्धन ने कुछ सैनिकों के साथ विजय को जीवनाथ के आश्रम में भेज दिया। सैनिक वन में पहरेदारी करने लगे। जीवनाथ जानते थे कि विजय के मन में क्या पीड़ा है और इसे कैसे दूर किया जा सकता है।

आदित्य का मंत्री जीवनाथ का भक्त था। जीवनाथ ने उसे गुप्त संदेश भेजकर बुलवाया। वह रात के समय आया—वेश बदलकर। जीवनाथ ने उसे विजय के बारे में बताया। पूछा—''क्या तुम अजय को एक दिन के लिए यहां ला सकते हो?''

सुनकर मंत्री कांप उठा। उसने कहा—''प्रभु, मेरे प्राण चले जाएंगे। महाराज बहुत क्रोध में हैं।''

जीवनाथ ने कहा—''राजा का मन बनाने-बिगाड़ने वाले तो तुम ही हो। उनसे कुछ मत कहो। चुपचाप किसी बहाने से ले आओ। अगर विजय को कुछ हो गया, तो फिर अजय भी स्वस्थ नहीं रह सकेगा।'' वह मंत्री को देर तक समझाते रहे।

मंत्री लौट गया। अगले दिन सैर कराने के बहाने से वह अजय को नगर से बाहर ले आया। फिर जीवनाथ के आश्रम में जा पहुंचा। अजय की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, पर विजय को देखते ही वह दौड़कर उससे लिपट गया। दोनों मित्र आंसू बहाते रहे, फिर खिलखिलाने लगे। कुछ देर बाद दोनों एक-दूसरे का हाथ थामे आश्रम के कुंजों में भाग-दौड़ कर रहे थे।

लेकिन यह खबर गुप्त नहीं रह सकती थी। राजा अभयवर्द्धन और आदित्य दोनों को ही पता चल गया। दोनों ही अपने सैनिकों के साथ धड़धड़ाते हुए आश्रम में आ पहुंचे। पर आश्रम का प्रवेश द्वार बंद था। वहां खड़े थे गुरु जीवनाथ।

आदित्य तो मारे क्रोध के जैसे बावला हो उठा था। उसने कड़क कर कहा—''आपने साधु होकर धोखा दिया। अजय को चोरी से बुलवाया, मेरे शत्रु के बेटे से मिलवाया। कहां है वह? उसे बाहर लाइए। आश्रम के द्वार खोल दीजिए।''

जीवनाथ ने कहा—''राजन्, आश्रम के द्वार मेरे जीवन में पहली बार बंद हुए हैं, क्योंकि आज क्रोध का अंधेरा अंदर घुसना चाहता है। मैं उसे अंदर प्रवेश नहीं करने दूंगा।''

आदित्य तलवार थामे बढ़ने को हुआ, पर जीवनाथ आश्रम के द्वार पर अटल खड़े थे। थोड़ी दूर पर अभयवर्द्धन भी अपने सैनिकों के बीच खड़ा था।

जीवनाथ ने अंदर मुंह करके पुकारा—''अजय विजय, यहां आओ।'' दोनों मित्र एक-दूसरे का हाथ थामे आश्रम के बंद द्वार के पीछे आ खड़े हुए। जीवनाथ ने दरवाजा खोल दिया। बोले—''तुम दोनों बड़ों ने बच्चों का खेल बिगाड़ दिया। इन दोनों ने अपनी भूल समझ ली, ये फिर एक हो गए। जानते हो, अगर मैं अजय को न बुलवाता, तो विजय को पता नहीं क्या हो जाता और अपने मित्र को खोकर क्या अजय जीवित रहता? कभी नहीं। इनका खेल चलने दो। देखते-देखते दो अच्छे मित्र जानी दुश्मन बन गए हैं। क्या यह अच्छा है? अजय-विजय लड़ाई भूल गए, तो फिर तुम दोनों ऐसा क्यों नहीं करते?'' कोई कुछ समझ पाता, इससे पहले ही जीवनाथ ने आदित्य और राजा अभयवर्द्धन के हाथ आपस में मिला दिए।

दोनों कुछ पल कसमसाते खड़े रहे, फिर राजा अभयवर्द्धन के होंठों पर एक मुसकान फैल गई। आदित्य भी हंसने लगा। वन का शांत वातावरण हंसी से झनझना उठा। अगले ही पल दोनों मित्र राजा गले मिल रहे थे। दोनों की तलवारें अब म्यान में बंद थीं। आश्रम के कुंजों में अजय-विजय धमा-चौकड़ी मचा रहे थे। ●



नंदन एलबम : ७४

**महारास : रस बरसे मधुवन में**



# तीन घेरे

—कविराज ओमप्रकाश

दादी की एक ही रट थी— 'पहाड़ी पार सुमेरगढ़ मत जाना।' जीतसिंह सुन-सुनकर परेशान हो गया था। दादी जितना मना करती थी, उतना ही मचल उठता था उसका मन।

एक बार उसने पूछ ही लिया था— "दादी, तुम मुझे सुमेरगढ़ जाने से क्यों मना करती हो? आज यह बात मैं पूछकर ही रहूंगा।" दादी पहले तो टालती रहीं। फिर उन्हें बताना ही पड़ा। उन्होंने उदास स्वर में कहा— "बेटा, सुमेरगढ़ वाले हमारे दुश्मन हैं। वहीं के जमींदार ने तेरे पिता को बहुत परेशान किया था। एक रात वह सुमेरगढ़ गए, तो फिर लौटकर नहीं आए। मैं तेरे ऊपर सुमेरगढ़ की छाया भी नहीं पड़ने दूंगी।" इतना कहकर दादी की आंखें भर आईं।

जीतसिंह अपनी बूढ़ी दादी के साथ सुंदारा गांव की एक हवेली में रहता था। धीरे-धीरे उसने सब कुछ जान लिया। उसके पिता अमरसिंह बहुत रोब वाले व्यक्ति थे। सुमेरगढ़ में उनके रिश्तेदार रहते थे। जमीन-जायदाद को लेकर दुश्मनी इतनी बढ़ी कि अमरसिंह को जान से हाथ धोना पड़ा।

जीतसिंह की दादी अपने पोते का बहुत ध्यान रखती थीं। जीतसिंह अब पंद्रह वर्ष का हो गया था। उसे लगता था, पिता की मौत का बदला लेना चाहिए। एक-दो बार उसने दादी से अपने मन की बात कही। सुनकर दादी बहुत घबरा गईं। उसे मना किया—"बेटा, अभी समय नहीं आया है। भूलकर भी पहाड़ी पार सुमेरगढ़ मत जाना!"

एक रात जीतसिंह को नींद नहीं आ रही थी। वह सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए? सोचते-सोचते वह परेशान हो उठा। उसे पक्का विश्वास

हो गया था कि दादी बदला नहीं लेने देंगी । जीतसिंह ने घर से भागकर सुमेरगढ़ जाने का निश्चय किया । मन में बदले की आग जल रही थी ।

उस रात दादी गहरी नींद में सो रही थीं। जीतसिंह मौका देख, हवेली से निकल आया। नौकर-चाकर भी ऊंघ रहे थे।

वह सुमेरगढ़ वाले रास्ते पर तेजी से चल दिया । मन में बस एक ही आवाज उठ रही थी—'बदला ! बदला !'

आगे जंगल था । जीतसिंह सोच में डूबा चला जा रहा था— एकाएक वह लड़खड़ाया और एक गड्ढे में जा गिरा । गड्ढा गहरा था । तली में सूखी घास थी, इसलिए जीतसिंह को चोट नहीं आई । मगर वह सोचने लगा कि गडढे से कैसे बाहर निकलेगा । अंधेरे में कुछ पता ही नहीं चल रहा था ।

एकाएक गडढे में एक तरफ प्रकाश फैल गया । फिर फुफकार सुनाई दी । देखते-देखते एक सांप गड्ढे की दीवार में बने छेद से निकल आया । प्रकाश उसके सिर से आ रहा था । अब तो जीतसिंह भय से अधमरा ही हो गया। घिग्गी बंध गई ।

सांप ने मनुष्य की बोली में कहा— "डरो मत जीतसिंह ! मैं तुम्हारी सहायता के लिए आया हूं । तुम्हें दादी की सलाह माननी चाहिए थी । पर मैं तुम्हारी भावना भी समझता हूं । आओ, मेरे पीछे-पीछे चले आओ, डरो मत ।" सांप फिर उसी सूराख में प्रवेश कर गया । धीरे-धीरे छेद बड़ा होने लगा । जीतसिंह असमंजस में रुका वहीं खड़ा रहा । तभी सूराख से आवाज आई— "चले आओ, डरो मत ।"

अब जीतसिंह भी रेंगकर उसी सूराख में बढ़ने लगा । आगे-आगे रोशनी थी। थोड़ी देर बाद वह गड्ढे से बाहर निकल आया ।

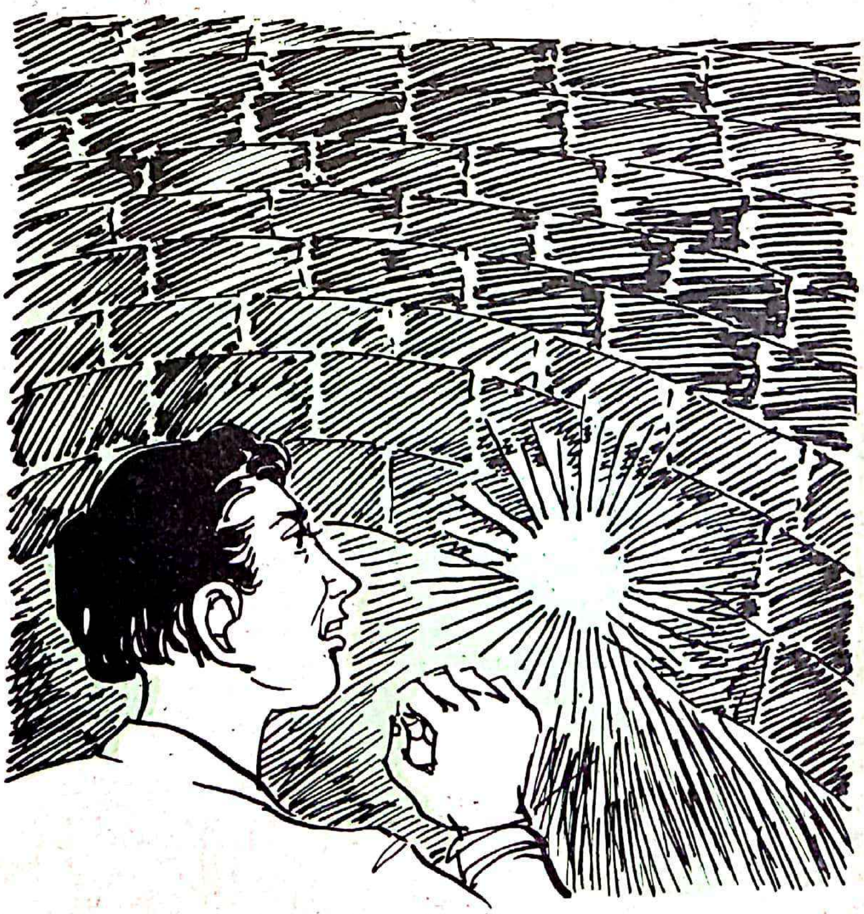
सांप ने कहा— "जीतसिंह, आज की रात यहीं किसी पेड़ पर बिता दो । मैं अपने गुरु से तुम्हारे बारे में पूछने जा रहा हूं । मेरी प्रतीक्षा करना ।" इतना कह कर सांप अदृश्य हो गया । वन में जंगली जानवरों की आवाजें गूंज रही थीं । जीतसिंह झट पास के पेड़ पर चढ़ गया । वह हाल की विचित्र घटनाओं के बारे में सोच रहा था । सब कुछ सपने की तरह लग रहा था । लेकिन यह सपना कैसे हो सकता था ! क्या सांप ने उसे गड्ढे से बाहर नहीं निकाल दिया था !

पेड़ पर बैठा-बैठा वह इधर-उधर देख रहा था— तभी नीचे फिर प्रकाश हो गया । सांप दिखाई दिया । आवाज आई— "उतर आओ, जीतसिंह ।"

जीतसिंह नीचे उतरा । उसने देखा, पेड़ के नीचे एक छोटी-सी थैली पड़ी है । सांप ने कहा— "इस थैली को खोलो । इसमें तीन टिकियां हैं— गोल, तिकोनी और चौकोर ।

"गोल टिकिया में आग है । तिकोनी टिकिया में पानी की शक्ति छिपी है और चौकोर टिकिया में तूफान कैद है । ये तीनों चीजें मेरे गुरु ने तुम्हारी रक्षा के लिए दी हैं । जब भी खतरा हो, चाहे जिस टिकिया को हाथ में लेकर मुझे याद करो— तुम सुरक्षित रहोगे। दुश्मन नष्ट हो जाएंगे ।"

"तब तो मैं अपने पिता के हत्यारों से बदला ले सकूंगा ।"— जीतसिंह ने तुरंत कहा ।



हो गया था कि दादी बदला नहीं लेने देंगी। जीतसिंह ने घर से भागकर सुमेरगढ़ जाने का निश्चय किया। मन में बदले की आग जल रही थी।

उस रात दादी गहरी नींद में सो रही थीं। जीतसिंह मौका देख, हवेली से निकल आया। नौकर-चाकर भी ऊंघ रहे थे।

वह सुमेरगढ़ वाले रास्ते पर तेजी से चल दिया। मन में बस एक ही आवाज उठ रही थी—'बदला! बदला!'

आगे जंगल था। जीतसिंह सोच में डूबा चला जा रहा था— एकाएक वह लड़खड़ाया और एक गड्ढे में जा गिरा। गड्ढा गहरा था। तली में सूखी घास थी, इसलिए जीतसिंह को चोट नहीं आई। मगर वह सोचने लगा कि गडढे से कैसे बाहर निकलेगा। अंधेरे में कुछ पता ही नहीं चल रहा था।

एकाएक गडढे में एक तरफ प्रकाश फैल गया। फिर फुफकार सुनाई दी। देखते-देखते एक सांप गड्ढे की दीवार में बने छेद से निकल आया। प्रकाश उसके सिर से आ रहा था। अब तो जीतसिंह भय से अधमरा ही हो गया। घिग्गी बंध गई।

सांप ने मनुष्य की बोली में कहा— "डरो मत जीतसिंह! मैं तुम्हारी सहायता के लिए आया हूं। तुम्हें दादी की सलाह माननी चाहिए थी। पर मैं तुम्हारी भावना भी समझता हूं। आओ, मेरे पीछे-पीछे चले आओ, डरो मत।" सांप फिर उसी सूराख में प्रवेश कर गया। धीरे-धीरे छेद बड़ा होने लगा। जीतसिंह असमंजस में रुका वहीं खड़ा रहा। तभी सूराख से आवाज आई— "चले आओ, डरो मत।"

अब जीतसिंह भी रेंगकर उसी सूराख में बढ़ने लगा। आगे-आगे रोशनी थी। थोड़ी देर बाद वह गड्ढे से बाहर निकल आया।

सांप ने कहा— "जीतसिंह, आज की रात यहीं किसी पेड़ पर बिता दो। मैं अपने गुरु से तुम्हारे बारे में पूछने जा रहा हूं। मेरी प्रतीक्षा करना।" इतना कह कर सांप अदृश्य हो गया। वन में जंगली जानवरों की आवाजें गूंज रही थीं। जीतसिंह झट पास के पेड़ पर चढ़ गया। वह हाल की विचित्र घटनाओं के बारे में सोच रहा था। सब कुछ सपने की तरह लग रहा था। लेकिन यह सपना कैसे हो सकता था! क्या सांप ने उसे गड्ढे से बाहर नहीं निकाल दिया था!

पेड़ पर बैठा-बैठा वह इधर-उधर देख रहा था— तभी नीचे फिर प्रकाश हो गया। सांप दिखाई दिया। आवाज आई— "उतर आओ, जीतसिंह।"

जीतसिंह नीचे उतरा। उसने देखा, पेड़ के नीचे एक छोटी-सी थैली पड़ी है। सांप ने कहा— "इस थैली को खोलो। इसमें तीन टिकियां हैं— गोल, तिकोनी और चौकोर।

"गोल टिकिया में आग है। तिकोनी टिकिया में पानी की शक्ति छिपी है और चौकोर टिकिया में तूफान कैद है। ये तीनों चीजें मेरे गुरु ने तुम्हारी रक्षा के लिए दी हैं। जब भी खतरा हो, चाहे जिस टिकिया को हाथ में लेकर मुझे याद करो— तुम सुरक्षित रहोगे। दुश्मन नष्ट हो जाएंगे।"

"तब तो मैं अपने पिता के हत्यारों से बदला ले सकूंगा।"— जीतसिंह ने तुरंत कहा।





"यह काम ईश्वर को करने दो। हो सकता है, बदला लेने के चक्कर में तुमसे अन्याय हो जाए। इन चमत्कारी टिकियों से तुम्हारी रक्षा होगी। ये तुम्हारे लिए हथियार का काम कभी नहीं करेंगी।"— इतना कहकर सांप ने अपने सिर पर लगी चमचमाती मणि धरती पर गिरा दी। फिर कहा— "जीतसिंह, मणि को लेकर मुट्ठी में बंद करो। फिर नीचे रख दो।"

जीतसिंह ने वैसा ही किया। मणि हाथ में लेते ही, उसके मन में अनोखी शांति छा गई। क्रोध और निराशा के भाव न जाने कहां चले गए। लगा, जैसे शरीर में शक्ति भरती जा रही है। चोट का दर्द और थकान भी जाती रही।

सांप ने मणि को मुंह में रख लिया और अदृश्य हो गया। जीतसिंह सोच में डूबा वहीं खड़ा रहा। कुछ सोचकर दोबारा सुमेरगढ़ जाने वाले रास्ते पर चल दिया। अब मन में गुस्सा नहीं था।

दिन निकल आया था। सामने सुमेरगढ़ की बस्ती दिखाई दे रही थी। लोग अपने कामों में लगे थे। जीतसिंह जाकर चौपाल के सामने खड़ा हो गया। उसने वहां बैठे बूढ़े से कहा— "मैं सुंदारा के अमरसिंह का बेटा जीतसिंह हूं।"

जीतसिंह के आने की खबर सुमेरगढ़ में आग की तरह फैल गई। उसके पिता के हत्यारे जमींदार ने सुना, तो झट कई लठैतों के साथ वहां चला आया। लठैतों ने जीतसिंह को घेर लिया। गांव वाले हैरान थे कि जीतसिंह अपने आप मौत के मुंह में क्यों चला आया?

लेकिन जमींदार तथा उसके लठैतों को कुछ करने का मौका नहीं मिला। पलक झपकते ही जीतसिंह के चारों ओर तीन घेरे बन गए। एक था आग का। दूसरे घेरे में लहरें उठती दिखाई दे रही थीं— और उससे आगे तूफानी हवा बह रही थी।

जीतसिंह ने कहा— "मैं लड़ने नहीं आया।" और वह जमींदार की तरफ बढ़ा। जमींदार और उसके लठैत आग के घेरे में फंसकर झुलसने लगे। फिर लहरें उन्हें डुबोने लगीं।

जीतसिंह के विरोधी बेहाल होकर जमीन पर गिर पड़े। वे चीख-चिल्ला रहे थे। क्षमा मांग रहे थे। गांव वाले दुष्ट जमींदार पर हंस रहे थे। तीन घेरों के बीच जीतसिंह सुरक्षित खड़ा था।

तभी जीतसिंह ने दादी को आते देखा। उसे ढूंढती हुई वहां आ पहुंची थीं।

"दादी।" — जीतसिंह चिल्लाया और उनसे जा लिपटा। आग, पानी और तूफान के घेरे गायब हो गए।

सुमेरगढ़ के जमींदार ने जीतसिंह की दादी के पैर पकड़ लिए। वह क्षमा मांग रहा था। दादी ने उसे क्षमा कर दिया। कहा— "तेरा हिसाब ईश्वर करेगा।"

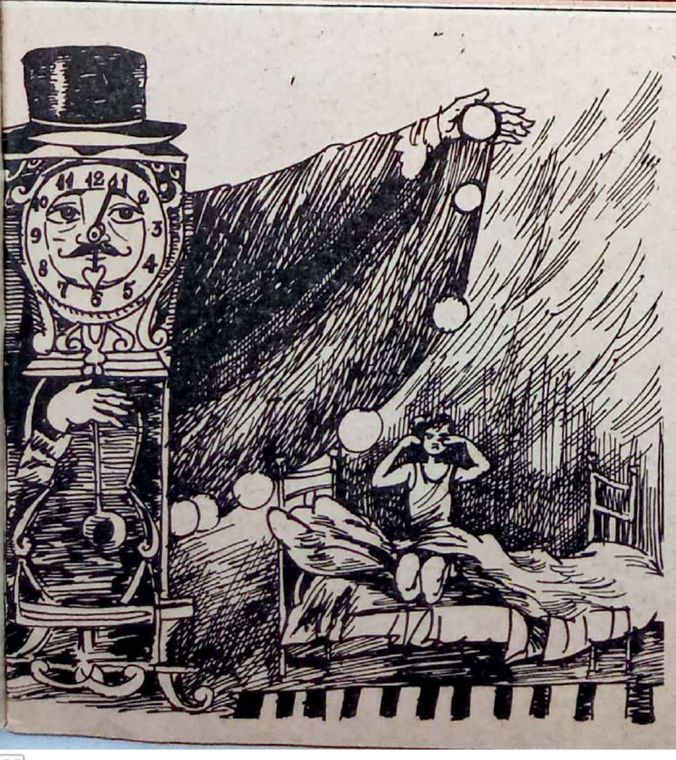
उस दिन के बाद से सुमेरगढ़ और सुंदारा के बीच बनी दुश्मनी की दीवार गिर गई। सुमेरगढ़ के जमींदार ने छीनी हुई जमीन जीतसिंह को लौटा दी। ●

# आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट।**



## कहानी-लिखो—७६

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे, १० मार्च '९० तक **सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर, प्रकाशित की जाएगी।

**परिणाम : मई '९०**

## चित्र-पहेली—७६

'इस बार छुट्टियां कैसी बीतेंगी' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। उसे १० मार्च '९० तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद किया गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा। **परिणाम : जून '९०**

# भूरी गाय

—क्षमा शर्मा

बूढ़ा हो चला था रामदेव । कुछ वर्ष पहले पत्नी की मृत्यु हो गई थी । कारोबार दोनों बेटों ने संभाल लिया था । घर में बहुएं थीं, नाती-पोते थे । लेकिन रामदेव को लगता, जैसे किसी को उसकी जरूरत नहीं है । कोई उसकी बात तक न सुनता था । रामदेव इस बारे में कुछ कहता, तो घर में जैसे जंग छिड़ जाती । बस, एक दिन परेशान हो, रामदेव घर छोड़कर चला गया ।

चलते-चलते वह थक गया । सुस्ताने के लिए सड़क के किनारे बैठ गया । वहां बैठा वह अपने अतीत के बारे में सोचने लगा । घंटों बीत गए । सड़कों से गुजरते लोगों ने वहां रामदेव को बैठे देखा, तो उसे भिखारी समझ लिया । किसी ने उसके आगे कुछ पैसे फेंक दिए, तो कोई उसे भूखा समझ, खाने-पीने की कुछ चीजें रख गया ।

यह सब देख, रामदेव को धक्का लगा । वह भिखारी नहीं था । न ही सड़क के किनारे भीख मांगने बैठा था । लेकिन उसे भूख भी बहुत तेज लगी थी । उसने वहां रखे केलों की तरफ हाथ बढ़ाया, मगर रुक गया । सोचने लगा—'क्या भीख में मिली चीजों को खा लूं !'

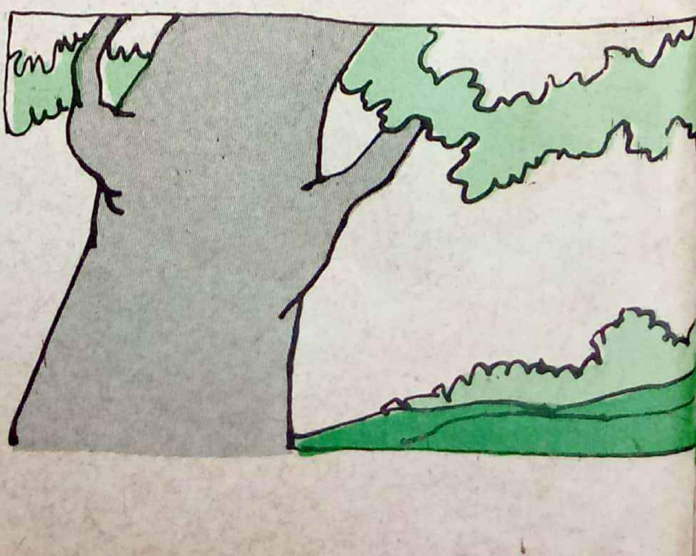
भूख थी कि उसे ललचा रही थी, मगर मन उसे धिक्कार रहा था । तभी उसने एक गाय को अपनी तरफ आते देखा । गाय काफी कमजोर थी । इतनी कि उसकी पसलियों तक को गिना जा सकता था । वह धीरे-धीरे चल रही थी । न जाने क्यों, गाय रामदेव के पास आ कर रुक गई ।

रामदेव को लगा—शायद गाय भी मेरी तरह अकेली और लाचार है । जहां यह रहती होगी, वहां भी कोई उसके लौटने का इंतजार नहीं करेगा । रामदेव को गाय पर दया आ गई । उसने गाय को केले खिला दिए । फिर उसके सिर पर हाथ फेरा । उसकी गरदन सहलाई । स्नेह पाकर जैसे गाय भी द्रवित हो गई । चुपचाप खोई-खोई आंखों से उसे देखती रही ।

रामदेव अपने से पूछने लगा—काश ! मैं अपने बच्चों को ऐसा ही प्यार कर पाता । पर गलती मेरी ही है । जब वे छोटे थे, मैंने कभी सोचा ही नहीं कि उन्हें भी पिता के प्यार की जरूरत हो सकती है. बस, बात-बात पर डांटना, उपदेश देना । अब वे बड़े हो गए, तो वे मुझे क्यों माने ? क्या पाया उन्होंने मुझसे ?'

शाम हो रही थी । वातावरण में हलकी-सी ठंड भी उभर आई थी । दिन तो कट गया । रात कहां कटे ? वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा । कहीं कोई धर्मशाला, कोई वरांडा, कोई ऐसी जगह मिल जाए, जहां यह सर्दी की रात कट सके । तभी उसने अपने को मंदिर की सीढ़ियों के पास पाया । वह वहीं बैठ गया । लेकिन यह क्या ! गाय भी उसके पीछे-पीछे वहां तक चली आई थी ।

भक्त लोग वहां से गुजरते । वे रामदेव को प्रसाद देते जाते । एक भक्त ने आगे बढ़कर गाय को भी एक लड्डू खिला दिया । फिर तो परिपाटी-सी चल पड़ी । जो भी मंदिर से बाहर आया, उसने रामदेव को प्रसाद दिया और साथ-साथ गाय को भी कुछ न कुछ खिलाया । धीरे-धीरे रात गहरा गई । मंदिर से भीड़ छंटने लगी । तभी पुजारी जी मंदिर से बाहर आए । रामदेव को अकेला बैठा देख, वह उसके पास गए । सारी बात पूछी । पुजारी जी के शब्दों में इतनी मिठास थी कि रामदेव अपने को रोक न सका । रोते-रोते बोला—"अब इस उम्र में कहां जाऊं ? किसी को मेरी जरूरत नहीं ।"— "ऐसा क्यों सोचते हो



रामदेव । ईश्वर को सबकी जरूरत है । आओ, भगवान के इस घर के दरवाजे सबके लिए खुले हैं ।''

रामदेव ने पुजारी जी को गाय के बारे में बताया, तो वह बोले—''गऊ माता इस द्वार पर बहुत भाग्य से आती हैं । चलो, उनका भी इंतजाम हो जाएगा ।''

रामदेव की तो जैसे मन की मुराद पूरी हो गई । मंदिर के पिछवाड़े बनी कोठरी में वह रहने लगा । गाय को भी सामने पड़े छप्पर में बांध दिया गया ।

रामदेव के आने से पुजारी जी को काफी सहायता मिली । वह पूरा दिन मंदिर की सफाई आदि के काम में जुटा रहता । गाय की भी अच्छी देखभाल होने लगी । दोनों को अच्छा खाने-पीने को मिलने लगा, तो गाय का कमजोर शरीर तगड़ा हो गया । रामदेव के चेहरे पर भी रौनक आ गई । वह मंदिर के कामों के साथ-साथ गाय की भी खूब सेवा करता था । मंदिर में दूसरे पशु भी थे । मगर रामदेव को अपनी गाय से विशेष प्यार था । उसने उसका नाम रखा था—भूरी ।

एक शाम पुजारी जी ने रामदेव को बुलाया । कहा—''रामदेव, मुझे कुछ दिन के लिए बाहर जाना है । मंदिर में भगवान की पूजा-अर्चना की व्यवस्था तो मैंने कर दी है । पर दूसरे कामों की देखभाल तुम्हें करनी होगी । उम्मीद है, तुम मुझे निराश नहीं करोगे ।''

रामदेव मना कैसे करता ? पुजारी जी के जाने के बाद रामदेव मुंह अंधेरे उठ जाता । देर रात तक काम में लगा रहता । कभी मंदिर की फुलवारी की निराई-गुड़ाई, कभी प्रसाद तैयार कराना । फिर पशुओं का दाना-पानी ।



ऐसे में भूरी पर ध्यान देना कम हो गया । कहां तो वह पहले भूरी के लिए नरम-नरम घास लाता था । अपने हाथों से उसे खिलाता । उसे नहलाता-धुलाता । दाना-पानी करता । उसके बैठने की जगह को झाड़ता-पोंछता, पर पुजारी जी जब से गए, रामदेव को जरा भी समय न मिलता । यहां तक कि भूरी के पास तक जाने की फुरसत उसे न थी ।

एक सुबह रामदेव जल्दी उठ गया । उसने तय किया था कि आज वह दूसरे काम बाद में करेगा, पहले भूरी की सेवा करेगा । वह भूरी के खूंटे की तरफ गया । मगर वहां भूरी नहीं थी । वह धक् से रह गया । आखिर कहां चली गई वह ? रामदेव उसे ढूंढ़ने लगा । जो भी दिखाई देता, उसीसे पूछता-भूरी को तो नहीं देखा । कोई ना में सिर हिलाता । कोई कहता—''क्यों परेशान होते हो उस पराई गाय के लिए ? हो सकता है, जिसकी गाय थी, वही ले गया हो । मंदिर की गौशाला में इतनी अच्छी-अच्छी गाएं हैं । उन्हीं की सेवा कर लो ।''

रामदेव उन लोगों को कैसे बताता ? बताता भी तो क्या वे समझते ? भूरी क्या सिर्फ एक गाय थी । रामदेव को तो वह अपनी मां जैसी लगती थी । भूरी न मिली होती, तो पता नहीं अब तक रामदेव का क्या होता ? वह कहां होता ?

रामदेव परेशान-सा बाहर निकल आया । वह सड़क पर चल दिया । इधर-उधर फैले खेतों में भी देखता जाता । शायद भूरी वहीं कहीं दिख जाए ।

बहुत दूर चलने पर रामदेव ने एक पेड़ के नीचे भूरी को खड़े देखा । उसे विश्वास नहीं हुआ । वह तो सोच चुका था कि वह उसे अब कभी नहीं मिलेगी ।

रामदेव भूरी के पास जाकर उसके गले से लिपट गया — ''भूरी तू इतनी नाराज हो गई । चल, अब अपने गांव चलते हैं । मैं और तू साथ रहेंगे । तू मेरी मां, मैं तेरा बेटा ।'' रामदेव ने सिर ऊपर उठाया तो देखा कि भूरी की आंखों से भी आंसुओं की धारा बह रही थी । रामदेव उसे लेकर चल दिया । अब उसके मन में निराशा नहीं, एक नई उमंग थी जीने की । ●

# दिन ठिठोली का

रंगों का, रंगोली का
मौज-मजे की बोली का,
मेरी वानर टोली का
शुरू तमाशा होली का !

रंग भरे गुब्बारे से
लथपथ कीचड़-गारे से,
गली-गली घर-द्वारे से
निकला दल हमजोली का !
शुरू तमाशा होली का ।

शैतानी हंगामे हैं
छूटी सभी लगामें हैं,
छेड़-छाड़ के ड्रामे हैं
चक्कर आंख मिचौली का !
शुरू तमाशा होली का ।

आ पीटर, बनवारी आ
हरमिंदर, अनसारी आ,
करके सब तैयारी आ
दिन है आज ठिठोली का !
शुरू तमाशा होली का ।

—योगेन्द्रकुमार लल्ला



# होली की टोली

होली है !
धूम मचाती
हंसती गाती,
घर-घर निकली
टोली है ।

जो आते हैं
रंग जाते हैं,
झट पिचकारी
खोली है ।

मलते गुलाल
कर लाल गाल,
माथे लगती
रोली है ।

वैर भगाती
गले लगाती,
मीठी-मीठी
बोली है ।

—कृष्णकांत तैलंग

# मोटे चाचा

अंकल हमारे बहुत हैं मोटे,
ठंड में सिकुड़कर हो जाते छोटे।
धूप निकल आई पर,
वह रजाई में लोटे।
बचपन में उन्होंने
पहाड़े बहुत घोटे।
पालते हैं अब भी,
चिड़ियां और तोते ।
जेब खर्च देते नहीं,
तब लगते हैं खोटे ।

— डा. बरसानेलाल चतुर्वेदी



# तितली बोली

कहा फूल ने—"क्यों तितली
सुबह-सुबह ही कहां चली ?"
तितली बोली— "प्यारे फूल,
मुझे पहुंचना है स्कूल ।"

# गोल-भूगोल

हाथी जी कुर्सी पर बैठे
पढ़ा रहे भूगोल,
अपनी लम्बी सूंड़ बनाई
जैसे धरती गोल।

—प्रेमकिशोर 'पटाखा'





# दिन आइसक्रीम-से

कितना अच्छा होता
गर होता घर ऐसा,
बिस्कुट के दरवाजे होते
औ' आंगन बरफी-सा ।

चाकलेट के ताले होते
लालीपाप की चाबी,
दिन आइसक्रीम-से होते
और रातें चुइंगम-सी ।

—विंदेश्वरी गुप्ता

# काली शिला

—देवेन्द्र सत्यार्थी

रोज सुबह घूमने जाते थे बाबा चतुर्मुख। गांव से बाहर आकर नदी किनारे, विशाल काली चट्टान पर टिक जाते। धुंधली नजरों से दूर-दूर तक देखते। फिर उनकी निगाह पलटकर चट्टान पर पड़ती। कांपते हाथों से वह चट्टान को छूते, तो लगता चट्टान के भीतर से आवाज आ रही है— मुझे अधबना क्यों छोड़ दिया मूर्तिकार ?

'जाने कब आएगा नीलकंठ ? कब मेरा सपना पूरा होगा ? पूरी चट्टान एक विशाल त्रिमूर्ति का रूप लेगी— ब्रह्मा, विष्णु और शिव। दूर-दूर से लोग त्रिमूर्ति का दर्शन करने आएंगे।'— सोचते-सोचते वह उदास हो जाते।

कुछ देर बाद फिर आंख गड़ाकर उस विशाल काली शिला को देखने लगते। सिर्फ विष्णु की मूर्ति पूरी बन पाई थी और इसे बनाने में पूरे दस बरस लगा दिए उन्होंने। ब्रह्मा की मूर्ति अधबनी थी और शिव की मूर्ति तो अभी वह बनाना शुरू ही नहीं कर सके। हाथों में ताकत ही नहीं रही। इसलिए रात-दिन बस बेटे की प्रतीक्षा करते थे। नीलकंठ उनका बेटा था। पांच बरस पहले कला की शिक्षा प्राप्त करने विलायत गया था। फिर लौटा ही नहीं।

इधर बाबा, बहुत कमजोर हो गए थे। पर हाथों में हुनर अभी वैसा ही था। सिर्फ एक नजर डालकर बता देते, मूर्ति में कहां, क्या खोट है। दूर-दूर से कलाकार आकर बाबा की बनाई मूर्तियां देखते। उनकी बातें सुनते। यों तो बाबा के परिवार में पीढ़ियों से मूर्ति बनाने का काम होता आया था, पर नाम चमका बाबा चतुर्मुख का ही। उनकी बनाई मूर्तियां अनेक धनी लोगों के घरों में सजी थीं। चौराहों, मंदिरों, कला संग्रहालयों में भी। पर कुछ समय से बाबा उदास रहने लगे थे।

कभी-कभी बैठे-बैठे बाबा जैसे ध्यान में लीन हो जाते। तब उन्हें लगता, जैसे मूर्ति पूरी हो गई है। वहीं आसपास खूब बड़ा-सा मेला लगा है। हजारों लोग मूर्ति के दर्शन करने आए हैं। पुष्प-पत्र चढ़ा रहे हैं....

एक दिन बाबा इसी तरह ध्यान में लीन थे। तभी जागरी ने खंखार कर उन्हें चेताया। बाबा के आंखें खोलते ही बोला— "बाबा, बाबा ! चिंता छोड़ो। धौली गांव का भाग्य बदलने वाला है।"

"क्या कह रहे हो ? साफ-साफ कहो न !"— बाबा के माथे की नसें और उलझ गईं।

"हां बाबा, गांव का भाग्य बदलने जा रहा है। नीलकंठ आ रहा है।"— जागरी बोला।

सुनते ही बाबा की आंखों में चमक आ गई। उसके बाद दो-तीन दिन बाबा खुशी-खुशी गांव में घूमते रहे। सबको बेटे के आने की खबर दी।

तीन दिन ऐसे कटे, जैसे तीन पल। चौथे दिन सुबह-सुबह नीलकंठ आया। आते ही पैर छुए। देर तक बाबा चुपचाप उसकी पीठ पर हाथ फेरते रहे। फिर बोले— "तू बदल तो नहीं गया रे !"

—"नहीं बाबा, बाहर से कुछ नया सीख कर आया हूं, तो इसका मतलब यह तो नहीं कि...."

बाबा के चेहरे पर संतोष छा गया।

कुछ ही देर में गांव के लोग भी आ पहुंचे। स्त्री, पुरुष, बच्चे मेला-सा जुड़ गया। हर कोई नीलकंठ से विलायत के बारे में जानना चाहता था।

कुछ दिन इसी तरह कटे। फिर एक दिन बाबा नीलकंठ को नदी किनारे उसी शिला के पास ले गए। नीलकंठ हैरानी से देखता रहा। बाबा ने किस तरह शिला को नया रूप दे डाला था। अचानक बाबा ने पूछा— "शिव की मूर्ति तुम पूरी करोगे नीलकंठ ? करोगे न यह काम ?"

सुनकर नीलकंठ एक क्षण चुप रहा। फिर बोला— "सोचूंगा बाबा।"

"क्यों ?"—बाबा गम्भीर हो गए।

नीलकंठ ने झिझकते हुए बताया— "कलकत्ता में आदित्यसेन जी मिले थे। वह आर्ट स्कूल खोल रहे हैं। मुझे प्रिंसिपल बनाना चाहते हैं...."

बाबा ने भर्राए कंठ से कहा— "इन लोगों का

कोई नहीं है। ये गरीब, अनपढ़ लोग हैं, पर कितना प्यार देते हैं। इसे क्या पैसे से तौलोगे ? मुझे तो लगता है, अगर एक जीवन और मिला होता, तो भी इसी तरह मूर्तियां बनाते हुए गुजार देता।''

नीलकंठ चुप रहा, फिर बाबा भी कुछ और नहीं बोले। लेकिन गांव के लोगों को फिर भी खबर हो गई। कुछ बुजुर्गों ने नीलकंठ को समझाना चाहा, कुछ ने बाबा को। लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला। नीलकंठ कुछ खोया-खोया-सा रहने लगा। बाबा भी उदास-से मूर्तिशाला में बैठे, मूर्तियां बनाते रहते। किसी से हंसते-बोलते न थे।

बारिश का दिन था। बाबा सुबह-सुबह घर से निकले। हाथ में छाता तक न था। सिर से पैर तक भीग गए। बारिश रुकने का नाम न ले रही थी। उधर बाबा के पैर भी रुक नहीं रहे थे। उन्हें लग रहा था, जैसे कोई उन्हें बुला रहा है। चलते-चलते एक निर्जन रास्ते पर उनके पैर बढ़ गए। वहां शिव मंदिर था। बाबा वहीं चबूतरे पर बैठ गए। इतने भीग गए थे कि कंपकंपी छूट रही थी। शरीर कमजोर था, अब और अधिक लाचार हो गए। समझ गए, अंत आ गया है। उन्होंने मंदिर का शंख उठाया और बजाना शुरू कर दिया। पता नहीं, कब उनका शरीर लुढ़क गया, प्राण छूट गए। शंख दूर जा गिरा।

शाम के वक्त गांव के चरवाहे ने यह देखा। दौड़कर गांव वालों को खबर दी। नीलकंठ को भी पता चला। वह भागा-भागा मंदिर में आया। पिता के निर्जीव शरीर को देख, फफक-फफक कर रो पड़ा।

पिता की अंत्येष्टि करके लौटा नीलकंठ, तो गांव वालों ने समझाया— ''बाबा की आत्मा को शांति एक ही तरह से मिल सकती है— त्रिमूर्ति पूरी करो।''

अगले दिन से ही नीलकंठ त्रिमूर्ति बनाने में जुट पड़ा। बाबा जाते-जाते ब्रह्मा की मूर्ति भी पूरी कर चुके थे। अब सिर्फ शिव की मूर्ति बनानी थी। नीलकंठ मन ही मन सोचने लगा— 'शिव कुछ ऊपर की ओर मुंह किए शंख बजा रहे हों। चेहरे पर तेज। यही मूर्ति जंचेगी यहां।'

उस दिन के बाद किसी ने नीलकंठ को खाली नहीं देखा। जब देखो, काली शिला पर बैठा मूर्ति गढ़ रहा है। सर्दी हो गरमी, धूप या बारिश, नीलकंठ की साधना चलती रहती।

और सचमुच दो साल के भीतर त्रिमूर्ति पूरी हो गई। दूर-दूर से हजारों लोग उसे देखने आने लगे। इतना बड़ा मेला लगा, जितना बाबा ने भी नहीं सोचा था।

देखने वालों में आदित्यसेन भी थे। मूर्ति देखते ही उन्होंने जिद ठान ली— ''नीलकंठ, अभी तक आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल का पद खाली है। तुमसे योग्य व्यक्ति मुझे कहां मिलेगा ? चलो मेरे साथ।''

नीलकंठ ने अचकचाकर मां की ओर देखा। सारा गांव उन्हें देवयानी कहता था। ''अम्मा, यह कलकत्ता चलने के लिए कह रहे हैं।''— झिझकते हुए नीलकंठ ने कहा।

''ठीक है, जाओ..।''— देवयानी इससे ज्यादा कुछ नहीं कह पाईं। उसी रोज नीलकंठ चला गया था।

उस दिन के बाद देवयानी सारे गांव में घूम-घूमकर बच्चों को प्यार बांटतीं, सभी के सुख-दुःख में काम आतीं। साथ ही वह रोज मूर्तिशाला में जाकर एक-एक मूर्ति को कपड़े से साफ करतीं और आंसू बहातीं कि पीढ़ियों से मूर्ति बनाने की कला चली आती थी। पर धौली गांव में अब मूर्तिकार कोई नहीं रहा।

एक-एक कर दिन, महीने और बरस भी बीत गए। पर देवयानी का यही क्रम चलता रहा। गांव के प्रति उनका प्यार और बढ़ गया। मूर्तिशाला की अधूरी मूर्तियों को देख, बाबा चतुर्भुज की याद आती। आसमान की ओर देख, भीगी आंखों से कहतीं— ''अब शायद ये मूर्तियां अधूरी रहेंगी— हमेशा-हमेशा के लिए।''

नीलकंठ ने कई बार कलकत्ता बुलाया, पर उन्हें गांव छोड़कर जाना गवारा नहीं हुआ। सिर्फ एक बार गई थीं— जब नीलकंठ का विवाह हुआ था। उसके बाद अब तो उसका बेटा रूपम भी सात बरस का हो

गया । नीलकंठ की चिट्ठियां आतीं । हर चिट्ठी में यही लिखा होता— 'जब देखो तब, रूपम दादी-दादी की रट लगाया करता है । कहता है, दादा जी की बनाई मूर्तियां भी देखनी हैं ।'

और सचमुच गरमी की छुट्टियों में बेटा, बहू और पोता आए, तो देवयानी का घर गुलजार हो गया । इतनी चहल-पहल, रौनक, शोर-शराबा, जैसे सोया हुआ घर जाग गया हो । आसपास के गांवों के लोग भी मिलने आए ।

एक दिन शाम के समय इसी तरह गपशप चल रही थी । नीलकंठ ने कलकत्ता के बारे में ढेरों बातें बताईं । अपने आर्ट स्कूल के विद्यार्थियों के बारे में बताया । लोग उत्सुकता से सुन रहे थे । अचानक देवयानी को कुछ याद आया । बोलीं— ''रूपम... रूपम कहां गया ?''

''अरे, अभी तो यहीं था ।''— नीलकंठ बोला ।

गांव के लड़कों से पूछा, जिनके साथ रूपम खेला करता था । सबने कहा— ''आज तो हमने रूपम को देखा ही नहीं ।''

जैसे-जैसे रात होने लगी, सबकी चिंता बढ़ी । इधर-उधर ढूंढ़ा गया, कहीं उसका पता ठिकाना नहीं मिला । ''कहीं जंगल की ओर तो नहीं चला गया ? वहां बहुत से जंगली पशु हैं ।''—देवयानी ने सहमकर कहा ।

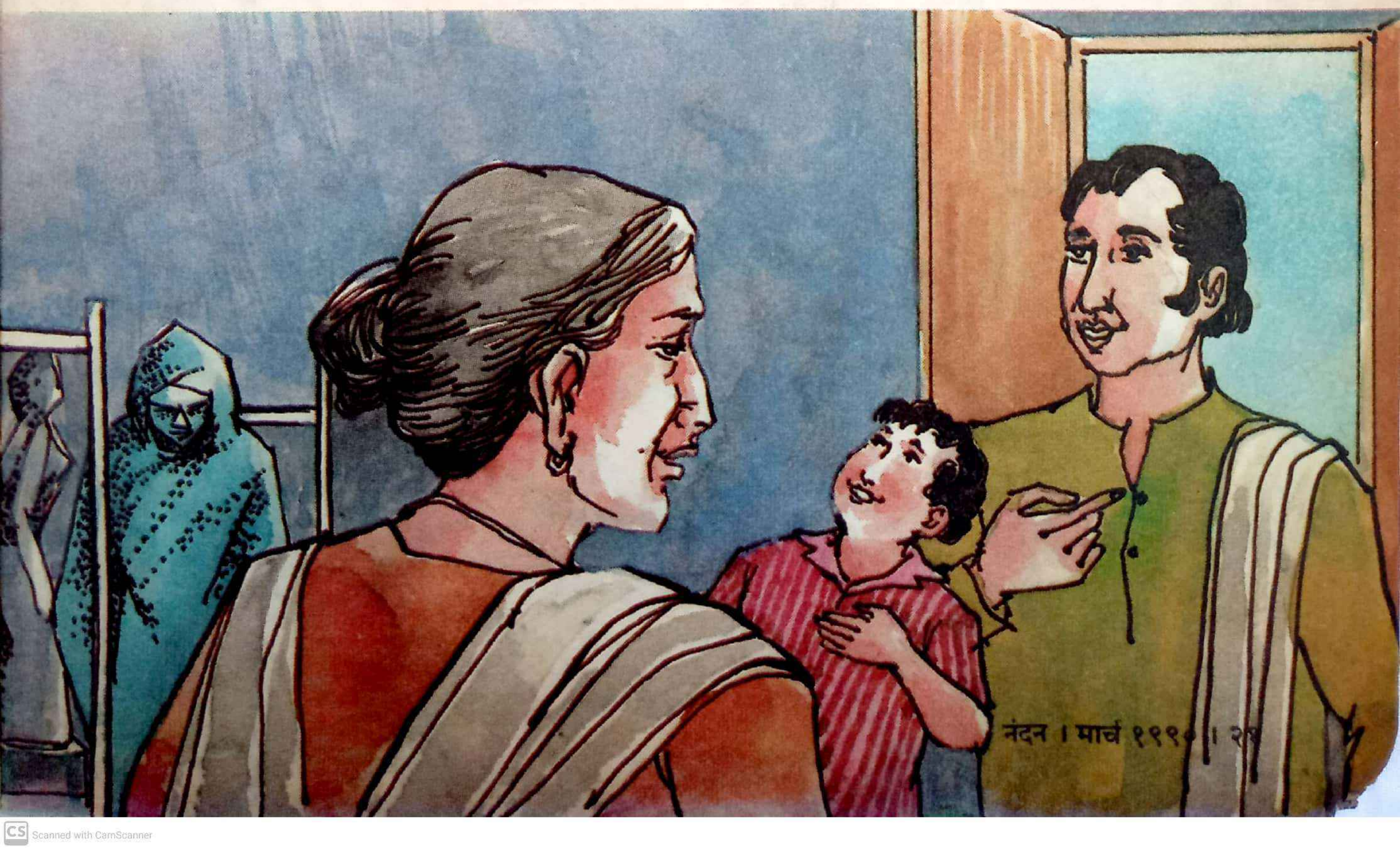
तभी उन्हें लगा, मूर्तिशाला से आवाज आ रही है । वह दौड़ी-दौड़ी मूर्तिशाला में गईं । वहां जो कुछ देखा, उससे चकित रह गईं । देखा, रूपम पालथी मारे, हाथ में छेनी लिए एक अधूरी मूर्ति को तराश रहा है— बिलकुल अपने दादा जी की तरह । खिड़की से झरती चांदनी में मूर्तियां नई-नई लग रही थीं ।

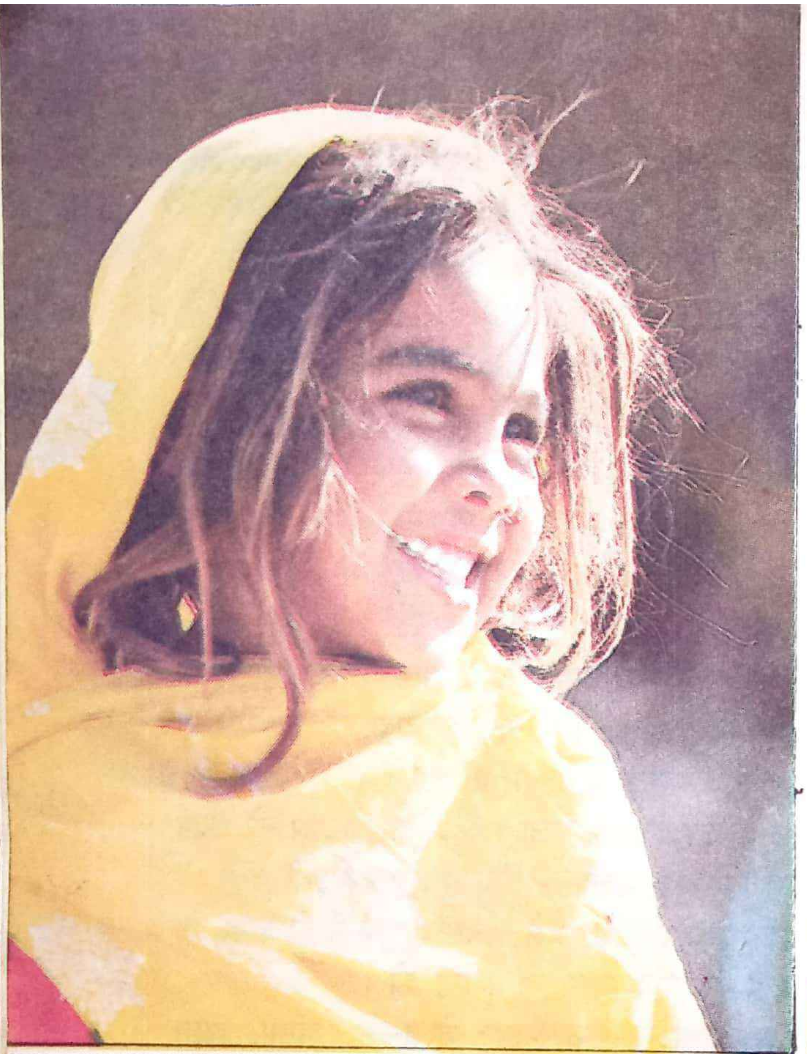
दादी को आया देख, रूपम के होंठों पर भोली मुसकान आ गई । बोला— ''दादा जी क्या ऐसे ही मूर्तियां बनाते थे दादी मां ?''

देवयानी का गला भर आया । रूपम को छाती से लगाकर बोलीं— ''हां, बिलकुल इसी तरह ।'' उन्हें लग रहा था, जैसे बाबा चतुर्भुज ने ही रूपम के रूप में नया जन्म ले लिया हो ।

तभी नीलकंठ आकर बोला— ''अम्मा, रूपम यहीं रहेगा— तुम्हारे पास । धौली गांव की मूर्ति बनाने की परम्परा मिटेगी नहीं ।''

देवयानी दादी की आंखें भर आईं ।●







⬆ द्वितीय : राजेंद्रप्रसाद, मुजफ्फरपुर

## नंदन
# फोटो प्रतियोगिता : परिणाम

⬆ प्रथम : रवींद्रकुमार, जोधपुर

⬇ तृतीय : प्रदीप भट्ट, मथुरा









← **प्रशंसा :** वंदना गुप्ता, कलकत्ता

↓ **प्रशंसा :** सुभाषकुमार जैन, भोपाल



← **प्रशंसा :** सुदेश मल्होत्रा, दिल्ली

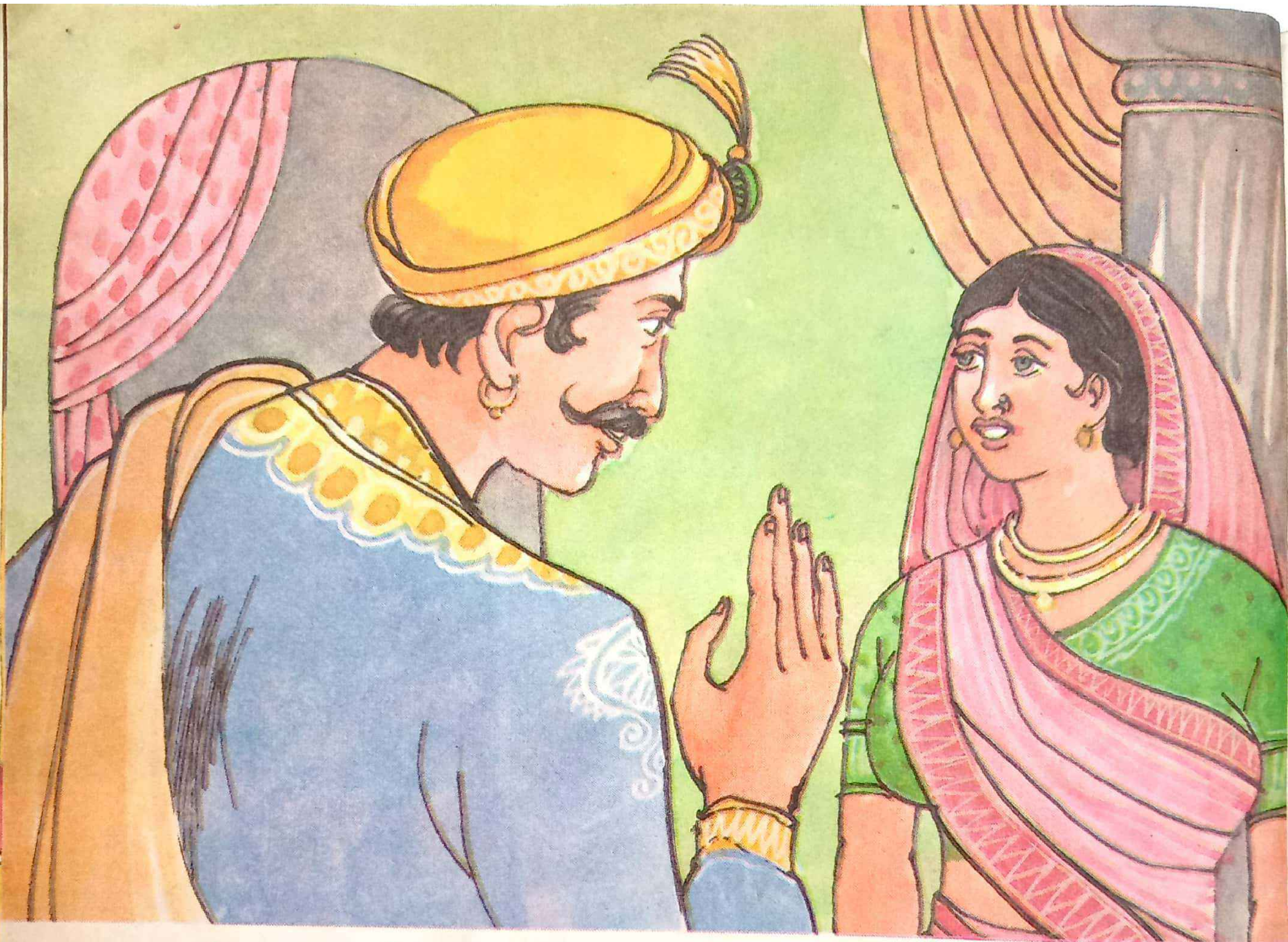


↑ **प्रशंसा :** एल. एस. टाक, जोधपुर

**प्रशंसा :** देवांशु आर्य, पांडिचेरी

←

बधाई बधाई



# जंगल में रानी

—वादीभ सिंह

दक्षिण भारत में राजपुरी नाम का एक राज्य था। वहां का राजा था सत्यंधर। उसकी रानी का नाम था—विजया।

राजा का मन राजकाज में कम, घूमने तथा शिकार खेलने में अधिक लगता था। प्रजा की फरियाद सुनने का उसके पास समय ही नहीं होता था। प्रजा भी राजा से दुखी थी।

राज्य का मंत्री था—काष्ठांगार। सारा राजपाट वही देखता था। दरबारी भी राजा से परेशान थे। मंत्री तथा दरबारियों ने मिलकर राजा को गद्दी से उतारने की योजना बनाई।

कहीं से राजा को इसका पता लग गया। एक दिन रानी राजा के कक्ष से गुजर रही थी। वहां खट-खट की आवाज हो रही थी। वह कमरे में घुस गई। देखा, राजा कोई यंत्र बना रहा है।

रानी के उदास चेहरे को देखकर राजा ने कहा—"देवी, तुम्हारी उदासी का कारण क्या है?"

—"महाराज, रात में मैंने एक सपना देखा। एक स्त्री के हाथ में घड़ा था। घड़ा उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ा।"

राजा ने हंसते हुए उसे दिलासा दी— "भला, सपने भी कहीं सच होते हैं? ये सब बेकार की बातें हैं। फिर, जब तक मैं हूं, तब तक तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं।"

रानी आश्वस्त होकर बोली— "महाराज, यह क्या बना रहे हैं?"

—"मैं एक यंत्र बना रहा हूं, जिस पर बैठकर हम कभी भी यहां से दूर जा सकते हैं। आओ, मैं तुम्हें इस यंत्र को चलाने की तरकीब बता दूं।" उसने रानी

को यंत्र के चलाने के बारे में बता दिया। रानी चलने लगी, तो राजा ने कहा— "देवी, राजकुमार का पूरा ध्यान रखना।" यह कहकर राजा कक्ष से निकल गया।

अचानक महल में भगदड़ मच गई। राजा ने देखा, सैनिक उसकी ओर चले आ रहे हैं। वह फुर्ती से रानी के पास पहुंचा। उसने राजकुमार सहित रानी को यंत्र पर बैठा दिया। रानी ने राजा को भी साथ चलने का आग्रह किया, लेकिन राजा बोला— "कहीं ये सैनिक तुम पर हमला न कर दें, इसलिए जल्दी से तुम इस पर बैठकर दूर निकल जाओ। मैं इन सैनिकों से निपटता हूं।" रानी यंत्र में बैठकर उड़ चली। तब तक राजा सैनिकों से घिर चुका था। उसने तलवार निकाल ली। अकेला ही उन पर झपट पड़ा। एक सैनिक ने राजा को धराशायी कर दिया। मंत्री काष्ठांगार राजपुरी का राजा बन गया। उसने रानी की बहुत खोज कराई। लेकिन उसका कोई पता नहीं चला।

रानी विजया यंत्र पर बैठ बहुत दूर निकल गई। उसने यंत्र को सुनसान में उतारना चाहा। पर वह उसे रोकने का उपाय भूल गई थी। बहुत घबराई। आंखें मूंदकर बैठ गई। अचानक उसका एक हाथ लकड़ी के किसी हत्थे पर पड़ गया। यंत्र धीमा हो गया। धीरे-धीरे वह नीचे उतरने लगा। अब वह जंगल में उतर चुका था। रानी भी राजकुमार को साथ ले, उतर पड़ी। उसके सामने अंधेरा ही अंधेरा था। कहां जाए? क्या करे? कुछ भी उसके दिमाग में नहीं आ रहा था। तभी उसे सामने से आते हुए कुछ आदमी दिखाई दिए। उसने सोचा— 'शायद ये मंत्री के आदमी हों। हमारी खोज में घूम रहे हों।' सोचकर वह एक झाड़ी में छिप गई।

लोग पेड़ के नीचे पहुंच चुके थे। काफिला नगर सेठ गंधोत्कट का था। वह व्यापार करके स्वदेश लौट रहा था। उसने नौकरों से कहा— "मैं इसी पेड़ के नीचे बैठा हूं। तुम भी आराम कर लो।" नौकर पास में बहने वाली नदी के तट पर चले गए। सेठ को झपकी आ गई। उसकी नींद खुली, तो उसने एक नन्हा-सा बच्चा जमीन पर लेटा देखा। वह चौंका— 'यह बच्चा कहां से आ गया? लगता है, भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ली। सेठानी बच्चे को देख, निहाल हो जाएगी।'

सेठ बच्चे को ले, घर पहुंचा। सेठानी बच्चे को देख, प्रसन्न हो गई। उसने बच्चा अपनी गोद में ले लिया। सेठ ने सारी बात उसे बता दी।

सेठानी ने बच्चे के नाम के बारे में पूछा, तो सेठ बोला— "जब मैंने बच्चे को गोद में उठाया था, तब मेरे कानों में जीव-जीव का स्वर सुनाई दिया था। अतः इसका नाम जीवंधर ही रख दें।"

जीवंधर बड़ा हो गया। उसकी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था सेठ ने आचार्य आर्यनंदी को सौंप दी। आचार्य ने जीवंधर को धनुर्विद्या, घुड़सवारी, तलवार बाजी में पारंगत कर दिया। अनेक शास्त्रों का भी उसे विद्वान बना दिया।

एक दिन आर्यनंदी जीवंधर को पढ़ा रहे थे। उसी समय एक आदमी आया। वह आचार्य के चरणों में जा गिरा। बोला— "आचार्य जी, मैं संकट में हूं। मेरी सहायता कीजिए।"

—"क्या हुआ है तुम्हारे साथ?"

—"मेरी सारी गाएं भीलों ने हड़प ली हैं। उन्होंने सैनिकों को भी मार भगाया। किसी से जीवंधर के बारे में सुना, तो आपके चरणों में आ पहुंचा।"



**विश्व की महान कृतियां : प्राकृत**

**वादीभ सिंह—** प्राकृत भाषा के प्रसिद्ध कवि । समय दसवीं सदी के आसपास । तमिल प्रदेश में जन्मे थे । रचनाएं हैं— गद्यचिंतामणि, स्याद्‌वादसिद्धि तथा क्षत्रचूड़ामणि । यहां 'क्षत्रचूड़ार्मणि' की कथा संक्षेप में दे रहे हैं ।—सं.

आचार्य ने उसे हर सम्भव मदद के लिए आश्वासन दिया । फिर जीवंधर से कहा— ''जीवंधर, जाओ इनके साथ । यह नगर के जाने-माने पशु व्यापारी हैं । इनका नाम नंदगोप है । इन्हें गाएं वापस दिला दो ।''

जीवंधर ने धनुष-बाण उठाया । जाते ही भीलों को मार भगाया । नंदगोप को गाएं मिल गईं । वह घर पहुंचा । पत्नी को सारी घटना बता दी । पत्नी बोली— ''अपनी इकलौती बेटी गोविंदा का विवाह जीवंधर से कर दीजिए ।''

नंदगोप ने विवाह का प्रस्ताव आचार्य के सामने रखा । आचार्य बोले— ''जीवंधर अभी विवाह योग्य नहीं है । हां, इसका मित्र है— पद्‌मास्य । उससे अपनी कन्या का विवाह कर दें ।''

पद्‌मास्य का गोविंदा से विवाह हो गया ।

कुछ दिन बाद सेठ गंधोत्कट आचार्य के पास जाकर बोला— ''मेरे बेटे को अब तो घर भेज दीजिए ।''

—''सेठ जी, सच्चाई मुझसे छिपाते हो । यह राजपुरी के राजा सत्यंधर का पुत्र है । मुझे उसके शरीर पर अंकित राज चिह्न से यह पता चला है ।''

—''आचार्य जी, मुझे भी पूरी जानकारी आज ही मिली ।''

—''मैं चाहता हूं, जीवंधर को राजगद्दी पर बिठाया जाए ।''

—''मेरी भी यही इच्छा है ।''

बातें हो ही रही थीं कि जीवंधर वहां पहुंच गया । आचार्य ने उसे सच्चाई बता दी । वह बिफर पड़ा । बोला— ''मैं अपने पिता का बदला अवश्य लूंगा । मैं काष्ठांगार को जिंदा नहीं छोड़ूंगा ।'' आचार्य ने उसे शांत किया । समझाया— ''बेटे, हम भी तुम्हें राजा बनाना चाहते हैं । पर इसके लिए अभी हमें बहुत तैयारी करनी है । मेरी मानो, एक वर्ष तक चुप रहो ।''

किसी तरह एक वर्ष बीत गया ।

एक दिन पद्‌मास्य घूमते हुए आश्रम में पहुंचा । जीवंधर से बोला— ''मित्र, बहुत दिन हो गए, तुम नगर में नहीं गए । आज घूमने चलते हैं ।''

दोनों नगर में पहुंचे । चौराहे पर भीड़ देख, दोनों रुक गए । पद्‌मास्य ने एक आदमी से भीड़ का कारण पूछा । उसने बताया कि नगर सेठ श्रीदत्त व्यापार से लौटा, तो साथ में एक गंधर्व कन्या भी ले आया । उसका कहना है कि इस कन्या का जिससे विवाह होगा, वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा । लेकिन लड़की की एक शर्त है, उसे वीणा वादन में जो हरा देगा, उसी को वह अपना पति स्वीकार करेगी । एक महीने बाद स्वयंवर होगा ।

आचार्य के कानों में भी यह बात पड़ी । उन्होंने जीवंधर से कहा— ''मैं तुम्हें वीणा बजाना सिखाऊंगा । थोड़ी मेहनत करना, पारंगत हो जाओगे ।''

जीवंधर ने कुछ दिन वीणा बजाने का अभ्यास किया । वह अच्छा वीणा वादक बन गया । स्वयंवर में भाग लेने चल पड़ा । आचार्य ने समझाया— ''तुम वहां सावधानी से रहना । स्वयंवर के पश्चात वहां ज्यादा न रुकना । हो सकता है, काष्ठांगार तुम्हें मरवाने का षड्‌यंत्र रचे ।''

जीवंधर स्वयंवर में पहुंचा । अनेक राजकुमार उपस्थित थे । पर गंधर्वदत्ता ने सबको परास्त कर दिया था । वे मुंह लटकाए बैठे थे । जीवंधर की बारी आई, तो वह गंधर्वदत्ता के सम्मुख पहुंचा । उसके हाथों की अंगुलियां वीणा के तारों को झंकृत करने लगीं । गंधर्वदत्ता भी वीणावादन में कम नहीं थी । पर वह ज्यादा देर तक जीवंधर के सामने न टिक सकी । हार मान ली । माला जीवंधर को पहना दी । सेठ श्रीदत्त ने दोनों का विवाह कर दिया ।

काष्ठांगार को जब यह समाचार मिला, तो वह घबरा उठा । उसने जीवंधर को मारने के कई षड्‌यंत्र

रचे, पर उसे सफलता नहीं मिली। फिर भी उसके गुप्तचर जीवंधर के पीछे लगे रहते थे।

एक दिन गंधर्वदत्ता ने तालाब में नहाने की इच्छा व्यक्त की। जीवंधर ने कहा— "तीन दिन बाद चलेंगे नहाने।" दोनों की बात गुप्तचरों ने सुन ली। राजा को इसकी सूचना दी। राजा ने गुप्तचरों को कुछ समझाकर भेज दिया।

तीन दिन बाद, जीवंधर पत्नी सहित तालाब में नहाने गया। नहाकर दोनों लौट रहे थे कि उन्हें जंगल में शोर-शराबा सुनाई दिया। जीवंधर ने देखा, एक लड़की बेतहाशा भागी जा रही है। उसके पीछे एक हाथी दौड़ रहा है।

जीवंधर ने देर करना उचित न समझा। तुरंत उसने लड़की को एक ओर कर दिया। धनुष-बाण संभाला। तीरों से हाथी को भगा दिया।

गुप्तचर हाथ मलते हुए राजा के पास पहुंचे। राजा को यह पता लगा, तो वह गुस्से से पागल हो उठा। तुरंत उसने आदेश दिया— "जीवंधर को मेरे सामने हाजिर करो। उसे मैं कड़ी सजा दूंगा। उसने मेरे हाथी पर बाण चलाए। उसकी इतनी हिम्मत कैसे हो गई?"

वह सोच रहा था कि उसकी चाल सफल हो जाएगी। सैनिक जीवंधर के घर की ओर बढ़े। पर वह वहां से पहले ही गायब हो गया था। सैनिकों ने उसके लापता होने की सूचना भी राजा को दी। काष्ठागार बहुत पछताया।

चलते-चलते जीवंधर चंद्रोदय पर्वत पर पहुंचा। उसने एक अजीब दृश्य देखा— जंगल में आग की भयानक लपटें उठ रही हैं। पशु-पक्षी इधर-उधर भाग रहे हैं। तभी एक नारी वहां आई। आंखें मूंदकर वह बैठ गई। उसके ओठ फड़फड़ा रहे थे। कुछ पल बाद जोरों से वर्षा होने लगी। अग्नि शांत हो गई। जीवंधर उस नारी के पास पहुंचा। बोला— "माता, आप मुझे देवी लगती हैं। मैंने आपका चमत्कार अपनी आंखों से देखा है।"

उस स्त्री ने उसे गौर से देखा। वह बहुत प्रसन्न थीं।

—"न बेटे, मैं तो कुछ भी नहीं। गुरु जी की कृपा है। चाहो, तो तुम उनके दर्शन कर सकते हो।"

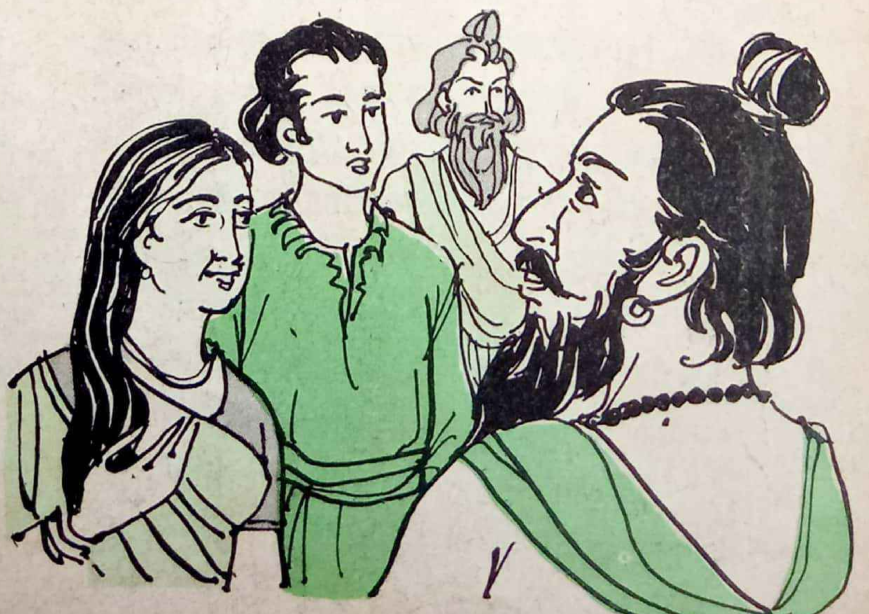
जीवंधर उन के साथ आश्रम में पहुंचा। गुरु जी कुछ लोगों से बातें कर रहे थे। जीवंधर दूर खड़ा हो गया। गुरु जी की नजर उस पर पड़ी, तो बोले— "बेटे, तुम दूर क्यों खड़े हो गए? तुम तो जीवंधर हो! राजा सत्यंधर के बेटे!"

जीवंधर ने उन्हें प्रणाम किया। गुरु जी ने कहा— "तुम अपनी मां को नहीं पहचानते। तुम्हारे सामने ही खड़ी हैं।" कहकर उन्होंने उसी स्त्री की ओर इशारा किया। जीवंधर दौड़कर मां से लिपट गया।

गुरु जी ने कहा— "बेटे, इन देवी ने बहुत कष्ट उठाए हैं। तुम्हें जंगल में सेठ के हाथों में सुरक्षित जानकर वह इधर-उधर भटकने लगीं। एक दिन यह मुझे जंगल में मिल गईं। तब से यहीं रहती हैं।"

उसी समय आर्यनंदी कुछ लोगों के साथ जीवंधर को खोजते हुए वहां आ गए। उन्होंने रानी विजया को पहचान लिया। रानी ने उन्हें प्रणाम किया। मां-बेटे का मिलन देखकर सब खुश थे।

सबने बैठकर योजना बनाई। गंधोत्कट तथा नंदगोप ने खूब सहायता की। जीवंधर ने एक सेना गठित की। मौका पाकर काष्ठांगार पर आक्रमण कर दिया। वह युद्ध में मारा गया। जीवंधर राजपुरी का राजा बन गया। वह प्रजा का बहुत ध्यान रखता था।●



# लौट आया पिता

—रमेश अग्रवाल



दयाराम नाम का एक व्यापारी था। उसके चार बेटे थे। दयाराम ने रात-दिन मेहनत करके चारों बेटों को खूब पढ़ाया-लिखाया। वह हमेशा अपनी पत्नी से कहता—"देखना! कितने लायक निकलेंगे मेरे बेटे। जब हम बूढ़े हो जाएंगे, तो ये चारों हमारी खूब सेवा करेंगे।"

दिन बीतते रहे। दयाराम के बाल पकने लगे। शरीर पर बुढ़ापे के लक्षण दिखाई देने लगे। अब वह पहले जैसी मेहनत भी नहीं कर पाता था। किंतु चारों बेटों में से किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया। आखिर एक दिन दयाराम को उनसे कहना पड़ा—"अब तुम युवा हो गए हो। व्यापार में हाथ बंटाकर तुम्हें मेरा भार कम करना चाहिए।"

एक बार, दो बार, दस बार, जितनी बार दयाराम ने उन्हें अपने बुढ़ापे का अहसास कराया, हर बार चारों बेटों ने 'हां-हूं' के अलावा कुछ नहीं कहा। हारकर दयाराम चुप हो गया। वह समझ गया, जब तक वह जिंदा है, बेटे उसका हाथ नहीं बटाएंगे।

एक दिन दयाराम अपनी दूकान पर उदास बैठा था। तभी एक साधु आया। दयाराम को उदास देख, साधु ने कारण पूछा। दयाराम ने सारी बात बताई, तो साधु हंस पड़ा। बोला—"जैसा मैं कहता हूं, वैसा करो। तुम्हारे चारों बेटे काम करने लगेंगे।" इसके बाद साधु ने दयाराम के कान में कुछ कहा।

अगले दिन गंगा स्नान का पर्व था। दयाराम भी गंगा नहाने गया। घर पर कह गया था कि शाम तक लौट आऊंगा। मगर कई दिन बीत गए, वह वापस नहीं आया। शंका-संदेह में डूबे चारों बेटे उसे तलाशने गंगा घाट पर गए। पूछ-ताछ की, तो वहां बने मंदिर के पुजारी ने उनके सामने एक जोड़ी जूते और एक जोड़ी कपड़े रखकर कहा—"ये मुझे घाट पर मिले थे। लगता है, इनका मालिक नदी में डूब गया।"

चारों बेटों ने जूते-कपड़े पहचान लिए। वे उनके पिता के ही थे। उन्हें ले, रोते-पीटते घर लौटे। कुहराम मच गया। जैसे-तैसे चारों बेटों ने मां को धीरज बंधाया। पिता का श्राद्ध किया। फिर आपस में बोले—"अब पिता जी तो रहे नहीं। घर का खर्च चलाने के लिए हमें ही काम करना पड़ेगा।"

चारों व्यापार में जुट गए। शुरू-शुरू में काफी अड़चनें आईं। वे सोचते—'पिता जी का कहा मान, उनके सामने ही व्यापार में हाथ बंटाने लगते, तो आज परेशानी तो न होती।' फिर धीरे-धीरे सब ठीक होता चला गया। कमाई होने लगी, तो चारों बेटों को काम में आनंद आने लगा।

इस बात को एक वर्ष बीत गया। एक दिन अचानक गांव में हल्ला मचा—'दयाराम आ गया। दयाराम आ गया।' चारों बेटों ने सुना, उनकी मां ने सुना, तो दौड़े-दौड़े बाहर आए। देखा, दरवाजे पर सचमुच दयाराम खड़ा है। एक वर्ष में वह और बूढ़ा हो गया था।

सहसा किसी को विश्वास न आया, किंतु जब दयाराम ने बताया—"मैं मरा नहीं था। बहता-बहता दूर किसी साधु के आश्रम तक जा पहुंचा था। वहां मुझे साधु ने बचा लिया था।" सभी ने संतोष की सांस ली।

बेटों ने उस दिन दयाराम की बड़ी सेवा की। अगले दिन सवेरे नहा-धोकर दयाराम ने दूकान की चाबियां मांगीं, तो चारों बेटे एक साथ बोले—"अब व्यापार हम देखेंगे। आप आराम कीजिए।" दयाराम चकित बना उन्हें देखता रहा। ●

# मेहनत का जादू

—राजशेखर

किसी गांव में तीन भाई रहते थे। हरि, राम तथा जगत। बचपन में ही उनके माता-पिता चल बसे थे। पिता थोड़ी बहुत सम्पति छोड़ गए थे। उसी से कुछ दिन तक उनकी गुजर-बसर हुई, मगर कब तक ? जब सारा धन समाप्त हो गया, तो उन्हें खाने-कमाने की चिंता हुई।

एक दिन छोटे भाई जगत ने कहा —"ऐसे कितने दिन तक गुजर-बसर होगी ? कुछ काम-धंधा करना चाहिए।" दोनों भाइयों ने उसकी बात हंसी में उड़ा दी। मगर पेट को तो रोटी चाहिए। पैसा नहीं रहा, तो उन्होंने घर की सारी सम्पति बेच दी। जब कुछ न बचा, तो वे तीनों काम की तलाश में चल पड़े। उनमें हरि और राम आलसी तथा लालची थे। वे चाहते थे —उन्हें कहीं से बिना कमाए धन मिल जाए। मगर छोटा भाई जगत कमाकर खाने में विश्वास रखता था।

चलते-चलते तीनों एक जंगल में पहुंचे। सफर की थकान मिटाने के लिए एक पेड़ के नीचे सो गए।

नींद खुली, तो दिन निकल आया था। बड़ा भाई हरि प्रसन्न नजर आ रहा था। बोला —"मुझे रात में एक अजीब सपना आया। सपने में मैंने देखा, इसी पेड़ के नीचे खजाना दबा है।" यह कहकर वह पेड़ की जड़ के पास जमीन खोदने लगा। सचमुच उसे अशर्फियों से भरा एक लोटा मिला।

अब क्या था ! उसकी खुशी का पारावार न था। वह बोला —"मुझे, धन मिल गया। काम की खोज क्यों करूं ? मैं चला घर। तुम कहीं जाकर काम-धंधा खोजो।" यह कहते हुए वह घर लौट चला। अपने भाइयों के ऊपर भी उसे दया नहीं आई।

राम और जगत ने आगे की राह ली। शाम को वे एक बाग में पहुंचे। वहां एक झाड़ी में राम ने एक पोटली पड़ी देखी। उसने झपटकर पोटली उठा ली। खोली, तो उसमें बहुमूल्य हीरे थे। लगता था, किसी ने लूट का माल वहां छिपा रखा है। बस, गहने देखते ही उसका दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह भी गहने लेकर तुरंत घर लौट गया। रह गया अकेला जगत।

'बिना कमाया धन, कभी सुख नहीं देता। मैं मेहनत से ही धन कमाऊंगा।'—यह सोचता हुआ वह काम की खोज में आगे बढ़ा जा रहा था। चलता-चलता एक बस्ती के निकट पहुंचा। जोरों की भूख लगी थी। तभी उसने एक आदमी को घोड़े पर भागते देखा। कुछ लोग उसका पीछा कर रहे थे। भागते-भागते उसके घोड़े से एक थैली नीचे गिरी। जगत ने थैली उठा ली। उसने घोड़े वाले को आवाज लगाई। मगर वह रुका नहीं। पीछा करने वाले वहां आए। उन्होंने थैली जगत के हाथों से छीन ली। खोली, तो उसमें खाना था। उन्होंने थैली जगत को लौटाते हुए कहा —"इसे तुम्हीं रखो। भूखे लगते हो। इस खाने को खाकर अपनी भूख मिटाओ।"

थैली लौटाकर वे चले गए। जगत को भूख लगी थी। उसने थैली खोलकर खाना शुरू कर दिया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह जितना खाना खाता, थैली फिर उतने ही खाने से भर जाती। उसने समझ लिया —यह थैली चमत्कारी है। अब वह निश्चिंत हो गया। थैली पाकर उसे भूख की चिंता नहीं रही। थैली लेकर वह आगे चल पड़ा। आगे एक घना जंगल था।

वह बिना रुके जंगल पार कर रहा था। यहां से कुछ दूर एक शहर था। उसने निश्चय कर लिया, वह शहर में पहुंचकर काम की तलाश करेगा। कुछ आगे



चलने पर, उसके कानों में किसी के चिल्लाने की आवाज आई। कोई सहायता के लिए पुकार रहा था। उसने इधर-उधर देखा। थोड़ी दूरी पर एक पेड़ से बंधी हुई एक लड़की दिखाई दी। वह उसके पास पहुंचा। उसे बंधन से मुक्त कर दिया। जगत के हाथ में थैली देखकर लड़की चौंकी। बोली —"तुम्हें यह थैली कहां से मिली? इसे डाकू मुझसे छीन ले गए थे। उन्होंने ही मेरी यह हालत की है।"

थैली मिलने की घटना उसे बताते हुए जगत ने कहा —"तुम थैली वापस ले लो।" मगर लड़की ने जगत को अपने घर चलने का आग्रह करते हुए कहा —"मुझे अकेले डर लग रहा है। तुम मुझे घर छोड़ आओ।" लड़की का नाम रजनी था।

जगत लड़की के घर पहुंचा। पिता ने पूछा —"बेटी, तुम कहां चली गई थीं? मैंने तुम्हारी बहुत खोजबीन की। तुम्हारे साथ यह कौन है?"

रजनी ने सारी घटना संक्षेप में बता दी। उसके पिता ने जगत की खूब प्रशंसा की। उसे अपने घर काम भी दे दिया। एक महीने तक काम करने के बाद उसने अपने घर जाने को कहा। रजनी के पिता ने उसे रुपए-पैसे देकर विदा कर दिया।

जगत गांव में पहुंचा। उसने अपने दोनों भाइयों की बिगड़ी हालत देखकर कहा —"भाई हरि, तुम्हें तो खजाना मिला था। क्या हुआ उसका?"

—"होना क्या था? सारा धन पानी की तरह खर्च हो गया। मेहनत का होता, तो मेरे पास रुकता।" राम से पूछा, तो उसने भी ऐसा ही उत्तर दिया। दोनों बोले —"तुमने सही सलाह दी थी, पर हमने उसे हंसी में उड़ा दिया। मेहनत से कमाया गया धन ही अपना होता है।"

—"जो हो गया, उसे रहने दो। मैंने मेहनत से कुछ धन कमाया है। उसी धन से हम तीनों नया कारोबार शुरू करेंगे।"

तीनों भाई ने नया काम शुरू कर दिया। उनकी मेहनत रंग लाई। धीरे-धीरे उनके दिन और सुख से बीतने लगे। •

# सच मत हार

—कीर्तिकुमार सिंह

भद्रांचल पर राजा विपुलवीर्य का शासन था। उनका पुत्र था कृतांत। वीरता में उसका भी कोई सानी नहीं था। खासकर तलवार-युद्ध में।

एक दिन विपुलवीर्य के पास दूर देश से एक निमंत्रण पत्र आया। निमंत्रण पत्र ब्रह्मवर्त के राजा रिपुदमन ने भेजा था। उन्होंने अपनी कन्या कनकलता का स्वयंवर रचाया था। शर्त थी, जो व्यक्ति तलवार-युद्ध में सबको परास्त कर देगा, उसी से कनकलता का विवाह होगा।

विपुलवीर्य ने कृतांत को स्वयंवर में भाग लेने भेज दिया। दरअसल राजा रिपुदमन ने कृतांत की वीरता की बहुत चर्चा सुन रखी थी। उनकी इच्छा थी कि कृतांत ही उनका जामाता बने। इसीलिए उन्होंने ऐसी शर्त रखी थी। वह जानते थे कि तलवार-युद्ध में कृतांत को कोई परास्त नहीं कर पाएगा।

राजा विपुलवीर्य और कृतांत के गुरु गुणाचार्य की प्रसन्नता की सीमा नहीं थी। दोनों को अच्छी तरह पता था, स्वयंवर कौन जीतेगा। एक दिन गुणाचार्य ने विपुलवीर्य से कहा— "राजन! मैं समझता हूं, आपको विवाह की तैयारियां शुरू कर देनी चाहिएं। मेरे शिष्य के पराक्रम से तो आप भली भांति परिचित हैं।"

विपुलवीर्य की भी यही इच्छा थी। फिर क्या था! पूरा राज्य सजाया जाने लगा। प्रजा भी राजवधू के स्वागत के लिए जोर-शोर से तैयारियों में जुट गई।

कृतांत ब्रह्मवर्त पहुंचा, तो वहां कुछ दूसरी ही बात हो गई। कनकलता ने अपनी एक सखी से उसके पास गुप्त संदेश भिजवाया। राज-उद्यान में एक गुप्त जगह पर मिलने को कहा। कृतांत की समझ में कुछ न आया। वह राजकुमारी से मिलने जा पहुंचा।

कनकलता वहां पहले से ही प्रतीक्षा कर रही थी। हाथ जोड़कर कृतांत से बोली— "महाराज कुमार! मैं सुमंतपुर के राजकुमार बलादित्य को पहले से ही अपना पति मान चुकी हूं। लेकिन आप के रहते

मुझे नहीं लगता कि वह जीत पाएं। आप मेरी मदद करें। मैं जीवन भर आपका उपकार मानूंगी।''

कृतांत भौंचक्का रह गया। वह अपने पिता को विश्वास दिला कर आया था कि उनके लिए बहू लेकर आएगा। वह समझ न पाया कि क्या जवाब दे। फिर कुछ सोचकर बोला— ''ठीक है! आपकी इच्छा पूरी होगी। मैं वचन देता हूं।'' कनकलता बहुत प्रसन्न हुई। उसने कृतांत से वचन ले लिया कि वह इस बात का उल्लेख कभी किसी से नहीं करेगा।

कृतांत उसी महल में लौट आया, जहां उसे ठहराया गया था। वह इस बात पर विचार करने लगा कि किस प्रकार बलादित्य को जिताया जाए। उसने पूरी योजना बना ली।

स्वयंवर शुरू होने के एक दिन पहले वह बलादित्य से मिला और बोला— ''राजकुमार! मैंने सुना है कि तलवार-युद्ध में आप बड़े निपुण हैं। मुझे भी अपनी तलवार पर बड़ा गर्व है। मैं चाहता हूं, इस स्वयंवर का अंतिम युद्ध मेरे और आपके बीच लड़ा जाए। शेष सारे राजकुमारों से मैं अकेले ही लड़ूंगा। मुझे अपने पर भरोसा है। कल शाम तक मैं सभी को परास्त कर दूंगा। शाम को मेरा और आपका युद्ध होगा। बोलिए! आपको मेरा प्रस्ताव मंजूर है?'' बलादित्य ने कृतांत का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। कृतांत मुसकराता हुआ लौट आया। अब वह इस चिंता से मुक्त हो गया कि बलादित्य कहीं किसी अन्य राजकुमार से न हार जाए।

दूसरे दिन वैसा ही हुआ। अंतिम युद्ध हुआ, कृतांत और बलादित्य के बीच। कृतांत जानबूझकर हार गया। राजकुमारी कनकलता ने बलादित्य के गले में जयमाला डाल दी। कनकलता और बलादित्य का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

कृतांत अपने राज्य में लौटा, तो चारों ओर दुःख की लहर दौड़ गई। राजा, राजगुरू और प्रजा, किसी को यह दुःख नहीं था कि राजकुमार वधू लेकर नहीं लौटा। दुःख केवल यह था कि उनका राजकुमार पराजित हो गया। वह भी तलवार-युद्ध में, जिसमें उसका कोई मुकाबला न था। राजगुरु गुणाचार्य तो राज्य छोड़कर चले गए। यह कहकर कि वह तभी भद्रांचल राज्य में लौटेंगे, जब कृतांत बलादित्य को तलवार-युद्ध में हरा देगा। कृतांत लाचार था। वह किसी को कुछ नहीं बता सकता था। राजकुमारी को वचन जो दे चुका था।

उधर बलादित्य और कनकलता सुख से रहने लगे। कुछ समय बाद, बलादित्य के पिता की मृत्यु हो गई। बलादित्य सुमंतपुर का राजा हो गया।

एक दिन, बातों ही बातों में बलादित्य और कनकलता के बीच स्वयंवर की चर्चा चल पड़ी। कनकलता अपने आपको रोक न सकी। उसने अपने और कृतांत के बीच हूई सारी बात बता दी। बलादित्य को बहुत बुरा लगा। क्रुद्ध होकर बोला—''तो क्या तुम समझती हो कि तुम्हारे कहने से वह मुझसे हार गया था? क्या वह मुझसे तलवार-युद्ध में जीत





सकता है ?''

कनकलता ने मुसकराकर कहा—''निश्चय ही ! आपने देखा नहीं, किस वीरता के साथ उन्होंने सारे राजकुमारों को हरा दिया था । मैं तो जीवन भर उनकी ऋणी रहूंगी । उन्हीं के कारण मुझे आप मिले । उन्होंने आपको सारे राजकुमारों से लड़ने से बचाया । फिर खुद आप से जान बूझकर हार गए ।''

बलादित्य के तन-बदन में जैसे आग लग गई । बोला—''निकल जाओ मेरे राजमहल से ! चली जाओ उसी कृतांत के पास, जिसका इतना बखान कर रही हो । जाओ ! निकल जाओ ! अब कभी मत आना यहां ।''

कनकलता बहुत रोई । हाथ-पैर जोड़े । लेकिन बलादित्य ने एक न सुनी । रोती-बिलखती कनकलता अपने पिता के यहां लौट आई । रिपुदमन को बलादित्य के व्यवहार से बड़ा दुःख पहुंचा । पर कर क्या सकते थे ?

कनकलता ने अपना एक विश्वस्त दूत कृतांत के पास भेजा । दूत ने कृतांत को सारा हाल कह सुनाया—''राजकुमारी जी ने कहा है कि आप उनके भाई समान हैं । जैसे उस बार विपत्ति से उबारा था, वैसे ही इस बार भी उबारिए ।''

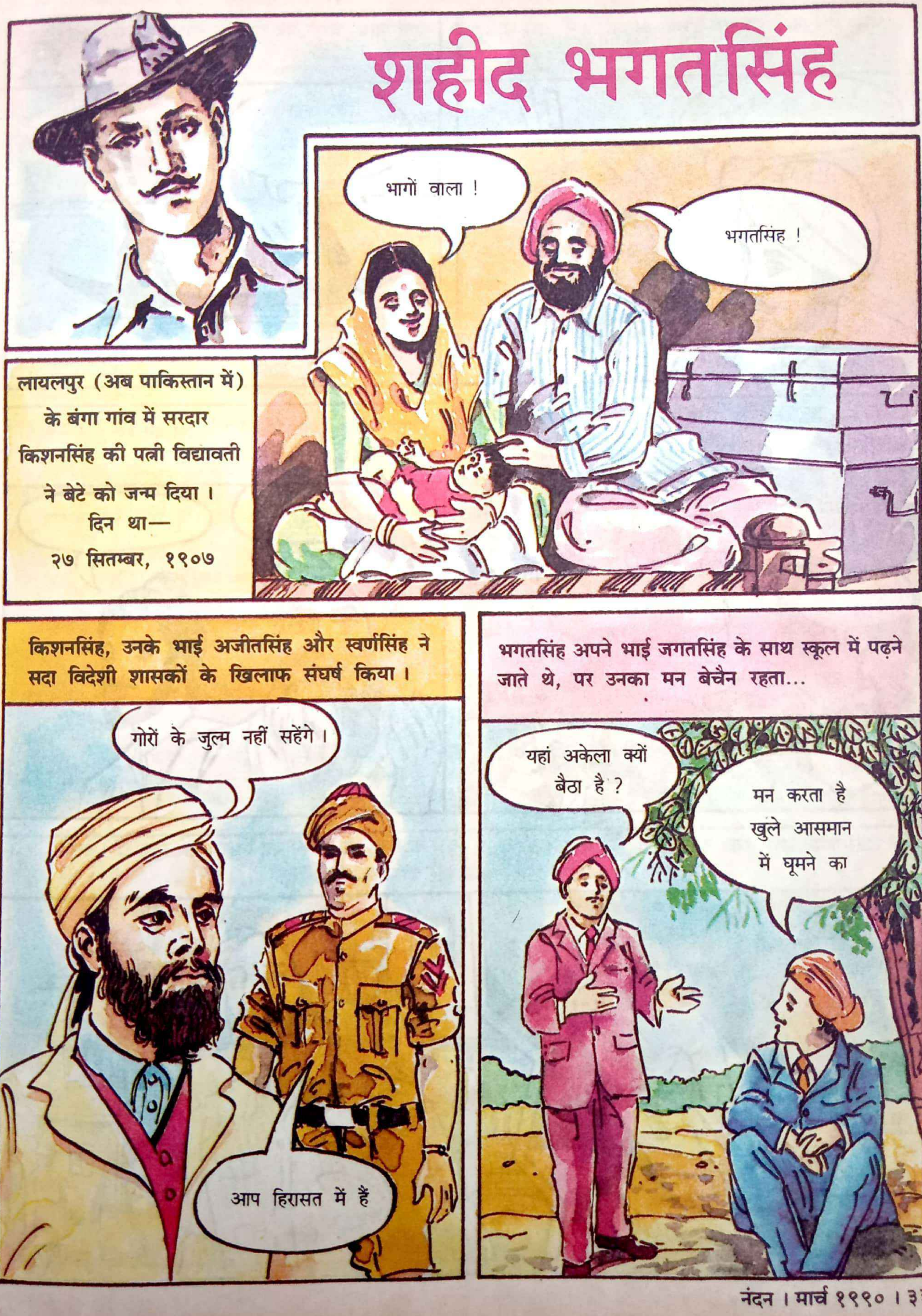
कृतांत को बड़ा क्रोध आया । अपनी सेना लेकर उसने सुमंतपुर पर आक्रमण कर दिया । दोनों ओर की सेनाएं आमने-सामने आ डटीं । कृतांत ने बलादित्य को ललकारा—''बलादित्य ! अपने सैनिकों को युद्ध में कटवाने से क्या लाभ ? तुम्हें अपनी तलवार पर बड़ा घमंड है न । आओ, हम दोनों आपस में तलवार-युद्ध कर लें । जो हारेगा, वह जीतने वाले का बंदी हो जाएगा । साथ ही उसका राज्य भी जीतने वाले का हो जाएगा । बोलो, मंजूर है ?''

बलादित्य भी यही चाहता था । वह कृतांत को दिखाना चाहता था कि स्वयंवर में उसकी विजय संयोग नहीं थी । उसने शर्त मंजूर कर ली ।

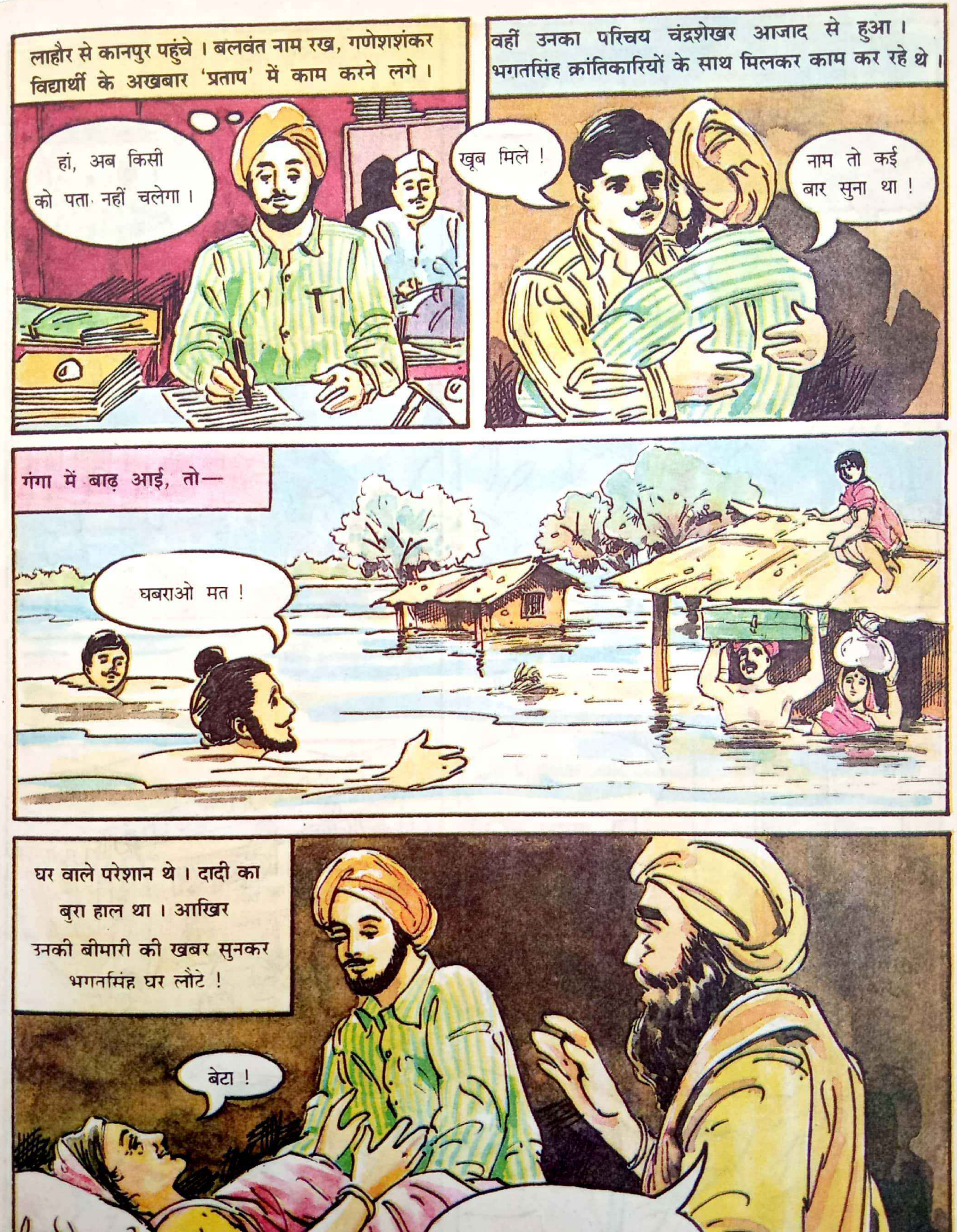
दोनों में युद्ध आरम्भ हो गया । लेकिन यह क्या ! कृतांत ने शीघ्र ही बलादित्य को धूल चटा दी । अपनी तलवार उसके सीने पर लगा दी । बलादित्य बंदी बना लिया गया ।

कृतांत सुमंतपुर गया । कनकलता को वहां का राज्य सौंपकर उसने बलादित्य को उसके पैरों में पटक दिया । कनकलता ने बलादित्य को क्षमा कर दिया । कृतांत ने बलादित्य को चेतावनी दी—''कनकलता मेरी बहन है । फिर कभी तुमने उसके साथ बुरा व्यवहार किया, तो समझ लेना ।''

उधर भद्रांचल राज्य के सारे लोग अपने राजकुमार की विजय से बहुत प्रसन्न हुए । सबको पूरी कहानी मालूम हो गई । लोग जान गए कि राजकुमारी की प्रार्थना पर ही स्वयंवर में कृतांत जान बूझकर हार गया था । लौटने पर, कृतांत का भव्य स्वागत हुआ । सारा नगर उसके स्वागत में दुल्हन की तरह सजा हुआ था । स्वागत करने वालों में सबसे आगे उसके गुरु गुणाचार्य खड़े थे । ●

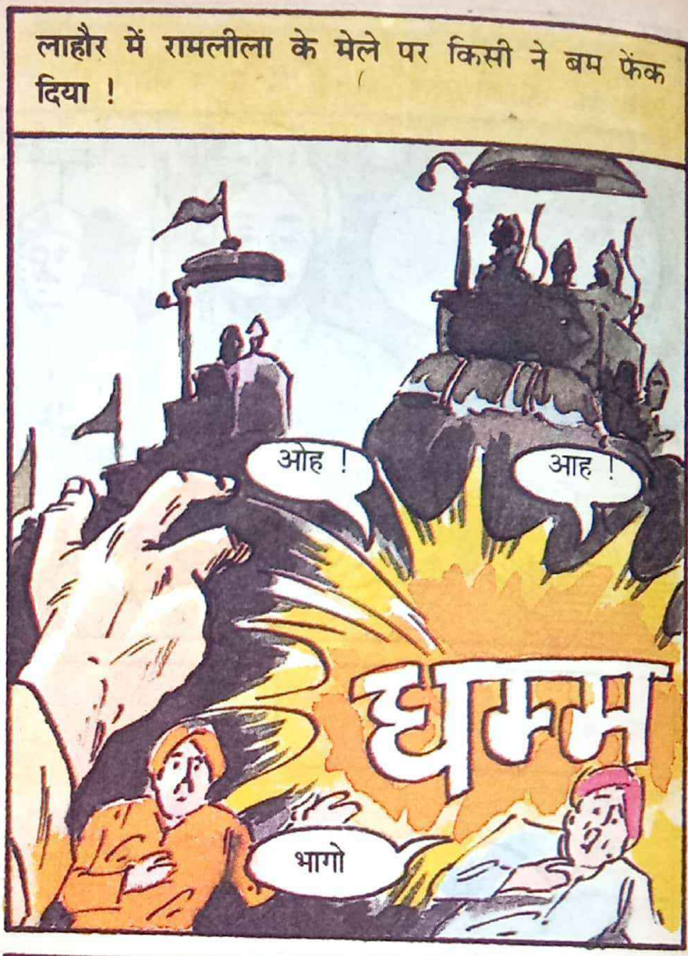

शहीद भगतसिंह
भागों वाला !
भगतसिंह !
लायलपुर (अब पाकिस्तान में) के बंगा गांव में सरदार किशनसिंह की पत्नी विद्यावती ने बेटे को जन्म दिया । दिन था— २७ सितम्बर, १९०७
किशनसिंह, उनके भाई अजीतसिंह और स्वर्णसिंह ने सदा विदेशी शासकों के खिलाफ संघर्ष किया ।
गोरों के जुल्म नहीं सहेंगे ।
आप हिरासत में हैं
भगतसिंह अपने भाई जगतसिंह के साथ स्कूल में पढ़ने जाते थे, पर उनका मन बेचैन रहता...
यहां अकेला क्यों बैठा है ?
मन करता है खुले आसमान में घूमने का


असहयोग आंदोलन शुरू हुआ। भगतसिंह ने पढ़ाई छोड़ दी। आजादी की लड़ाई में भाग लेने लगे।
मैं देश के लिए काम करूंगा
!!
एक शाम, भगतसिंह दोस्त के साथ रावी में नौका चला रहे थे।
मेरा जीवन देश के लिए...
!!
भगतसिंह ने मित्रों के साथ मिलकर नाटक मंडली बनाई। जगह-जगह नाटक खेलते। बात देश प्रेम की होती
वाह !
वाह !
खूब !
पिता ने देख लिया कि बेटा किधर जा रहा है। उन्होंने भगतसिंह की शादी तय कर दी।
आज लड़की वाले आएंगे
मैं शादी नहीं करूंगा
दादी जयकौर ने जिद ठान ली। लेकिन भगतसिंह तो देश के लिए जीने-मरने का निश्चय कर चुके थे। उन्होंने पिता के नाम पत्र लिखा और घर छोड़कर चल दिए।



लाहौर से कानपुर पहुंचे । बलवंत नाम रख, गणेशशंकर विद्यार्थी के अखबार 'प्रताप' में काम करने लगे ।
हां, अब किसी को पता नहीं चलेगा ।
वहीं उनका परिचय चंद्रशेखर आजाद से हुआ । भगतसिंह क्रांतिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे थे ।
खूब मिले !
नाम तो कई बार सुना था !
गंगा में बाढ़ आई, तो—
घबराओ मत !
घर वाले परेशान थे । दादी का बुरा हाल था । आखिर उनकी बीमारी की खबर सुनकर भगतसिंह घर लौटे !
बेटा !
शादी की बात नहीं करूंगा !


पिता ने दूध की डेरी खोल दी । भगतसिंह खूब मेहनत करते । वहीं देश को आजाद करने की योजनाएं बनतीं ।
अब देश की बात !
हां !


लाहौर में रामलीला के मेले पर किसी ने बम फेंक दिया !
ओह !
आह !
भागो


गोरी सरकार ने दोष क्रांतिकारियों पर मढ़ दिया । भगतसिंह गिरफ़्तार कर लिए गए । पर आरोप सिद्ध नहीं हुआ ।
आप आजाद हैं !


उन्होंने नौजवान भारत सभा बनाई । एक बार रामप्रसाद 'बिस्मिल' की स्मृति में शहीद दिवस मनाया । भारी भीड़ जमा हो गई !
दिवस
जिंदाबाद !

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

# नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २६, अंक ५, नई दिल्ली, मार्च '९०, माघ-फाल्गुन, शक सं. १९११

## बच्चों के लिए अलग मंत्रालय बने

**नई दिल्ली । 'बच्चों के लिए अलग से मंत्रालय बनाया जाए । बाल मजूरों से सम्बंधित सैकड़ों शिकायतें आती हैं, मगर उन पर कोई ध्यान नहीं देता । उन पर तुरंत ध्यान दिया जाना चाहिए । केंद्र सरकार बच्चों का मंत्रालय बनाकर उन पर ध्यान दे । राज्यों में अलग से बाल विभाग बनाए जाएं । ये विभाग बाल कल्याण में आने वाली बाधाओं को दूर करें । जनगणना के समय बच्चों की समस्याओं पर विशेष रूप से गौर किया जाए ।' —यह बात श्रम मंत्रालय द्वारा बनाई गई बाल श्रमिकों की रपट में कही गई है । इसके अध्यक्ष डा. लक्ष्मीमल सिंघवी हैं ।**

रपट में आगे कहा गया है—'जो बच्चे रात-दिन खटते हैं, जिन्हें दम लेने की फुरसत नहीं मिलती, जिनकी मासूम आंखों में कोई भी सपने उभरने से पहले मर जाते हैं । ये बाल मजूर ! मजूर होने से भी पहले बच्चे हैं । ये बेसहारा बच्चे कुछ पैसों के लिए दूसरों की दया पर पलने और कठिन परिश्रम करने के लिए मजबूर हैं । हमें इन मजूरों की समस्याओं को बच्चों की समस्या मानकर हल करना चाहिए । विकास के लिए जो भी योजना बने, उनमें बच्चों की समस्याओं पर सबसे पहले विचार किया जाए । बच्चों की समस्याएं दूसरी समस्याओं से अलग नहीं होतीं, अतः उन पर ध्यान दिया जाए । इनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति सुधारी जाए । उन लोगों को सजा मिले, जो बच्चों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं ।'

## बच्चे भागे

सेंटियागो । चिली में बड़ी संख्या में बाल कैदी हैं । पिछले दिनों इन बच्चों ने मिलकर सौ मीटर से भी लम्बी सुरंग बनाई । उसमें से सौ से अधिक बच्चे भाग निकले ।

## पेड़ बचेंगे

कोयम्बतूर । तमिलनाडु की नीलगिरि पहाड़ियों में दुर्लभ किस्म के पौधों को बचाने के प्रयास किए जाएंगे । वहां २८५ हेक्टेयर में फैले जंगल को आरक्षित घोषित किया गया है । इस जंगल में १२३ किस्म के पौधे पाए जाते हैं ।

## लक्ष्मी कैसे छूटी

लंदन । लक्ष्मी को कुवैत में अच्छी नौकरी दिलवाने का वायदा किया गया, लेकिन जब वह वहां पहुंची, तो उसे घरेलू नौकरानी बना दिया गया । बाद में उसे ब्रिटेन ले आया गया । उसे तरह-तरह की यातनाएं दी गईं । ब्रिटेन में स्थित 'कल्याण' नामक संस्था को इस बात का पता चला । उसने लक्ष्मी स्वामी को मुक्त कराया । उसे ५४ लाख डालर का हर्जाना भी दिलवाया गया ।

## शांति का सूत्र

गाजियाबाद । महर्षि योगी का कहना है कि वेद-विज्ञान के बिना दुनिया में शांति सम्भव नहीं है । उन्होंने कहा कि वेदों में छिपे ज्ञान को सरकारों को भी समझना चाहिए ।

## नंदन फोटो प्रतियोगिता

नई दिल्ली । बच्चों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'नंदन' ने बाल फोटोग्राफरों की प्रतियोगिता आयोजित की । इसमें देश के कोने-कोने से हजारों फोटोग्राफ प्राप्त हुए । रंगीन फोटोग्राफी वर्ग में जोधपुर के रवीन्द्रकुमार प्रथम रहे । मुजफ्फरपुर के राजेन्द्र प्रसाद द्वितीय और मथुरा के प्रदीप भट्ट तृतीय रहे । श्वेत-श्याम वर्ग में प्रथम पुरस्कार माउंट आबू के बी. के. रमेश ने जीता । द्वितीय और तृतीय पुरस्कार क्रमशः जयपुर के राधाकृष्ण शर्मा और बूंदी के श्यामसुंदर जोशी को मिले । प्रत्येक वर्ग में पांच-पांच प्रशंसा पुरस्कार भी दिए गए । पुरस्कारों का निर्णय करने वाली समिति के सदस्य थे—श्री जयप्रकाश भारती, एन. त्यागराजन और डा. एम. एस. अग्रवाल ।

## थैचर का घर

लंदन । ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मारग्रेट थैचर को इस पद पर दस वर्ष हो चुके हैं । लेकिन वह अपने घर की सफाई स्वयं करती हैं । श्रीमती थैचर को घर में व्यवस्था पसंद है । वह खाना भी पकाती हैं ।

## पाठक क्लब

नई दिल्ली । नेशनल बुक ट्रस्ट स्कूलों और कालेजों में पाठक क्लब बनाएगा । इसके लिए अब तक पचपन हजार फार्म स्कूलों और कालेजों में भेजे जा चुके हैं । इन क्लबों में अच्छी पुस्तकों के बारे में बातचीत हुआ करेगी । इन्हीं चर्चाओं को ध्यान में रखकर पुस्तकालयों में पुस्तकें खरीदी जाया करेंगी ।



पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

कर्म के रथ पर चढ़कर कहीं भी पहुंचा जा सकता है। —महाभारत

# आदमी और जानवर

कहानियों में अक्सर आता है कि जानवर आदमी से बात करता है। इसे हम कल्पना की उड़ान मानते आए हैं। आदमी की परेशानी या दुःख से जानवर दुखी होते हैं, यह तो हम में से बहुतों ने देखा है। मौका पड़ने पर वे आदमी की मदद भी करते हैं।

अब ऐसे प्रयोग किए जा रहे हैं कि जानवरों से बातचीत की जा सके। फ्रांसिस पेटरसन ने छोटी-सी गोरिल्ला कोको को संकेत भाषा सिखानी शुरू की। उन्होंने उसे काफी कुछ सिखा भी दिया। दूसरे वैज्ञानिक भी वानरों, चिम्पांजियों, गुरिल्लाओं तथा अन्य जानवरों को सिखाने में लगे हैं। वे चाहते हैं कि उनसे बात कर सकें, उनकी बात समझ सकें। प्रयोगों से लगता है कि कुछ बरस में कहानियों की बातें सच साबित हो जाएंगी।

## खेलों का अखबार

न्यूयार्क। अमरीका में खेल सम्बंधी सामग्री से भरा दैनिक अखबार निकाला गया है। शुरुआत में ही इसकी दो लाख प्रतियां छापी जा रही हैं। अमरीका का यह पहला खेल समाचार देने वाला दैनिक पत्र है। नाम है— 'द नेशनल।'

## कच्ची सब्जियां खाइए

हैदराबाद। यदि खान-पान की आदतों को थोड़ा-सा बदल लिया जाए, तो कैंसर का खतरा काफी कम हो जाता है। जो लोग गोभी, मूली, गाजर आदि का जितना अधिक प्रयोग करते हैं, उतना कैंसर का खतरा कम हो जाता है।

## रानी दे सम्मान

लंदन। ब्रिटेन की महारानी ने हरभजन सिंह और प्राग नारायण मेहरा को सम्मानित किया है। ये दोनों नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश हाई कमीशन में काम करते हैं।

## बैल खींचते रेल

ग्वालियर। उन्नीसवीं सदी में आगरा और ग्वालियर के बीच ऐसी रेलगाड़ी चलती थी, जिसे बैल खींचते थे। इसमें सैनिक और हथियार ढोए जाते थे।

## हथियार और बच्चे

मनीला। पिछले दिनों युद्ध के दौरान जिन बच्चों का जन्म हुआ था, उनके माता-पिताओं ने उनका नाम हथियारों के नाम पर रखने का फैसला किया है। माताओं का कहना है कि ये बच्चे हमेशा भयानक युद्ध की याद दिलाते रहेंगे, जिससे लोग युद्ध से डरने लगें।

## ईमानदार ईश्वरसिंह

नई दिल्ली। इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सिपाही ईश्वर सिंह तैनात था। उसे २६०० अमरीकी डालर से भरा थैला मिला। ईश्वरसिंह ने वह थैला अधिकारियों के पास जमा करा दिया। थोड़ी देर में थैले का मालिक राजिंदर सिंह उसे ढूंढ़ता हुआ आया। उसे सामान सौंप दिया गया।

## नागार्जुन सम्मानित

नई दिल्ली। जाने-माने हिन्दी कवि नागार्जुन को 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की तरफ से दिया जाता है। पुरस्कार में एक लाख रुपए की राशि दी जाती है।

## हर एक, एक को पढ़ाए

नई दिल्ली। देवलीना और शेफाली ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा हैं। उन्होंने अनवरी और सरला नाम की दो महिलाओं को कुछ ही दिनों में पढ़ना-लिखना सिखाया है। इन्हीं दो बालिकाओं जैसे सैकड़ों बच्चे और हैं, जो अपने आसपास के अनपढ़ व्यक्तियों, बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखा रहे हैं। सिप्रंगडेल्स स्कूल में बच्चों की शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा है—दूसरों को शिक्षित करना, अस्पतालों में जाकर गरीबों की मदद करना। दिल्ली के बहुत-से स्कूलों में ये कार्यक्रम चल रहे हैं। बच्चे महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई का काम भी सिखाते हैं। फिर अपने-अपने स्कूलों में मेले आयोजित करके इन चीजों को बेचते हैं। इससे जो आमदनी होती है, वह इन गरीब महिलाओं में बांट दी जाती है। अभी चार हजार बच्चों ने एक 'साक्षरता जुलूस' भी निकाला था, जिससे लोग उनके इस काम के बारे में जान सकें।

## अद्भुत अजगर

बोन। यहां के चिड़िया घर में लोगों ने तीन मीटर लम्बे एक अजगर को देखा। अजगर जमीन में बिल खोदने में जुटा था। उसके मुंह से पीला धुआं निकल रहा था। समझा जाता है कि यह विश्व का सबसे बड़ा अजगर है।

## १५ से १८ घंटे

नई दिल्ली। भारत में ६ से लेकर १४ वर्ष तक के पांच करोड़, पचास लाख बच्चे बंधुआ मजदूर हैं। ये बच्चे १५ से लेकर १८ घंटे तक काम करते हैं। इन मासूम बच्चों पर न तो मालिक ही दया करते हैं, न ही कोई कानून इनकी मदद करता है। अभी कुछ बाल मजदूरों को मुक्त कराया गया है। इनके पढ़ने-लिखने-रहने की व्यवस्था की जाएगी।

## उत्तर प्रदेश की झांकी पुरस्कृत

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाली विभिन्न राज्यों की झांकियों में से उत्तर प्रदेश की झांकी को प्रथम पुरस्कार मिला है। इस झांकी में भगवान बुद्ध को सारनाथ में उपदेश देते दिखाया गया था। सेना की टुकड़ियों में वायुसेना की टुकड़ी को प्रथम पुरस्कार मिला। स्कूली छात्रों के कार्यक्रम में न्यू एरा पब्लिक स्कूल को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

## बुद्ध की प्रतिमा

हैदराबाद। यहां की हुसैनसागर झील में भगवान बुद्ध की प्रतिमा लगेगी। ४५० मीट्रिक टन की यह प्रतिमा १८.३ मीटर ऊंची है। इस प्रतिमा को झील के भीतर चट्टान तक ले जाने के लिए एक विशेष नाव बनाई है। यही नहीं, इस प्रतिमा को यहां स्थापित करने के लिए हालैंड की कम्पनी को ठेका दिया गया है।

## मिसाइल से कलम

लंदन। सोवियत संघ द्वारा नष्ट किए गए परमाणु प्रक्षेपास्त्रों से दस करोड़ पैन बनाए जाएंगे। इसमें प्रक्षेपास्त्रों से बचे दो हजार टन धातु के टुकड़ों का इस्तेमाल किया जाएगा। इन पैनों से मिले पैसे का उपयोग मुसीबत में फंसे लोगों की भलाई के लिए किया जाएगा।

## जहाजों की मरम्मत

मद्रास। पानी के जहाजों की मरम्मत के लिए अब बंदरगाहों पर आधुनिक सुविधाएं जुटाई जा रही हैं। मद्रास में दो तैरते हुए जहाजी माल घाट बना दिए जाएंगे। इन पर जहाजों की मरम्मत की जा सकेगी। इनका नाम 'भारत' और 'मधुसूदन' रखा गया है। अब तक जहाजों की मरम्मत विदेशों से करानी पड़ती थी। हर साल एक अरब रुपए की विदेशी मुद्रा खर्च होती है।

## बाल कवि सम्मेलन

नई दिल्ली। हिन्दुस्तान टाइम्स हाउसिंग सोसाइटी में बच्चों के लिए एक कवि सम्मेलन किया गया। सम्मेलन में सभी भाग लेने वाले बच्चों ने कविताएं पढ़ीं। बाद में बच्चों के जाने-माने कवियों सर्वश्री राधेश्याम प्रगल्भ, शेरजंग गर्ग, दिविक रमेश, रत्न प्रकाश शील, रमेश तैलंग, विश्वनाथ गुप्त,प्रदीप सौरभ, देवेन्द्र कुमार, घमंडी लाल अग्रवाल आदि ने बच्चों के लिए कविताएं पढ़ीं। इसका संयोजन क्षमा शर्मा ने किया।

## दीवार के टुकड़े

टोरंटो। बर्लिन की दीवार पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी में विवाद का विषय बनी हुई थी। अब इस दीवार के टुकड़े दस-दस डालर में बेचे जाएंगे।

## कभी अन्न नहीं खाया

जलगांव। चौबीस का युवक है निवृत्ति। अब तक उसने दूध के अलावा और कुछ नहीं खाया है। ठोस आहार वह पचा नहीं पाता। यहां तक कि फलों का रस भी उसे पसंद नहीं है। वह अपने पिता के साथ खेतों पर कड़ी मेहनत करता है। पूरे दिन में पांच किलो दूध पी जाता है।

## छोटी उम्र बड़े काम

नई दिल्ली। अठारह वर्ष का है—दीपक स्याल। चावल के एक दाने पर उसने ५९ देशों के नाम लिखे हैं। ये नाम २५२ अक्षरों से बने हैं। यह एक कीर्तिमान है।

## धिक्कार समिति

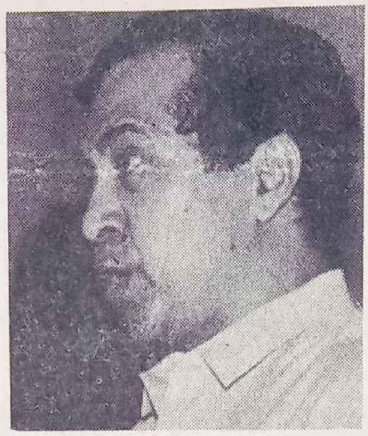
मुंगेर। सद्भावना समिति तो सबने सुनी है, मगर अब एक धिक्कार समिति बनाई गई है। यह समिति उन विभागों को धिक्कार पत्र भेजा करेगी, जो अपना काम ठीक समय पर नहीं करते। इस संस्था की अध्यक्ष मनोरमा हैं। उनके अनुसार अब तक संस्था के सैकड़ों सदस्य बन चुके हैं।

## नन्हे समाचार

- ☐ केंद्र सरकार भरतपुर के पक्षी विहार में कुएं खुदवाएगी। सूखे के कारण वहां पानी की बेहद कमी है।
- ☐ फरीदाबाद में बाल भवन बनाया गया है। इस पर बीस लाख रुपए खर्च किए गए हैं।
- ☐ पिछले वर्ष दिल्ली पुलिस ने अपराधों के खिलाफ 'विज्ञापन अभियान' चलाया था। पता चला है कि इससे अपराधों में उनतीस प्रतिशत की कमी हुई।
- ☐ पोलैंड के नेता लैच वालेसा को नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया था। उन्होंने सारी राशि लोगों की भलाई के लिए दान कर दी।
- ☐ दक्षिण अफ्रीका में काले लोग गोरों की बसों में नहीं चढ़ सकते। लेकिन यदि वे बस में चढ़ते ही कंडक्टर से कहें कि वे काले नहीं हैं, तो उन्हें यात्रा करने दी जाती है।
- ☐ दिल्ली में बालक भिखारियों की संख्या बीस हजार से भी ऊपर पहुंच चुकी है।
- ☐ भारत दुनिया भर के फूलों का १५.५ प्रतिशत निर्यात करता है।
- ☐ दक्षिण अफ्रीका से बोतल में बंद करके चौंतीस वर्ष पहले समुद्र के रास्ते एक संदेश भेजा गया था। यह बोतल अब इंग्लैंड में मिली है।
- ☐ चिली के वैज्ञानिकों ने नया धूमकेतु खोजा है। इसका नाम रखा गया है— आस्टिन। यह हैली के धूमकेतु से दस गुना अधिक चमकीला है।
- ☐ न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज रिचर्ड हैडली टैस्ट क्रिकेट में ४०० विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं। हेडली ने यह करिश्मा क्राइस्टचर्च में भारत के विरुद्ध पहले क्रिकेट टैस्ट मैच के दौरान किया।

# सचित्र समाचार

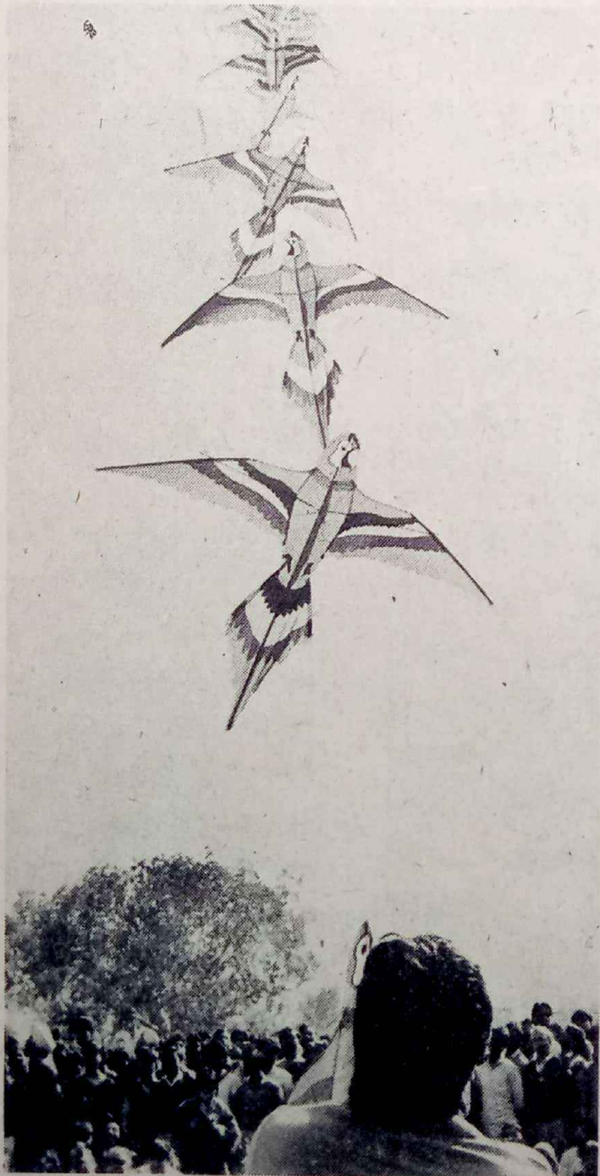




पत्रकार श्री अरुण शौरी और श्री एन. राम को इस वर्ष पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।



श्री टी.एन. चतुर्वेदी को पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया।



एक तोता... दो तोते.. पचासों तोते खा गए न धोखा... ये हैं पतंगें। यह मेला दिल्ली में लगा।



नंदीश्वर की मूर्ति: चौदहवीं सदी की : सतारा के पास मिली।



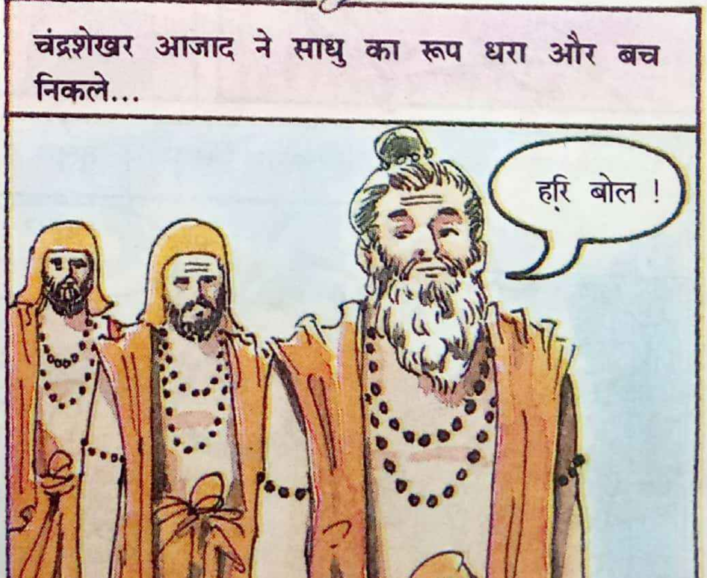
बंदर, नाम गणेशन! न जाने कितने लोगों को काटा? न्यायालय ने मौत की सजा दे दी। श्रीमती मेनका गांधी और एक मलयालम कवयित्री के कारण बच सका। आजकल मजे में है।

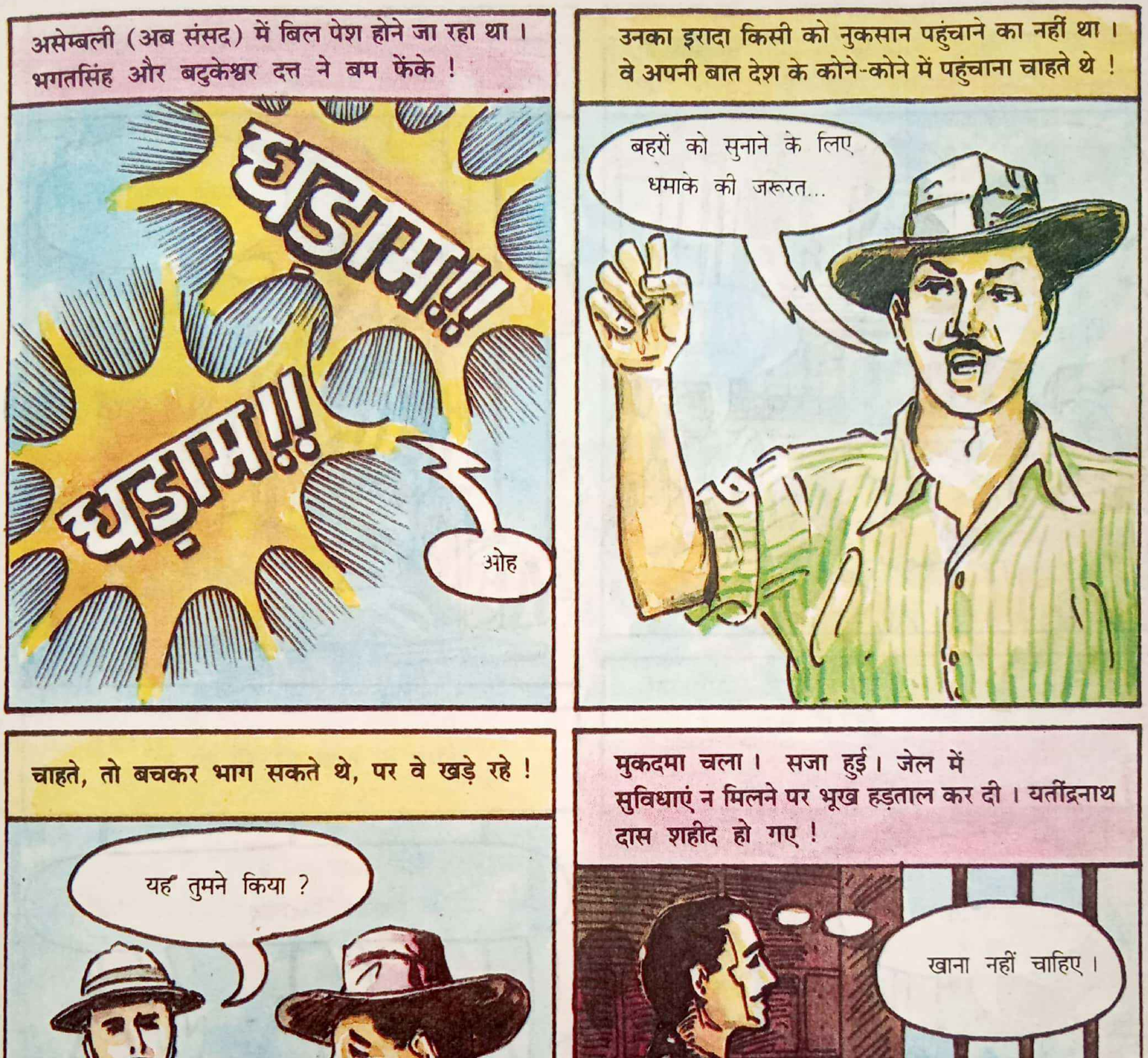

सरकार की आंखों में खटकने के कारण वह छिपकर काम करने लगे। घर छोड़ दिया हमेशा के लिए।
दिल्ली में क्रांतिकारियों की बैठक बुलाई !
जल्दी ही कुछ करना होगा
हां !
अब भगतसिंह दाढ़ी नहीं रखते थे। सबके बीच सबकी तरह
देश के लिए घर का सुख-चैन छोड़ा ! बहुत कष्ट झेले !
आज भोजन के लिए पैसे नहीं...
नंगी धरती पर ठंड में...
साइमन कमीशन लाहौर आया। विरोध में जुलूस निकला। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय आगे थे।
उन पर लाठियां बरसीं
साइमन ! वापस जाओ !!
साइमन ! गो बैक !!


शाम को एक सभा में लाला जी घायल शेर की तरह दहाड़े....
मेरे ऊपर पड़ी एक-एक चोट...


लाला जी की मृत्यु हो गई। भगतसिंह तथा उनके साथियों ने बदला लेने का निश्चय किया। सांडर्स दफ़्तर से निकला तो....
आह !
धाँय


पुलिस पीछे थी। भगतसिंह ने साहब का वेश बनाया। साथ में भगवतीचरण की पत्नी दुर्गा भाभी थीं। राजगुरु नौकर बने थे !

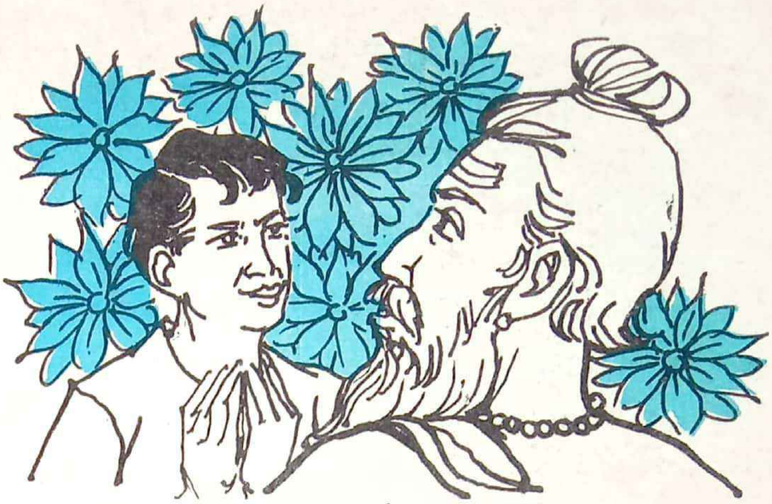

चंद्रशेखर आजाद ने साधु का रूप धरा और बच निकले...
हरि बोल !


असेम्बली (अब संसद) में बिल पेश होने जा रहा था। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंके !
धड़ाम!!
धड़ाम!!
ओह
उनका इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं था। वे अपनी बात देश के कोने-कोने में पहुंचाना चाहते थे !
बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत...
चाहते, तो बचकर भाग सकते थे, पर वे खड़े रहे !
यह तुमने किया ?
हां !
मुकदमा चला। सजा हुई। जेल में सुविधाएं न मिलने पर भूख हड़ताल कर दी। यतींद्रनाथ दास शहीद हो गए !
खाना नहीं चाहिए।


इसी बीच सांडर्स हत्याकांड का मुकदमा भी शुरू हो गया....
भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव सजाए मौत...
भारत माता की जय !
इंकलाब जिंदाबाद !
पिता ने माफी की अपील दायर की। भगतसिंह ने नाराज होकर पिता को पत्र लिखा....
माफी कभी नहीं...
२३ मार्च, १९३१ की शाम को जेल अधिकारी भगतसिंह के पास आया। चलने को कहा। वह लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे।
ठहरो ! एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है !
फांसी के तख्ते पर भी डरे नहीं...
भारत माता की जय ! इंकलाब जिंदाबाद
भगतसिंह ने हंसते-हंसते देश पर मर-मिटना सिखा दिया।

# गूंगों का गांव

—भारतभूषण श्रीवास्तव



किसी गांव में ब्रह्मप्रकाश नामक एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। यूं वह हर तरह से सुखी और सम्पन्न था, परंतु अपने इकलौते पुत्र राघव को लेकर हमेशा चिंतित रहता था। बात यह थी कि राघव ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था। युवा पुत्र और वह भी मूर्ख और सनकी, इसी चिंता से चिंतित था पिता।

ब्रह्मप्रकाश की विद्वता के कारण दूर-दूर उनका आदर और ख्याति थी। राघव को सही रास्ते पर लाने के लिए उन्हें कुछ न सूझ पड़ा। फिर सोचा—'इसका विवाह कर दिया जाए, तो शायद यह संभल जाए। परंतु कोई भी राघव को अपनी कन्या देने को तैयार न हुआ।

दुखी होकर ब्रह्मप्रकाश ने राघव को भाग्य के सहारे छोड़ दिया। उन्होंने तीर्थ यात्रा पर जाने का निश्चय कर लिया। राघव की मां पहले ही स्वर्ग सिधार गई थी। बेटे को अकेले छोड़कर जाने का दुःख पिता को था, मगर इसके अतिरिक्त कोई रास्ता भी न था।

ब्रह्मप्रकाश के तीर्थ यात्रा पर जाते ही गांव वालों ने राघव पर छींटाकशी और ताने कसने शुरू कर दिए। स्वभाव से राघव भोला था, लेकिन गांव वालों के ताने सुनकर वह क्रुद्ध हो उठा।

एक दिन राघव जब गांव की चौपाल के पास से गुजर रहा था, किसी ने ताना कसा—"क्यों विद्वान पिता के मूर्ख पुत्र ! अब पेट कैसे भरोगे ?" इसके बाद वहां बैठे लोग जोरों से हंस पड़े।

क्रोध में आकर राघव ने कहा—"अब तुम्हें सबक सिखाकर ही रहूंगा।"

अपमान के घूंट पीता हुआ राघव गांव के बाहर एक वृक्ष के नीचे जा बैठा। वह गांव वालों को सबक सिखाने की सोचने लगा। आखिरकार घने जंगल में जाकर एक खंडहर में भूखे-प्यासे राघव ने तपस्या शुरू कर दी। एक दिन एक ऋषि उधर से गुजरे। उन्होंने राघव को देखा। उसके पास आए। राघव की बात सुनकर ऋषि ने कहा—"मैं तुम्हें एक वरदान देना चाहता हूं। मांगो, क्या मांगना चाहते हो ?"

"मुझमें शाप देने की शक्ति आ जाए।"—राघव ने ऋषि से कहा।

"तथास्तु !"— ऋषि ने वरदान दे दिया। फिर कहा—"तुम इस वरदान का सिर्फ एक बार ही उपयोग कर सकते हो।"कहकर ऋषि चले गए।

अब गर्व में चूर राघव गांव लौटा। इतने दिनों बाद राघव को गांव में आया देख, गांव वालों को आश्चर्य हुआ। गांव की सीमा पर ही उन्होंने राघव को घेर लिया। फिर उसका उपहास करने लगे। क्रोधित राघव ने चिल्लाकर कहा—"मैं शाप देता हूं, पूरा गांव गूंगा हो जाए, ताकि आइंदा कोई मुझे मूर्ख और सनकी न कह सके।"

राघव के शाप का तुरंत प्रभाव हुआ। गांव के सभी लोग गूंगे हो गए। राघव जब यह श्राप देकर घर गया, तो सकते में आ गया। उसके पिता ब्रह्मप्रकाश तीर्थ यात्रा से वापस आ चुके थे। शाप के प्रभाव से वह भी गूंगे हो गए थे। यह देखकर राघव अपनी मूर्खता पर पछताने लगा।

ब्रह्मप्रकाश ने संकेत में राघव से पूछा कि इतने दिनों वह कहां था। राघव ने सारा वृत्तांत कह सुनाया।

सुनकर ब्रह्मप्रकाश ने माथा पीट लिया। सोचने लगे—'यह वरदान में अगर ज्ञान, समृद्धि मांग लेता, तो इसके सारे दुःख दूर हो जाते। बदले की भावना से प्रेरित होकर क्या मांग बैठा यह ?'

यह बात उन्होंने लिखकर राघव को बतानी चाही, मगर वह ठीक से पढ़ना भी नहीं जानता था । विवश ब्रह्मप्रकाश पुत्र की मूर्खता पर आंसू बहाने लगे ।

पिता को रोता देख, राघव को भी दुःख हुआ, परंतु अब क्या कर सकता था ? राघव गांव में जहां से भी निकलता, लोग उसे देखकर घृणा से मुंह फेर लेते । पूरे गांव में सन्नाटा छाया रहता । गांव का सूनापन और मनहूस वातावरण उसे भी बुरा लगने लगा । वह सोचता—'सचमुच ही तो मैं उपहास का पात्र हूं । इतने विद्वान पिता का पुत्र होकर भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सका । गांव के लोग जैसे भी हैं, मुझे चाहते भी तो थे । मेरे पिता का सम्मान तो करते थे । जब ज्ञान प्राप्ति का अवसर आया भी, उल्टे शाप शक्ति मांगकर मैंने पूरे गांव को बोलने से ही लाचार कर दिया ।' उसे इससे भी ज्यादा पश्चाताप यह था कि उसने केवल शाप देने की शक्ति मांगी, उसकी मुक्ति की नहीं पूछी ।

सोच-समझकर राघव ने गांव वालों को इकट्ठा किया । उनसे क्षमा मांगी और कहा— "मैं पुनः कठोर तपस्या करूंगा । अब भगवान से आप सबको शाप मुक्त करने का वरदान मांगूंगा ।"

मन में दृढ़ संकल्प लेकर राघव जंगल की तरफ रवाना हुआ । गांव के लोग उसे सीमा तक छोड़ने आए । वे मन ही मन प्रार्थना करने लगे कि राघव की तपस्या सफल हो ।

राघव जैसे ही खंडहर में पहुंचा, ऋषि पहले से ही उपस्थित थे । यह देखकर राघव को आश्चर्य हुआ ।

ऋषि ने मुसकराकर कहा—"वत्स, मैं जानता था तुम फिर आओगे । बचपन से मूर्ख होते हुए भी तुममें दया भाव है । अपने किए पर तुम शर्मिंदा भी हो । आज से अपने पिता की तरह ज्ञानी और विद्वान होने का आशीर्वाद मैं तुम्हें देता हूं । साथ ही गांव के लोगों को शाप मुक्त भी करता हूं ।"

राघव ने भाव विभोर होकर ऋषि को प्रणाम किया और खुशी-खुशी गांव लौट आया । गांव के लोग श्राप मुक्त हो चुके थे । वे राघव का स्वागत कर, प्रसन्न हो रहे थे । ●

# नई मिठाई

—ओमप्रकाश सिंहल

बहुत पुरानी बात है । दिल्ली में एक ठग रहता था । वह बड़ा बुद्धिमान था । लोगों को ठगने की नई-नई विधियां निकालता रहता । उसके बारे में प्रसिद्ध था कि पहले प्रयोग में लाई गई विधि का प्रयोग दोबारा नहीं करता था । इसीलिए उसे कोई पकड़ नहीं पाता था । उसकी चतुराई से दूसरे ठग तक हैरान थे । कुछ उसकी नई तरकीबों की प्रशंसा करते, कुछ चिढ़ते ।

एक दिन की बात है । उसके दिमाग में यह विचार आया कि कोई नई मिठाई बनाई जाए । उसने चूल्हे पर कढ़ाई चढ़ा दी । फिर चाशनी पकाने लगा । जब पक गई, तब उसमें लकड़ी का बारीक बुरादा डाल दिया । फिर कढ़ाई उतारकर लड्डू बांध लिए । लड्डुओं को थाल में सजाया । ऊपर से वर्क लगा दिया ।

दीवाली के दिन थे । बाजार में मेले की बड़ी रौनक थी । तरह-तरह की दुकानें सजी थीं । कहीं खिलौने बिक रहे थे, कहीं रंग-बिरंगी मोमबत्तियां । पटाखों और मिठाइयों की दुकानें बेहिसाब थीं । इसी मेले में ठग भी लड्डुओं को थालों में सजाकर लाया ।

—"एकदम नई मिठाई ले लो । संदीले के लड्डू ले लो । सस्ते दामों में बढ़िया मिठाई ले लो ।"

उसकी आवाज सुनते ही लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई ।

अब उसने एक थाल में अलग से बनाकर रखे गए लड्डुओं को चखने के लिए बांटना शुरू किया । ये लड्डू बड़े स्वादिष्ट बने थे । आखिर क्यों न होते ! उनमें कद्दूकस किया हुआ गोला था और काजू-किशमिश, अखरोट थे । कतरे हुए पिस्ते और बादाम थे । और कीमत बाजार से तीन-चौथाई । लोग चखते और तारीफ के पुल बांधते जाते । इसके साथ-साथ अपना आर्डर भी देते जाते । देखते ही देखते सारी मिठाई बिक गई । मांग ज्यादा थी, मिठाई कम ।

जो लोग लड्डू खरीदकर ले गए, उन्हें घर जाकर असलियत का पता चला । चखे और खरीदे गए लड्डुओं में जमीन आसमान का फर्क था । तभी से यह कहावत प्रसिद्ध हो गई— संदीले का लड्डू, खाए तो पछताए, न खाए तो पछताए । ●

# खोखल में धन

—शिवकुमार कौशिक

यह प्राचीन काल की बात है। काली धरती वाले मालवा क्षेत्र में नवलगढ़ नाम का एक राज्य था। वहां के राजा थे आदित्यसेन।

एक बार वह अपने मंत्रियों और दरबारियों को साथ लेकर शिकार खेलने गए। काफी चलने के बाद वह वन में पहुंचे। वहां राजा को एक जंगली भैंसा दिखाई दिया। राजा ने अपना धनुष-बाण संभाल लिया। शिकारी राजा को देख, भैंसा आएं-बाएं दौड़ने लगा। राजा भी सावधान होकर उसका पीछा करने लगे। भैंसा निशाने से बचने के लिए पेड़ों की आड़ लेकर भागता रहा। इस प्रकार राजा के निशाने से अपने को बचाता रहा। आगे घना जंगल था। दूर तक फैली झाड़ियों और वृक्ष समूह में भैंसा छिप गया। राजा के साथी पीछे छूट गए थे। इस तरह वन में अकेले भटकते हुए शाम हो गई। दिन छिपने लगा, तो राजा ने जंगल से निकलने का प्रयास किया। बड़ी मुश्किल से एक पगडंडी दिखाई पड़ी। उसी पर अपना घोड़ा दौड़ाने लगे। रात हो गई, तो वह अकेले ही जंगल से निकले।

जंगल से बाहर उन्होंने एक ठिकाना देख, घोड़े को एक पेड़ से बांध दिया। खा-पीकर जमीन पर ही सो गए। राजा आदित्यसेन को कब नींद आई, इसका उन्हें खुद कुछ भी पता नहीं चला। जब उनकी आंखें खुलीं, तो दिन निकल आया था।

जहां राजा सोए हुए थे, वहां से कुछ ही दूर एक घसियारा घास काट रहा था। काफी घास हो जाने पर उसने सारी घास एक गठिया में बांध ली। उधर राजा भी अपनी राजधानी लौटने की सोचने लगे। उनका घोड़ा एक पुराने विशाल वृक्ष की एक जड़ से बंधा था। राजा घोड़ा खोलने गए। उन्होंने वृक्ष के तने में एक बड़ी खोखल देखी। उन्होंने उत्सुकतावश तलवार की नोक से उस खोखल की सतह को कुरेदा। देखना चाहते थे, इसमें क्या है। तलवार की नोक इधर-उधर घुमाई, तो खनखनाने की आवाज आई। अब राजा तलवार की तेज धार से खोखल को काटने लगे। कटने पर राजा ने देखा, खोखल में सोने के कई आभूषण रखे हुए हैं। यह देख, राजा आश्चर्य चकित रह गए। उनका मन ललचा गया। फिर सोचने लगे—'मेरे पास धन की क्या कमी। क्यों न मैं यह धन इस घसियारे को दे दूं? धन पाने पर उसे गरीबी से मुक्ति मिल जाएगी।'

राजा आदित्यसेन अपनी इस बात पर खुश हुए। वह घसियारे की ओर बढ़े, जो अब अपनी घास की गठिया को घुटनों पर रख सिर पर लादने वाला था। राजा ने उसके पास जाकर कहा—"छोड़ो इस घास को। मेरे साथ आओ।"

"कहां?"—घसियारे ने राजा से पूछा। राजा ने पेड़ की ओर इशारा करते कहा—"वहां। उस पेड़ की ओर।"

घसियारे ने सरल भाव से पूछा—"क्यों, क्या आप वहां मुझे उसकी खोखल दिखाना चाहते हैं?"

राजा आदित्यसेन ने कहा—"हां।"

घसियारे ने पूछा—"क्यों, क्या है उसमें?"

राजा ने कहा—"उसमें सोने के आभूषण भरे हैं। तुम उन्हें ले जाओ और धनवान बन जाओ। तुम भी याद रखोगे कि कैसा दानी राजा मिला था।"

घसियारा बोला—"मैं बहुत समय से उन आभूषणों के बारे में जानता हूं। मगर मुझे उनसे क्या लेना? वे जिसके होंगे, ले जाएगा। मुझे दूसरे का धन नहीं चाहिए। मुझे तो अपना यह काम ही प्यारा है। मेहनत करता हूं, घास बेचता हूं। जो पैसे मिलते हैं, उससे सभी घर वाले रूखी-सूखी रोटियां खाकर चैन से सोते हैं।"

घसियारे की बात सुन राजा दंग रह गए। सोचने लगे—'यह व्यक्ति तो अपनी मेहनत से ही खुश है। आभूषणों से वह तनिक भी नहीं ललचाया। एक मैं हूं, जो बिना किसी मेहनत के जीवन बिताता हूं।' घोड़े पर सवार हुए राजा अपनी राजधानी को लौट रहे थे, पर अपने में बहुत कुछ बदले हुए। ●

# कौन खाता है

—ज्ञानदेव रा. चौधरी

एक दिन राजा भोज और कवि कालिदास वेश बदलकर निकल पड़े। लोग क्या कहते हैं, क्या चाहते हैं? यह जानने के लिए एक गांव से दूसरे गांव घूमते रहे। चलते-चलते बातें भी करते जाते थे। बातों-बातों में राजा भोज ने कवि कालिदास से पूछा— "कविराज! खाता कौन है?"

कवि कालिदास सोचने लगे, क्या जवाब दें? तभी राजा भोज हंसकर बोले—"क्यों कवि जी, सोच में पड़ गए न?"

कालिदास ने कहा—"बिना सोचे उत्तर देने वाला मूर्ख होता है।"

राजा भोज ने जवाब दिया—"कविराज, सीधी-सरल बात में विचार करना भी बुद्धिमानी नहीं है। गुलाब का रंग कैसा है। खौलता पानी गरम है या ठंडा है-- ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए विचार नहीं किया जाता।"

कालिदास ने कहा—"तो आप ही इसका उत्तर दें।"

राजा भोज बोले—"मेरा प्रश्न है कि खाता कौन है? इसका सीधा और सरल उत्तर है— भूखा ही खाता है।"

कवि कालिदास ने कहा—"गलत।"

राजा भोजने पूछा— "वह कैसे?"

कालिदास ने कहा—"प्रत्यक्ष दिखाऊंगा।"

राजाभोज ने कहा—"तो फिर दिखलाइए।"

कालिदास ने दूसरे दिन अपना और राजा का वेश बदल दिया। राजा को पंडित तथा स्वयं को शिष्य बनाया। फिर कालिदास ने राजा भोज से कहा—"आपको कुछ नहीं बोलना पड़ेगा। केवल मेरे साथ चलते रहें। जहां भी जरूरत होगी, मैं ही बोलूंगा।"

चलते-चलते उन्हें एक बड़ी हवेली दिखी। कालिदास ने राजा भोज से कहा—"दोपहर हो गई है। भूख लगी होगी। यह बड़ी हवेली है। हमें भोजन मिल ही जाएगा।"

वे दोनों हवेली के दरवाजे पर जा खड़े हुए। तभी सेठ का मुनीम आया। पंडित बने राजा और कवि की तरफ देखकर पूछा—"कौन हैं आप?"

कवि ने कहा—"हम कौन है, यह हर देखने वाला समझ सकता है, लेकिन हमें न पहचानने वाले मूर्ख, तुम कौन हो?" मुनीम को क्रोध आया और वह भुनभुनाता हुआ हवेली के अंदर चला गया। राजा भोज को आश्चर्य हो रहा था— 'कवि कालिदास जैसे विद्वान ने, ऐसी बात क्यों कही?'

राजा की तरफ देखकर कालिदास मधुर-मधुर हंसे। राजा को यह अच्छा नहीं लगा, लेकिन न बोलने का नियम लिया था, इसलिए चुप रहे।

तभी सेठ के घर की दासी बाहर आई। राजा और कवि को देखकर उसने भी पूछा—"आप क्यों खड़े हैं?"

कालिदास बोले उठे—"कोई फूटी आंखों वाला भी देख सकता है कि हम क्यों खड़े हैं? फिर भी तुम ऐसा प्रश्न पूछ रही हो। पूछो कि हमें क्या चाहिए? दोपहर का समय है। हम भूखे हैं।"



दासी क्रोधित वाणी में बोली—"भूखे हैं, तो जाकर पत्थर खाइए।"—कहकर वह चली गई।

तभी सेठानी मंदिर से पूजा करके लौटी। राजा और कवि को सामने खड़े देखकर सेठानी ने सोचा—'कोई याचक पंडित आंगन में खड़े हैं। कुछ दान देना चाहिए।' पूजा की थाली से कुछ पैसे उठाकर उन्हें देने लगी।

कवि ने पूछा— "क्या देती हो?"

सेठानी ने कहा—"दान।"

चिढ़कर बोले—"यह कोई मूर्ख सेठानी लगती है। समझदार समझ सकता है कि हम पंडित दोपहर के समय किसलिए खड़े हैं?"

अपने लिए मूर्ख शब्द का सम्बोधन सुनकर सेठानी को क्रोध आ गया। बोली— "दिखते तो पंडित जैसे हैं, लेकिन बोलते कैसा हैं?"

तभी सेठ जी भी आ गए। पूरी बात सुनकर, उन्हें भी क्रोध आ गया। वह गुस्से से बोले—"कौन हैं आप लोग?"

कवि ने कहा—"फिर वही बात। लगता है, यह हवेली किसी मूर्ख ने बनवाई है। इसमें रहने वाले सभी मूर्ख हैं। हम कौन हैं, यह देखकर भी नहीं पहचानते। हम काशी के पंडित हैं। यह हमारे गुरु हैं। हम भूखे हैं, इसलिए यहां पधारे हैं।"

सेठ ने मुनीम से कहा–"चौकीदार को बुलाइए और इन पंडितों को धक्के मारकर निकलवा दीजिए।"

राजा भोज समझ गए कि खड़े रहेंगे तो मार खानी पड़ेगी। "चलो, भाग चलो।"— कहते हुए राजा ने कवि का हाथ पकड़ा और वहां से भाग खड़े हुए।

"कविराज! आपने यह क्या किया? यह कैसा नाटक था?"— राजा ने दूर जाकर कालिदास से पूछा।

"समझे नहीं? आपका उत्तर मैंने गलत सिद्ध कर दिया। अब सही उत्तर सिद्ध करना बाकी रहा।" —कालिदास बोले।

तीन महीने के बाद फिर से कालिदास ने राजा भोज को कश्मीरी पंडित का वेश बनाकर साथ लिया। उसी हवेली के पास पहुंचे। राजा भोज ने कहा—"मार खाना बाकी रह गया है क्या?"

कवि ने कहा—"आपको कुछ नहीं बोलना है, यह मेरी शर्त है। लेकिन इस बार माल खिलवाऊंगा।"

तभी हवेली में से वही दासी निकली। कालिदास बोले—"धन्य हो! धन्य हो! भाग्य का उदय होने वाला है। जरूर कोई भाग्यवान बहन है।"

तभी सेठानी आ पहुंची। कालिदास ने उन्हें देखकर कहा—"धन्य हैं, मां! सती पार्वती जैसी भाग्यशाली देवी हैं।"

संयोग से सेठ तथा मुनीम भी वहां आ गए। उन्होंने पूछा—"क्या बात है?"

कालिदास बोल उठे—"धन्य है, श्रीमान का सूर्य बारह कला से चमक रहा है। घर में सती पार्वती जैसी सेठानी हैं।"

यह सुनकर वे सभी फूलकर गुब्बारा हो उठे।

कालिदास ने कहा—"श्रीमान सेठ तो स्वयं दाता-के-दाता दानवीर कर्ण। अच्छा अब चलते हैं। इस समय भोजन का समय हो गया है।"

सेठ बोले—"जाते कहां हैं? हवेली में भोजन करके ही जाइए।" फिर मुनीम से कहा—"मुनीम जी, इन पंडितों के लिए उत्तम भोजन की व्यवस्था करें।"

उस दिन अच्छा खाना खाकर ऊपर से वस्त्र और दक्षिणा लेकर वे दोनों लौटे।

कालिदास ने कहा—"महाराज, यही मेरा सही उत्तर था।"

राजा भोज ने पूछा—"कैसे?"

आपने कहा—"भूखा खाता है। आपने गलत कहा था। भूखे को खाना ही न मिले, तो खाएगा क्या? हमारा सही उत्तर है—खाता वही है, जो पाता है। पाने के लिए मीठा बोलना या उद्योग करना जरूरी है। भूखा होना ही काफी नहीं।"

राजा भोज कवि की बात का राज समझ गए। उन्होंने कालिदास की बुद्धि का लोहा मान लिया।

श्रीपुर के राजा सत्यदेव की मृत्यु के बाद उनका पुत्र विप्रदेव सिंहासन पर बैठा। लाड़-प्यार में पले विप्रदेव को बचपन से ही सुंदर-सुंदर बागों और महलों से लगाव था। स्वयं भी वह काफी बलिष्ठ एवं सुंदर था।

सिंहासन संभालते ही, उसने कई नए भवनों का निर्माण शुरू करा दिया। बड़े-बड़े कारीगर नित नए-नए नक्शे लेकर राजदरबार में पहुंचते। राजा जिन्हें पसंद करता, उन पर निर्माण कार्य शुरू हो जाता।

नगर के बाहर एक ऊंची पहाड़ी थी। विप्रदेव ने

# सबसे सुंदर

**—श्रीनिवास वत्स**

पहाड़ी पर अपने लिए एक भव्य महल बनवाने की सोची। बूढ़े शिल्पी हरिहर को इसका दायित्व सौंपते हुए विप्रदेव ने कहा—"मुझसे विवाह करने के लिए कई राज कन्याओं के प्रस्ताव आ चुके हैं। मैं चाहता हूं कि जिस राजकुमारी से मैं विवाह करूं, वह मुझ जैसी ही सुंदर हो। विवाह के बाद हम इस पहाड़ी पर बने महल में ही रहेंगे। तुम इसे इतना सुंदर बनाओ कि सभी वाह-वाह करें।"

हरिहर ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई और कहा—"महाराज, मैं अपनी ओर से पूरा प्रयास करूंगा।"

कुछ दिनों बाद निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया। हजारों कारीगर हरिहर की देख-रेख में दिन-रात काम करने लगे।

उधर विप्रदेव पूरे जोर-शोर से अपने राज्य को सुंदर बनाने में लग गया। खजाने का अधिकतर पैसा इस पर खर्च होने लगा। प्रजा की भलाई के दूसरे काम ठप्प हो गए। खेतों की उपजाऊ जमीन पर भवन बनने लगे, तो किसानों के लिए खेती की समस्या उठ खड़ी हुई। परंतु राजा को रोकने की हिम्मत किसी में न थी।

विप्रदेव के पास विवाह के प्रस्ताव बराबर आ रहे थे। विप्रदेव राजकुमारियों को देखता, किंतु किसी की



सुंदरता उसे न भाती। वह चाहता था कि उसकी पत्नी उससे भी सुंदर हो।

इसी बीच हरिहर ने महल को साकार रूप दे दिया। उसने पहाड़ी को सुंदर ढंग से काटकर बहुत भव्य भवन बनाया था। नीचे से देखने पर यह महल आकाश में झूलता-सा लगता था।

एक दिन हरिहर ने विप्रदेव से जाकर कहा—"महाराज, आपके विश्राम के लिए महल तैयार हो गया है।"

विप्रदेव बहुत प्रसन्न हुआ। वह दरबारियों के साथ महल देखने पहाड़ी की ओर चल पड़ा। काफी ऊंचाई पर झूलते-से भवन को देख, सब दंग रह गए। सभी के मुंह से एक साथ निकल गया—"अद्वितीय!"

विप्रदेव ने सोचा—'आसपास के किसी भी राज्य में इस महल के समान सुंदर भवन नहीं। क्यों न इसका उद्घाटन भी सबसे सुंदर स्त्री-पुरुष से कराया जाए!'

यह सोचकर वह दरबारियों सहित वापस लौट आया। राजमहल में आकर विप्रदेव ने घोषणा करवाई— 'जो भी व्यक्ति सबसे सुंदर स्त्री-पुरुष को ढूंढ़कर लाएगा, उसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएं इनाम दी जाएंगी। सबसे सुंदर स्त्री-पुरुष कौन है, इसका फैसला अगले महीने कला पारखी हरिहर करेगा।'

घोषणा सुनते ही दूर-दूर तक के लोग सुंदर स्त्री-पुरुषों की खोज में जुट गए। उन्हें जहां भी सुंदर युवक-युवती नजर आते, उनको ले राज दरबार की ओर चल पड़ते। इस तरह एक-से बढ़कर एक सुंदर नौजवान एवं नव युवतियों के साथ लोग राजधानी में



एकत्र हो गए।

अगले महीने का पहला दिन आया। राजा की सवारी आई। एक रथ में हरिहर भी था। रथ से उतरकर वह पहाड़ी के पास एक संकरे रास्ते पर खड़ा हो गया। पास ही राजा, दूसरे दरबारी तथा मंत्री भी खड़े थे। एक-एक कर सभी प्रतियोगियों को उस संकीर्ण रास्ते से गुजरना था। जो भी व्यक्ति अपने साथ सुंदर युवक-युवती को लाया था, वह हरिहर के सामने उनकी सुंदरता का बखान करता जाता। हरिहर चुपचाप सबकी बात सुनता और धीरे से गर्दन हिला देता। इधर-उधर खड़ी लोगों की भीड़ सांस रोके खड़ी थी, न जाने किस सौभाग्यशाली युवक एवं युवती को सबसे सुंदर घोषित किया जाएगा।

विप्रदेव भी सुंदर स्त्री-पुरुषों को देखकर प्रसन्न हो रहा था। उसकी नजरें भी उसी उम्मीदवार को तलाश रही थीं, जिसे हरिहर सबसे खूबसूरत घोषित करे।

अचानक भीड़ से एक बूढ़ा आदमी निकला। उसके साथ एक काला लंगड़ा आदमी और साधारण वस्त्र पहने एक प्रौढ़ महिला थी। वृद्ध ने हरिहर से कहा—"मैं समझता हूं, हमारे राज्य में यह पुरुष तथा स्त्री सबसे सुंदर हैं।"

फिर वह लंगड़े व्यक्ति की ओर इशारा करके बोला—"यह लंगड़ा अपने अंधे माता-पिता के साथ गांव में रहता है। मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार का पेट पालता है। लंगड़ा होकर भी ईमानदारी से जो कमाता है, उसमें से भी कुछ पैसा गरीबों को दान में दे देता है। खाली समय में मां-बाप की सेवा करता है। जिसको जो वचन दे देता है, उसे हर कीमत पर पूरा करता है।"

हरिहर ने स्त्री का परिचय पूछा, तो बूढ़ा बोला—"यह एक धनी पिता की बेटी, धनी सेठ की पत्नी है। इसके पति का व्यापार काफी दूर तक फैला हुआ था। एक दिन, इसके पति का आधा शरीर निष्क्रिय हो गया। तबसे वह बिस्तर पर ही पड़े रहते हैं। उनके शरीर पर छाले हो गए हैं। बदबू भी आने लगी है। यह महिला बिना किसी संकोच के सुबह से शाम तक अपने पति की सेवा करती रहती है। चाहती तो, नौकरों से भी काम करवा सकती थी। परंतु पति सेवा के सुख को यह गंवाना नहीं चाहती। पूरे गांव में इस पतिव्रता औरत को लोग देवी के समान मानते हैं।"

यह सुनकर हरिहर की आंखें चमक उठीं। वह विप्रदेव से बोला—"महाराज, मैं समझता हूं कि भव्य महल का उद्घाटन इन्हीं से करवाना चाहिए। किसी की सुंदरता उसकी शक्ल-सूरत से नहीं, उसके कर्त्तव्य एवं वचनों से मानी जाती है। जो व्यक्ति अपने वचन और काम का पक्का होता है, सचमुच में वहीं सुंदर होता है।"

हरिहर की बात सुन, भीड़ में सन्नाटा छा गया। राजा विप्रदेव गम्भीर हो गए। सोचने लगे—'हरिहर ठीक कहता है। अभी तक मैं मात्र शरीर की सुंदरता को ही असली सुंदरता मानता रहा। प्रजा की भलाई के लिए कोई काम नहीं किया। सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए सुंदर महल बनवाता रहा। सुंदर पत्नी की तलाश में भटकता रहा।' सोचते-सोचते अचानक उसका चेहरा खिल उठा। लगा, जैसे उसे कोई अद्भुत ज्ञान मिल गया।

विप्रदेव ने घोषणा की— 'वास्तव में हरिहर जी ने सही कहा है। इस महल का उद्घाटन ये ही स्त्री-पुरुष करेंगे। कल से मैं इन महलों में स्वयं नहीं रहूंगा, ये सब आम लोगों के लिए खुल जाएंगे।'

लोग राजा विप्रदेव एवं शिल्पी हरिहर की जयजयकार कर उठे। फिर शीघ्र ही हरिहर की सलाह से विप्रदेव ने एक योग्य एवं सुशील कन्या से विवाह कर लिया। ●

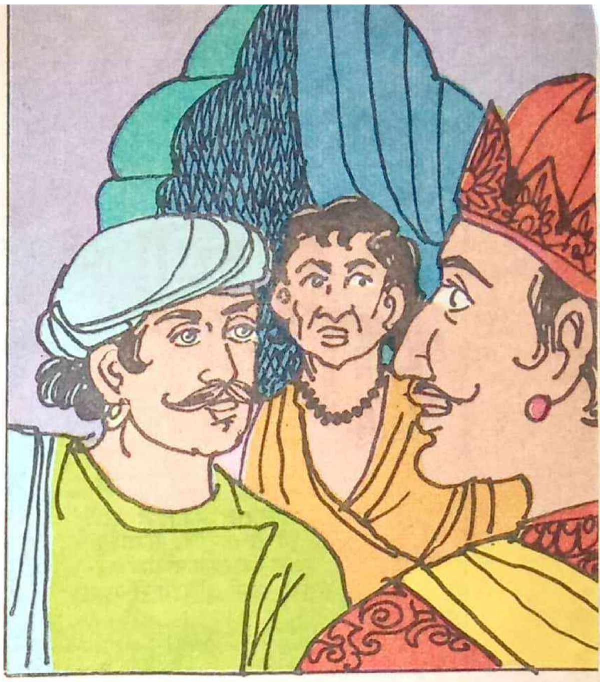



- अध्यापक—चार फलों के नाम बताओ ।
  छात्र—दो सेब, दो केले ।
- एक गप्पी—कल मेरे धक्के से कुतुबमीनार गिर गई होती ।
  दूसरा गप्पी—गिरती कैसे ?मैंने पकड़ जो रखी थी ।
- रामू—एक आदमी कुएं में गिरा और जान से हाथ धो बैठा ।
  श्यामू—अरे, जब गिर ही गया था, तो उसे पानी से ही हाथ धोने चाहिए थे ।
- पिता—आज आंखें खोलकर क्यों सोओगे ?
  बच्चा—देखूंगा, सपने कहां से आते हैं ?
- मां—भला मैं तुम्हारे साथ क्या खेल सकती हूं ?
  बच्चा—क्यों नहीं, हम चिड़िया घर वाले बंदर बन जाते हैं । तुम हमें छील-छीलकर मूंगफली खिलाओ ।
- पिंकी—बिना हाथ-पैरों के कौन-सी चीज फर्श पर भाग सकती है ?
  टिंकी—पानी ।
- वीनू—मैं इस पेड़ से ऊंची छलांग लगा सकता हूं ।
  टीनू—क्यों नहीं, पेड़ तो बेचारा अपनी जगह से हिल तक नहीं सकता ।
- मालिक (गुस्से से) झूठ बोलने वाले कर्मचारियों के साथ क्या सलूक करना चाहिए ?
  कर्मचारी—उसे तुरंत सेल्समैन बना देना चाहिए ।
- पप्पू—तुम कह रहे हो, यह अकबर के जमाने का दुर्लभ टेलीफोन है । मगर तब टेलीफोन का आविष्कार कहां हुआ था ?
  गप्पू—इसीलिए तो दुर्लभ है ।
- बाबू जी—दीवार पर प्लास्टर करवा रहा हूं ।
  ताऊ जी—क्यों, क्या उसकी हड्डी टूट गई है ?
- अनिल—मोटर साइकिल के कितने पहिए होते हैं ?
  सुनील—छह । चार मोटर के, दो साइकिल के ।
- गीता—वह दिन दूर नहीं, जब रात में सारी चोरियां बंद हो जाएंगी ।
  सीता—हां, तब बेचारे चोर दिन में अपना काम पूरा करके रात को हमारी तरह सो सकेंगे ।
- एक मित्र—तुमने कहां मोहर लगाई ?
  दूसरा मित्र—घोड़े पर । यकीन न हो तो देख लो, वह खड़ा है ।
- मैनेजर—अभी तो आप होटल के अंदर तक नहीं घुसे । फिर भी कह रहे हैं कि यहां बहुत सफाई है ।
  ग्राहक—देखते नहीं, दरवाजे तक ही पहुंचा था कि किसी ने जेब साफ कर दी ।
- विमल—महंगाई आसमान छू रही है ।
  कमल—चलो,उसी पर चढ़कर आसमान की सैर कर आते हैं ।
- जज—तुमने सारे बुरे काम ही किए हैं या कभी अच्छे काम के बारे में भी सोचा है ?
  चोर—जी, हम न होते, तो भला इतने बड़े पुलिस विभाग की रोजी-रोटी कैसे चलती ?
- मुन्नू—किसी भी खाली स्थान को भरने के लिए बुद्धि की जरूरत होती है ।
  टुन्नू—तो लगाओ बुद्धि, मेरी यह जेब खाली है ।



# तेनालीराम २६३

## वसंत उत्सव

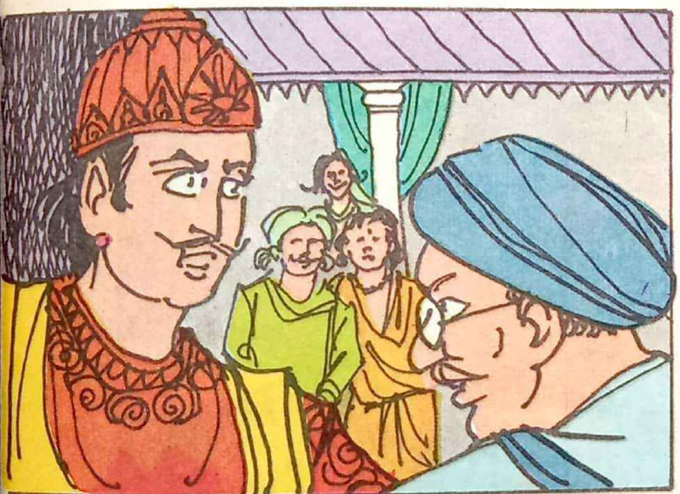


विजय नगर में हर वर्ष वसंत उत्सव मनाया जाता था। राजा कृष्णदेव राय ने राज दरबार में कहा—"मैं चाहता हूं, इस बार वसंत उत्सव कुछ नए ढंग से मनाया जाए। आप लोग इस बारे में सुझाव दीजिए।"

मंत्री तो इसी ताक में था ही। बोला—"आप आदेश दें, तो एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन हो। केवल एक लाख स्वर्ण मुद्राओं में सारा प्रबंध हो जाएगा।"

पुरोहित बोला—"महाराज, वसंत उत्सव में प्रजा के कल्याण के लिए एक महायज्ञ होना चाहिए।"

सेनापति बोला—"महाराज, शत्रुओं की गतिविधियां बढ़ रही हैं। सबसे अधिक जरूरी है शक्ति प्रदर्शन। इस दिन राजपथ पर सेना की भव्य परेड निकलनी चाहिए।"



अन्य सभासदों ने भी अपने-अपने सुझाव दिए। तभी तेनालीराम वहां आ गया।

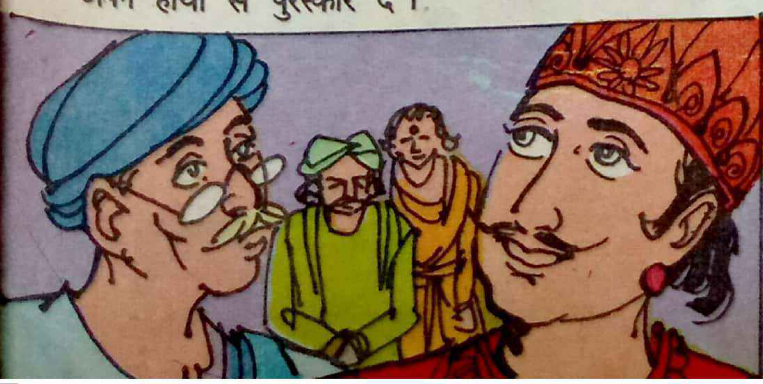
राजा कृष्णदेव राय ने संक्षेप में मंत्री, सेनापति और पुरोहित के सुझाव बताए। फिर कहा—"तुम्हारी क्या राय है तेनालीराम ?"

तेनालीराम बोला—"महाराज, सेनापति और पुरोहित जी ठीक ही कह रहे हैं। हां, यह अवश्य है कि वसंत पर ये तीनों ही कार्यक्रम एक साथ हों— यानी रंगारंग कार्यक्रम भी हो, यज्ञ भी और शक्ति प्रदर्शन भी।"

राजा चौंके—"मगर यह कैसे हो सकता है तेनालीराम ?"



तेनालीराम बोला—"हो सकता है महाराज ! आप इन कार्यक्रमों में प्रजा को शामिल कीजिए। धन भी अधिक खर्च नहीं होगा। प्रजा को आनंद भी अधिक मिलेगा। पहले स्कूलों के बच्चे रंग-बिरंगे फूलों के मुकुट पहनकर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करें। फिर राज्य के युवक आकर शस्त्र-कौशल और शक्ति का प्रदर्शन करें। साथ ही यह आदेश जारी कर दें कि उस दिन राज्य की भलाई के लिए सभी मंदिरों में वेदपाठ और हवन हो। प्रजा उसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा ले। कार्यक्रम के बाद आप सर्वश्रेष्ठ बच्चों, युवकों को अपने हाथों से पुरस्कार दें।"



सुनकर राजा के चेहरे पर मुसकान आ गई। बोले—"तेनालीराम, यह तो अच्छा सुझाव है। क्यों न हर वर्ष इसी तरह वसंत उत्सव मनाया जाए।"

मंत्री, सेनापति और पुरोहित के चेहरे लटक गए, क्योंकि आता हुआ धन, उनके हाथ से खिसक गया था।

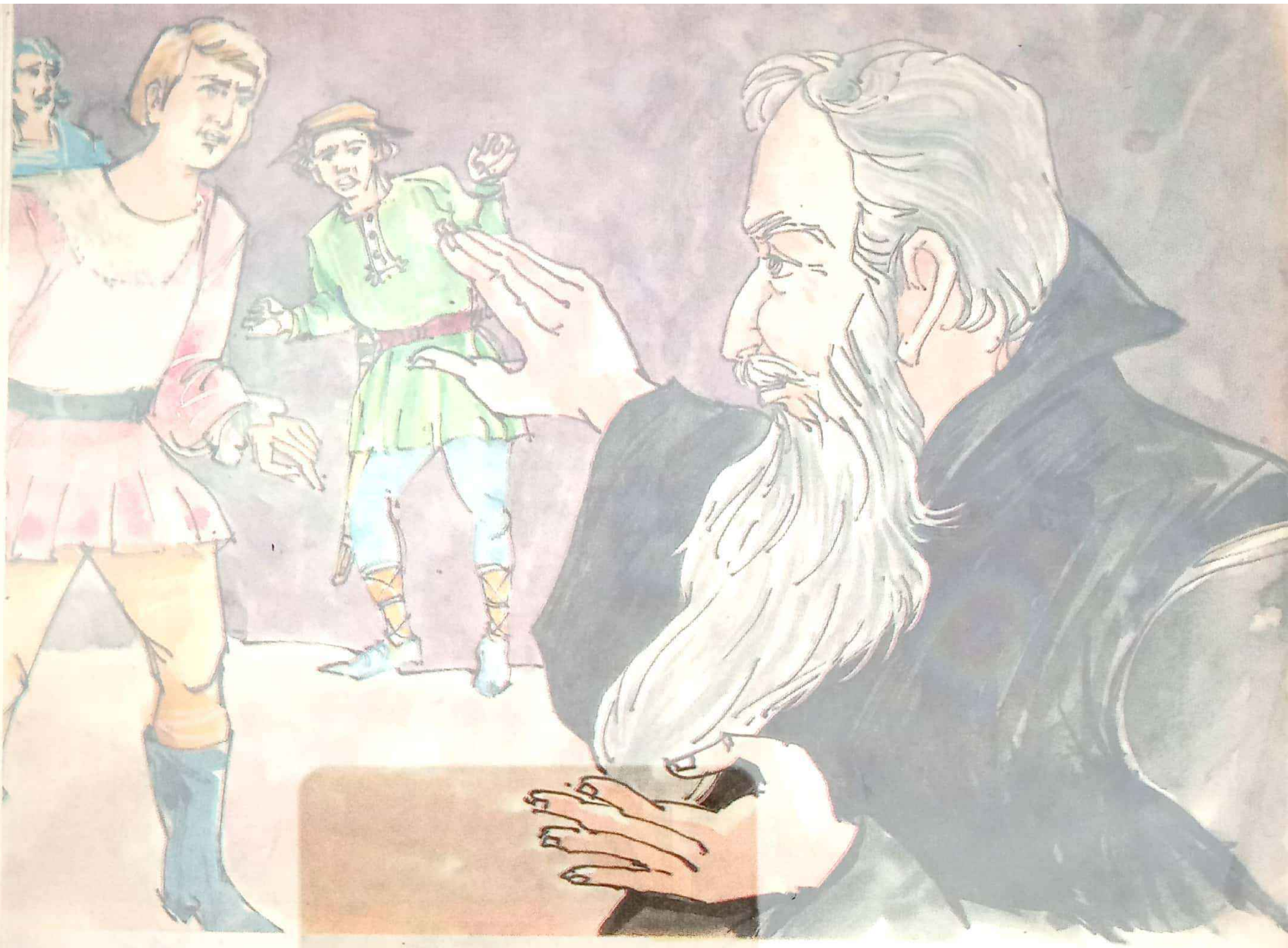



पर्यटन विभाग भारत सरकार




Department of Tourism Government of India

HTA-6510 HIN



# लाल धरती का किला

—सुनीता कट्टी

एरिन के साधारण कुल में जन्मा था चुचुलेन, पर उसकी महत्वाकांक्षा असाधारण थी। वह चाहता था दुनिया का सबसे श्रेष्ठ, अजेय योद्धा बने। कद-काठी से सुदृढ़ और असाधारण बल वाला चुचुलेन दीखता भी योद्धा समान था।

उसका भाग्य भी अच्छा ही था, क्योंकि बचपन से ही उसे ऐसे गुरु मिले थे, जो कुल परम्परा से अधिक हिम्मत और लगन को महत्व देते थे। कई गुरुओं के पास जाकर उसने युद्ध कला के विभिन्न अंगों में प्रवीणता प्राप्त की। सबसे अच्छी बात थी कि सुख-दुःख में साथ देने वाले दो अभिन्न मित्र भी थे उसके। एक था—सेनापति का बेटा कोनोल और दूसरा राजा का बेटा कोनार।

शिक्षा की समाप्ति पर गुरुओं ने शिष्यों को कसौटी पर आंका। बहुत बड़े पैमाने पर युद्ध-कला की स्पर्धाएं आयोजित कीं। इनमें धनुर्विद्या, रथदौड़, तलवारबाजी, भाला फेंक आदि थीं। चुचुलेन ने सभी स्पर्धाओं में हिस्सा लिया। वह सभी में सर्वश्रेष्ठ रहा। उसी दिन से वह एरिन का भी सर्वश्रेष्ठ वीर बन गया। दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसका अभिनंदन किया। राजा ने उसे सर्वश्रेष्ठ वीर का खिताब दिया। उसके मित्रों ने उसे कंधों पर उठाकर उसका जय जयकार किया। इसी हर्षोल्लास के बीच एक पागल-सा आदमी तेजी से उसकी तरफ आया। वह बोला—''बड़ा वीर बना फिरता है। जरा अंधेरा वन की वीर डोनोला द सोल्‌जरी से भिड़ जाओ, तो पता चले।''

''डोनोला द सोल्‌जरी! कहां है वह? जरा बताओ तो?''—चुचुलेन ने तमककर पूछा।

"वाह, मैं क्यों बताऊं ?"—कहकर वह ठठाकर हंसने लगा। अब चुचुलेन आ गया ताव में। उस आदमी की गर्दन पकड़ उसे झकझोरने लगा। ऐसा लगा, उसे मार ही डालेगा। इतने में कहीं से एक साधु आ गया। चुचुलेन को रोकते हुए बोला—"क्यों सताते हो बेचारे को ? नहीं जानता होगा उसका पता।"

"नहीं जानता, तो क्या आप जानते हैं ? अगर जानते हैं, तो बताइए मुझे। मुझे दुनिया का सबसे बड़ा वीर बनना है। मैं जाऊंगा अंधेरा वन में। लड़ूंगा डोनोला द सोल्ज़री से।"

"तुम क्या लड़ोगे उससे ? वह तो दुनिया की श्रेष्ठ स्त्री योद्धा है। उसके पास तुम्हें सिखाने लायक अभी कई बातें होंगी। अंधेरा वन कहां है, यह मैं भी नहीं जानता। पर कोई बात नहीं। अपनी जपमाला दे देता हूं तुम्हें। शायद वही तुम्हारी कोई मदद कर सके।"—कहते हुए साधु ने जप की माला चुचुलेन को दे दी। तभी आसमान से एक बड़ी-सी नाव उस मैदान में आकर उतरी।

"इस नाव में बैठ जाओ। यह तुम्हें अंधेरा वन ले जाएगी।"—साधु ने कहा। भोर की बेला में तीनों ही मित्र नाव पर सवार हुए। बिना चप्पुओं और मल्लाहों के नाव तेजी से पानी पर सरकने लगी। दो दिन और दो रात नाव चलती रही। तीसरे दिन जा लगी एक घने जंगल के किनारे।

वे इधर-उधर देखने लगे। तभी एक चुनौती भरी भयंकर ललकार सुनाई दी। वन की भूमि को रौंदती चली आ रही थीं—विकट वीर डोनोला द सोल्ज़री और उसकी बेटी कडमुष्टि। काले-गठीले, तगड़े शरीर, मोटी-मोटी आंखें और रस्से-से कड़े रूखे लाल केश! उन्हें देखते ही तीनों के दिल दहल गए। मां-बेटी पहले उन्हें देखकर नाराज हुईं। बाद में उनके मुंह से अपनी तारीफ सुन, थोड़ी पिघल गईं। उन्हें युद्ध कला सिखाने के लिए मान गईं।

दूसरे ही दिन से चुचुलेन और उसके मित्रों की शिक्षा शुरू हो गई। डोनोला तलवारबाजी और धनुर्विद्या में माहिर थी और कडमुष्टि मुष्टियुद्ध में। एक साल तक चुचुलेन, कोनोल और कोनार उनसे लड़ाई के नए गुर सीखते रहे।

उस शाम चुचुलेन अकेला ही समुद्र तट पर घूमने निकला। वह उदास था। अंधेरा वन में रहते-रहते वह ऊब गया था। सोच रहा था, किसी तरह वहां से निकल भागे। तभी समुद्र तट की एक चट्टान पर उसे एक दानव दीख पड़ा। सिर से पैर तक कोयले की तरह काला। माथे पर दोनों ओर दो नुकीले सींग। उसे देख, चुचुलेन चौंक गया। तभी दानव गरज पड़ा—"क्यों रे, कौन है तू ? यहां क्या कर रहा है ?"

"मैं! मैं हूं चुचुलेन। महान योद्धा डोनोला और कडमुष्टि से युद्ध कला सीखने आया हूं।"—बिना पलक झपकाए, चुचुलेन ने निडरता से उत्तर दिया।

—"क्या कहा ? डोनोला और कडमुष्टि महान योद्धा हैं! तूने अभी तक लाल धरती की राजकुमारी स्कंथ का नाम नहीं सुना। तभी डोनोला और उसकी बेटी को महान योद्धा कह रहा है। स्कंथ के सामने उनकी क्या बिसात ?"

"डोनोला से अधिक वीर है स्कंथ ? मैं उसके पास भी जाऊंगा। उससे भी युद्ध कला सीखूंगा।"

—चुचुलेन का यह कहना था कि वह विराट काला दानव कहीं छूमंतर हो गया।

चुचुलेन समुद्र तट से लौटा तो सही, पर उसके मन में उस महाकाय दानव की बातें चक्कर काट रही थीं। स्कंथ की बात उसने अपने मित्रों से भी कही। पर उसके मित्रों को अब अपना घर याद आ रहा था। उन्होंने चुचुलेन के साथ अनजान लाल धरती की यात्रा पर जाने से साफ इंकार कर दिया।

एक ठंडी आह लेकर चुचुलेन मुड़ा। संकटों भरी अनजान राह पर चल पड़ा। ऊंचे पर्वतों पर,



घने जंगलों में, गहरे-संकरे दर्रों में। कई दिन, कई रात वह चलता रहा। बिना थके, बिना रुके। आखिर पहुंचा एक बहुत बड़े रेगिस्तान में।

रेगिस्तान में दूर-दूर तक सफेद-भूरी रेत ही रेत फैली थी। न कहीं कोई राह थी। न आदमी का नाम-निशान। अब जाए तो कहां और कैसे ? दुखते पांवों को दबाता चुचुलेन एक जगह बैठा, यही सोच रहा था। तभी उसने देखा, एक शेर उसी की तरफ बढ़ता चला आ रहा है। शेर से बचने के लिए चुचुलेन ने इधर-उधर भागना शुरू किया। पर देखता क्या है, वह जिस ओर भी भागता, शेर पहले ही वहां पहुंच जाता है। आश्चर्य की बात यह भी थी कि शेर चुचुलेन पर हमला नहीं कर रहा था। वह इशारे से उसे अपनी पीठ पर सवार होने को कह रहा था। चुचुलेन मन की सारी शक्ति को जुटा, दम साधकर शेर की पीठ पर जा बैठा। चार दिन, चार रातें बीतीं। चौथे दिन शेर उसे एक दलदल के पास ले आया। शेर की पीठ से उतर, चुचुलेन उस दलदल में घुसा और उसमें धंसता ही चला गया।

"लौट आ चुचुलेन। स्कंथ के पास जाने का यह पागलपन छोड़।"—शेर मनुष्य की आवाज में बोला।

पर चुचुलेन कहां मानने वाला था! दलदल से ऊपर उठने की कोशिश करते हुए चिल्लाया—"नहीं, लौटने का तो सवाल ही नहीं। स्कंथ के पास जाने की चेष्टा मैं आखिरी दम तक करता रहूंगा।"

"चुचुलेन, तू सच्चा वीर है। अपनी धुन का पक्का है। ऐसे बहादुर सैनिक की मदद करना मेरा फर्ज है। ले, यह चक्का पकड़।"—कहते हुए शेर ने उसकी तरफ एक चमकदार चक्र फेंका। चुचुलेन के हाथ में आते ही वह चक्र घूमने लगा। किरणों की चिंगारियां फेंकने लगा। चक्र से फूटती किरणों की गर्मी से दलदल का पानी सूख गया। दलदल की जगह सूखी, ठोस जमीन नजर आने लगी। चुचुलेन अब उस पर चल सकता था। थका-हारा चुचुलेन आगे बढ़ता गया। कुछ दूर सामने था हरियाली का सागर, आसमान को छूता हुआ। उस पर चलना असम्भव ही था। तब चुचुलेन को शेर की फेंकी दूसरी चीज याद आई। हाथ में पकड़े सेब को उसने यूं घुमाकर हरियाली पर फेंका कि वह घास को काटता चक्के-सा चलता रहा। चुचुलेन के लिए रास्ता बनाता रहा। उस घनी हरियाली में छिपे थे खूंखार जानवर बाघ, चीते, शेर। चुचुलेन ने हिम्मत से सबका मुकाबला किया। हरे मैदान से बाहर आते ही उसे दिखाई दीं उफनती बरसाती नदी। नदी पर एक बड़ा-सा पुल बना था। पुल की दूसरी ओर था एक मजबूत सुंदर किला। इतनी दूरी से भी किले की दीवारों पर लिखी लिखाई स्पष्ट दिखाई दे रही थी—लाल धरती पर स्कंथ योद्धा का किला।

अब मंजिल दूर नहीं थी। पर उफनती नदी पर बने पुल को पार करना आसान नहीं था। नदी का गरजता पानी और पानी के ऊपर उछलते मगरमच्छ, बड़ी-बड़ी शार्क मछलियां। चुचुलेन का दिमाग भी एक बार चकराया। दूसरे ही क्षण हिम्मत बांध, वह पुल पर कूदा। झूलते, नदी के प्रवाह की तरफ झुकते पुल को वह बेधड़क पार कर गया।

चुचुलेन नदी के दूसरे किनारे पहुंचा। स्कंथ के किले के दरवाजे अपने-आप खुल गए। अपनी बहादुर बेटी के साथ उसका स्वागत कर रही थी स्कंथ। चुचुलेन की पीठ थपथपाकर वह बोली—"शाबाश, बेटे ! मुझे ऐसे ही बहादुर और धुन के पक्के योद्धा का इंतजार था। तुम्हारे लिए मैंने अपने दांव-पेंच, रणनीति संभालकर रखी है। आओ, तुम्हें अपनी विशेष रणनीतियों से परिचित करा दूं।"

कुछ ही महीनों में चुचुलेन स्कंथ की रणनीतियों में पारंगत हो गया।

एक साल, चार महीने बाद चुचुलेन एरिन लौटा, तो राजा ने उसका स्वागत किया। अब वह सिर्फ एरिन का ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का सर्वश्रेष्ठ वीर था। उसके साथ गर्व से चल रही थी उसकी पत्नी, स्कंथ की बेटी एवरशाइन। वह भी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ योद्धा थी।

# १००० रु. पुरस्कार
## कोई शुल्क नहीं

## नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

## संकेत

**बाएं से दाएं**

१. उसने देवकी को———था, पर वह कुछ न बोली। (रोका/टोका)

२. इस तरह———हुए जाना, क्या ठीक है? (खाते/गाते)

३. यह तो अपने आप———गया है। (उग/लग)

४. रह-रहकर———की आवाज सुनाई देती। (टन/खन)

५. हां, यह———मेरा ही है। (नोट/कोट)

६. जी हां, यही एक———पाया है। (बन/बच)

७. यही कारण था, उनके———जाने का। (हार/पार)

१०. ——तो, सारा तुम्हें ही दिलवा दूं। (चाहो/कहो)

११. पता नहीं, उसे क्यों———रहा है। (भेज/खोज)

१२. प्राचीन यूनान की देवी

**ऊपर से नीचे**

८. भई, अब मैं———चाहता हूं। (जाना/सोना)

९. एक खेल, जिसे आजकल केवल सेना में खेला जाता है।

-----------------------------------काटिए-----

## 'नंदन' ज्ञान-पहेली : २५५

नाम ____________________

आयु ______ पता ____________________

____________________




नं. ज्ञा. प. २५५

# छह बंदूकें

—श्लोककुमार सिंह

आस्ट्रिया और फ्रांस में युद्ध ठना था। लाटूर फ्रांस की सेना का एक सैनिक था। एक दिन उसे खबर मिली— आस्ट्रिया की सैनिक टुकड़ी फ्रांस के एक पहाड़ी किले को जीतने के लिए बढ़ी चली आ रही है। लाटूर ने सोचा— 'मैं आस्ट्रियाई सैनिकों के पहुंचने से पहले यदि किले के अपने साथियों को होशियार कर दूं, तो वे शत्रु का डटकर मुकाबला कर सकेंगे। उसके बाद मैं प्रधान सेनापति को इसकी खबर कर दूंगा, ताकि वह समय पर आवश्यक सैनिक सहायता पहुंचा सकें।'

थका-हारा लाटूर उस किले तक पहुंच गया। वहां पहुंचकर उसने देखा, किले का फाटक खुला पड़ा है। वहां एक भी सैनिक नहीं है। कहीं लड़ाई के भी संकेत नहीं थे, जिनसे मालूम होता कि किले के रक्षक मारे गए। लाटूर को समझते देर न लगी कि किले में शत्रु के आने की सूचना पहले से ही पहुंच गई होगी। आक्रमण से डरकर ही सैनिक भाग गए होंगे। वे लोग इतनी हड़बड़ी में भागे थे कि जल्दी में अपनी बंदूकें भी नहीं ले गए थे। अब ज्यादा सोचने का समय नहीं था। किसी भी क्षण शत्रु का हमला हो सकता था। लाटूर ने अकेले ही शत्रु का मुकाबला करने का निश्चय कर लिया। उसने सब बंदूकें इकट्ठी कीं। उनमें गोलियां भर-भरकर उन्हें किले की दीवारों के सूराखों में लगा दिया।

दुश्मन ने रात के अंधेरे में अचानक किले पर हमला करने की योजना बनाई थी। रात्रि में ज्योंही शत्रु किले के पास आया, किले से कई धड़ाके हुए। आस्ट्रिया के सेनानायक ने जान लिया कि किले के रक्षक पूरी तरह सावधान हैं, इसलिए उसने अपनी सेना को पीछे हटने का आदेश दे दिया।

सुबह होने पर सेना नायक ने व्यूह रचकर किले पर हमला किया। तभी किले से आती हुई गोलियों ने उसका स्वागत किया। गोली कभी एक झरोखे से आती, तो कभी दूर दूसरे झरोखे से। इससे आस्ट्रियाई सेना के कई सैनिक मारे गए। पूरे दिन लड़ाई जारी रही। मगर आस्ट्रिया के सैनिक किले में नहीं पहुंच पाए। दिनभर किले से गोलियों का चलना बंद नहीं हुआ। लाटूर कभी एक बंदूक से गोली छोड़ता। फिर भागकर दूसरी बंदूक से गोलियां छोड़ने लग जाता।

लाटूर रात भर जागता रहा था। फिर सारा दिन अकेला ही लड़ता भी रहा था। वह थककर चूर हो गया था। उसने सोचा— 'यदि अगले दिन भी लड़ना पड़ा, तो मैं किले की रक्षा नही कर सकूंगा।' किसी तरह की मदद की कोई उम्मीद नहीं थी। इसलिए दूसरे दिन सुबह होते ही उसने किले पर समझौते का झंडा फहरा दिया। किले की प्राचीर से पुकारकर आस्ट्रिया के सेनानायक से कहा— "किले के रक्षकों ने वचन दिया है, यदि आप उन्हें फ्रांस के झंडे के साथ सुरक्षित निकल जाने दें, तो वे किला आपको सौंप देंगे।"

लाटूर का यह प्रस्ताव आस्ट्रिया के सेना नायक ने मान लिया। सैनिक किले के द्वार के बाहर दो पांतों में खड़े हो गए। उनके बीच से होकर केवल एक ही सैनिक, एक बार में बाहर निकल सकता था।

आखिर किले का फाटक खुला। सबकी नजरें उत्सुकता से किले के फाटक पर लगी थीं। द्वार खुला। लाटूर एक हाथ में फ्रांस का झंडा लिए और कंधे पर छह बंदूकें रखे, किले के फाटक से बाहर निकला। केवल एक ही सैनिक को किले में से निकलते देख, आस्ट्रियाई सेना नायक के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने पूछा—"और सैनिक कहां हैं?"

लाटूर हंसा और बोला— "किले में और कोई सैनिक नहीं है। मैं अकेला ही वह पूरी सेना हूं, जो कल से आपसे लड़ रही है।"

लाटूर के इस अद्‌भुत साहस और वीरता को देखकर आस्ट्रियाई सेना नायक चकित रह गया। वह बोला— "यदि मेरी सेना में तुम्हारे जैसे सौ सैनिक भी होते, तो यह छोटा-सा किला क्या, मैं पूरे फ्रांस को जीत सकता था।"

# टिक - टिक - टिक

—प्रमोद जोशी

राजा यशवर्मा प्रतापी राजा थे। उनके राज्य में चारों तरफ खुशहाली थी। प्रजा राजा की वीरता और बुद्धिमत्ता से बेहद प्रसन्न थी। मगर इस प्रजा में एक शैतान भी रहता था। नाम भी उसका शैतानसिंह था।

शैतानसिंह सदा दूसरों को परेशान करने की युक्ति सोचता था। वह नित योजनाएं बनाता और जनता को दुखी किया करता था। कभी वह नहरों के किनारे तोड़कर गांवों की फसलों को बरबाद करता, तो कभी खड़ी फसल को चुपचाप आग लगा देता था। यह सब करने का उसका एक ही उद्देश्य था— किसी तरह वहां की प्रजा खूब परेशान हो जाए। प्रजा परेशान होगी, तो राजा का नाक भी नीची हो जाएगी। परंतु राजा यशवर्मा शैतानसिंह की इन हरकतों को अधिक महत्व नहीं देते थे। वह जानते थे कि शैतानसिंह के कार्य कलाप एक न एक दिन खुद उसको ही मुसीबत में डाल देंगे।

एक बार शैतानसिंह ने राजा का वेश बनाया। मुंह पर उदासी की छाप लिए, वह जंगल में एक पहुंचे हुए महात्मा की शरण में जा पहुंचा। उसे देखकर महात्मा जी मुसकराए। बोले— "कहो, राजन! बहुत परेशान दिख रहे हो? क्या बात है?"

शैतानसिंह ने जवाब दिया— "क्या बताऊं महाराज, मेरे राज्य में पिछले पांच साल से वर्षा नहीं हुई। सूखे के कारण चारों तरफ अकाल पड़ गया है। प्रजा भूखों मर रही है। मेरी समझ में नहीं आ रहा, मैं क्या करूं? अब अंत में थक-हारकर, आपकी शरण में आया हूं।"

"लेकिन मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं राजन?"— महात्मा जी ने प्रश्न किया।

"आप सब कुछ कर सकते हैं महाराज।"—शैतानसिंह हाथ जोड़कर बोला— "मैं आपकी शरण में हूं। मुझे अपने राज-पाट की नहीं, अपनी प्रजा की अधिक चिंता है। आप अपनी कृपा से



कुछ ऐसा उपाय कीजिए, जिससे मैं जब चाहूं, अपने राज्य में बारिश करा सकूं। जब चाहूं, उसे रोक सकूं।"

यह सुनकर महात्मा पुनः मुसकराए। फिर बोले—"ठीक है राजन, मैं तुम्हारी प्रजा वत्सलता से बेहद प्रसन्न हूं। राज्य में पड़े अकाल के कारण मैं तुम्हें यह वरदान देता हूं, जब भी तुम इंद्र देवता का नाम लेकर जोर से 'टिक-टिक-टिक' कहोगे, इंद्र देवता प्रसन्न होकर, बारिश कर देंगे। जब भी तुम या कोई और उस बारिश को देखकर 'वाह भई वाह' कहेगा, तो बारिश तुरंत रुक जाएगी। लेकिन याद रखना, यह वरदान केवल दो बार ही काम आ सकता है।"

इतना सुनकर शैतानसिंह गद्गद् हो गया। उसने झुककर महात्मा जी को प्रणाम किया। उनको धन्यवाद दिया। उनको धन्यवाद देने के बाद, राजा यशवर्मा के राज्य की ओर चल पड़ा।

रास्ते में शैतानसिंह के मन में शंका हुई, कहीं

महात्मा ने उसे बेवकूफ ही न बनाया हो । क्यों न उस वरदान को एक बार परख ही लिया जाए । यह विचार आते ही, उसने मन ही मन इंद्र देवता को याद किया । बोला—"टिक-टिक-टिक ।" उसके इतना कहने की देर थी कि इंद्र देवता तुरंत प्रसन्न हो गए । देखते ही देखते आसमान में काले-काले बादल घिर आए । थोड़ी ही देर में धुआंधार बरसात होने लगी । यह देखकर शैतानसिंह की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही । थोड़ी देर बाद उसने जब 'वाह भई वाह' कहा, तो बारिश तुरंत ही रुक गई । सारे बादल पल भर में न जाने कहां गायब हो गई ?

यह तमाशा देखकर शैतानसिंह के चेहरे पर कुटिल मुसकान घिर आई । उसने निश्चय किया, वह राजा यशवर्मा के राज्य में ऐसी धुआंधार बारिश कराएगा कि चारों ओर हा-हाकार मच जाए । उसने यह भी सोच लिया कि जब तक राजा यशवर्मा का सारा राज्य पानी में न डूब जाए, वह बारिश को रोकने का नाम नहीं लेगा ।

कुछ ही देर में शैतानसिंह राजा यशवर्मा के राज्य में जा पहुंचा । वहां पहुंचकर उसने पहले अपना वेष बदला । फिर राजा के महल के सामने जा खड़ा हुआ । पहले उसने मन ही मन इंद्र देवता को याद किया । फिर आसमान की ओर मुंह करके जोर से चिल्लाया—"टिक-टिक-टिक ।" देखते ही देखते आसमान में फिर से काले-काले बादल घिर आए । थोड़ी देर में गड़-गड़ करती मूसलाधार बरसात होने लगी । यह सब देखकर शैतानसिंह फूला न समाया ।

उस समय राजा यशवर्मा अपने शयनकक्ष में विश्राम कर रहे थे । बादलों की गड़गड़ाहट व बारिश की झमझम सुनकर वह अपने **कमरे** से बाहर निकल आए । चारों तरफ अचानक शुरू हुई धुआंधार बरसात देखकर चकित हो गए राजा यशवर्मा । उनके मुंह से अनायास ही निकला— 'वाह भई वाह !' बस, राजा के इतना कहने की देरी थी कि बारिश तुरंत रुक गई ।

अचानक रुकी बारिश को देखकर राजा हैरान रह गए । शैतानसिंह इतना परेशान हुआ कि उसे काटो तो खून नहीं । उसकी समझ में नहीं आया, अचानक यह क्या हो गया । सोचने लगा— 'अभी बादल थे, अभी गायब हो गए ।' वह कुछ देर असमंजस की स्थिति में खड़ा रहा । फिर अचानक ही आसमान की तरफ मुंह करके जोर-जोर से प्रलाप करने लगा— 'टिक-टिक-टिक ! टिक-टिक-टिक !' पर बारिश तो अब न आ सकती थी, न आई । मारे विवशता के उसकी आंखों में आंसू आ गए । राजा ने सोचा— 'यह आदमी जरूर पागल है, जो इस तरह आकाश की ओर मुंह उठाकर चिल्ला रहा है ।' उन्होंने सिपाहियों को भेजकर उसे बुलवाया । पूछा तो, सारी बात पता चली । सुनकर राजा क्रोध में भर उठे । शैतानसिंह का नाम वह सुन चुके थे । आज की शैतानी देखकर सोचने लगे— 'यह देशद्रोही है ।' बस, राजा ने उसे कारागार में डाल दिया । ●



# थाली किसकी

मंदिर के आंगन में पुजारी को सोने की थाली पड़ी मिली। उसे पाकर पुजारी बहुत प्रसन्न हुआ। सोचने लगा—'भगवान ने मेरी सेवा से प्रसन्न होकर यह उपहार भेजा है।' पुजारी थाली को उठाने के लिए झुका। उसने देखा, थाली पर लिखा है—'यह उपहार उसके लिए है, जो निःस्वार्थ सेवा करता है। कोई दूसरा थाली उठाएगा, तो यह तुरंत पीतल की हो जाएगी।'

पुजारी ने थाली उठा ली। पर यह क्या! वह तुरंत पीतल की हो गई। मगर जैसे ही पुजारी ने थाली जमीन पर रखी, फिर से सोने की हो गई। पुजारी आश्चर्य चकित था। धीरे-धीरे उस थाली की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। बहुत-से साधु-संन्यासी, दानी और स्वयं को परोपकारी कहने वाले वहां आए, मगर उन सभी के हाथ में आते ही सोने की थाली, पीतल की बन जाती।

एक ऐसा आदमी भी वहां आया, जिसने अपनी सारी धन-दौलत गरीबों में बांट दी थी। मंदिर, धर्मशालाएं और कई स्कूल भी थे उसके। उसने बड़े गर्व के साथ थाली उठाई। मगर वह थाली तुरंत पीतल की हो गई।

एक दिन एक किसान मंदिर में दर्शनों के लिए आया। उसने थाली के बारे में कुछ नहीं सुना था। मंदिर के बाहर एक अंधा भिखारी भूखा-प्यासा चिलचिलाती धूप में बैठा था। किसान को भिखारी पर दया आ गई। उसने भिखारी को सहारा देकर छांव में बैठाया। किसान घर से साथ खाना लेकर चला था। उसने भिखारी को खाना भी खिलाया। इसके बाद मंदिर में दर्शन कर, चुपचाप लौटने लगा। तभी पुजारी ने कहा—"अरे भाई, तुम भी थाली उठाकर देख लो।" किसान चुप रहा। पुजारी ने थाली उठाकर उसे दे दी। अब पुजारी आश्चर्य में था—किसान के हाथ में वह थाली सोने की ही बनी रही। ●

# सोचा-पाया

दो मित्र थे। एक बनाता था मिट्टी के बरतन और दूसरा उगाता था खेत में साग-सब्जी। दोनों ही बाजार में अपनी-अपनी चीजें बेचने जाते थे। बाजार दूर था। एक दिन कुम्हार ने अपने मित्र माली से कहा—"बाजार में सामान बेचने जाना पड़ता है। इतना बोझा ढोकर ले जाना, कठिन हो जाता है। कुछ करना चाहिए।"

माली भी यही सोच रहा था। आखिर दोनों ने मिलकर एक ऊंट ले लिया। अब वे ऊंट की पीठ पर एक ओर बरतन और दूसरी ओर साग-भाजी रखकर बाजार ले जाने लगे। इससे उनकी बिक्री बढ़ गई, मगर कुम्हार की अपेक्षा माली को ज्यादा आमदनी होने लगी, क्योंकि बरतन कम, सब्जियां ज्यादा बिकती थीं। इससे कुम्हार को मन ही मन चिढ़ होने लगी।

एक दिन दोनों ऊंट पर सामान लादकर बाजार जा रहे थे। माली बैठा-बैठा ऊंघ रहा था। सब्जियां उस दिन ज्यादा लदी थीं। ऊंट को उनकी गंध आ गई। वह गर्दन घुमाकर सब्जियां खाने लगा। कुम्हार ने यह देखा। उसने सोचा—'मेरा तो कोई नुकसान हो नहीं रहा। माली ने इतनी सब्जियां लादी ही क्यों? इनमें से थोड़ी ऊंट खा लेगा, तो क्या गजब हो जाएगा? बस, वह चुपचाप बैठा, यह देखता रहा।

ऊंट मजे से सब्जियां खाता रहा। खाते-खाते वह आधी सब्जियां खा गया। इससे एक तरफ का काफी भार हल्का हो गया। यह होने पर दूसरी तरफ का संतुलन बिगड़ गया। बस, देखते-देखते कुम्हार के बरतन नीचे गिरने लगे। बरतन गिरने शुरू हुए, तो गिरते ही गए। बहुत से बरतन जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो गए।

अब कुम्हार मन में बहुत पछताया। सोचने लगा—'मैंने मित्र का बुरा सोचा, इसीलिए बुरा ही पाया। अगर मैं ऊंट को सब्जियां खाने से रोक देता, तो यह सब क्यों होता?' ●


चीटू-नीटू
हर बार सभी मुझ पर रंग डाल कर परेशान करते हैं... मैं अभी पहलवान दोस्त से कह कर सभी को चेतावनी दिलाता हूं
तुम्हें परेशान करने वाला मौहल्ले में नहीं रह सकता... जाओ, सभी से कह दो
अब कोई मुझ पर रंग डाल कर देखे, पहलवान भाई का चैलेंज है
उड़ने वाला रंग!
तुमने पहलवान भाई के चैलेंज को ललकारा है ... मैं अभी...
झूठी शिकायतें... तुम्हें तो मज़ा चखाना ही होगा
जब पहलवान भाई ने शुरुआत कर ही दी है तो...
भइया... अब कहीं यह न कहना कि नीटू ने सूखा ही छोड़ दिया



## शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा-सा, सुंदर-सा शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० मार्च, १९९० तक शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भेज दीजिए। पसंद आए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

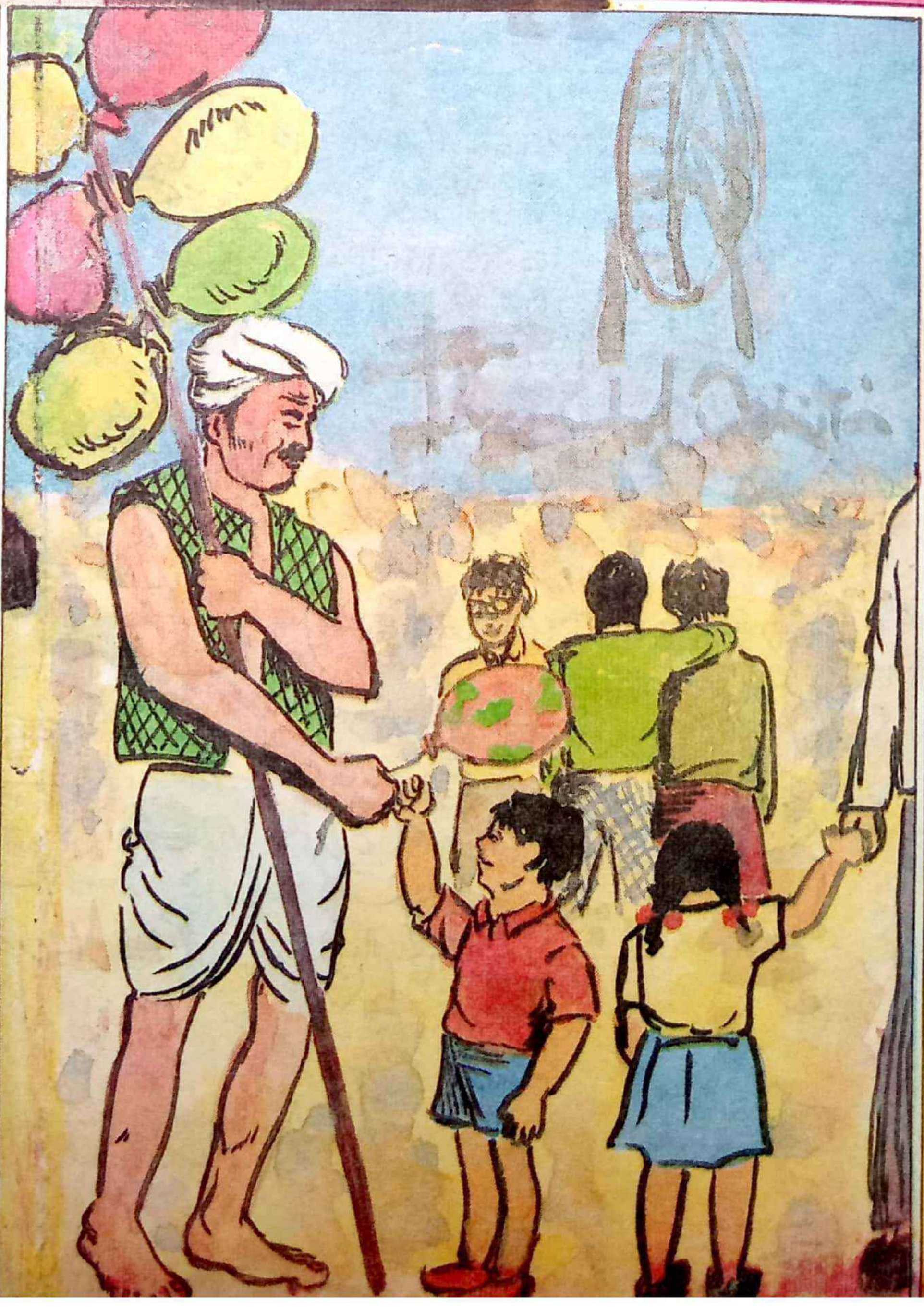
परिणाम : मई '९० अंक

## पुरस्कृत चित्र

जाती. ती. आपा
द्वारा ओमो स्टोर,
पो. हापोली,
जि. एल. सुबनसीरी
(अरुणाचल प्रदेश)

इनके चित्र भी पसंद आए—

शकुंतला,
त्रिलोकपुरी, दिल्ली;
कामाख्या बाला गुहा,
सीतामढ़ी;
विशाल कुमार झा,
राउरकेला;
कविता यादव, उज्जैन।



# दोस्त

बहुत साल पहले की बात है। तीन भाई-बहन थे— एक लड़का और दो लड़कियां। लड़के का नाम था मदन। वह सबसे बड़ा था। लड़कियों में बड़ी का नाम था रक्षा और छोटी का उषा। मदन का एक और दोस्त था— पिंटू कुत्ता।

एक बार कहीं से मदन एक शेर बच्चे को उठा लाया। उसका नाम रखा चिंटू। मदन चिंटू को बहुत प्यार करता था। कुछ वर्षों बाद, चिंटू बड़ा होकर बहुत ताकतवर शेर बन गया। पर तब भी वह पालतू जानवर ही रहा। वह सब बच्चों और पिंटू कुत्ते के साथ हिल-मिलकर रहता था।

एक बार ये पांचों दोस्त कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक राक्षस को सोते हुए देखा। बच्चों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कभी राक्षस नहीं देखा था। पहले तो वे डरे। फिर उन्हें लगा, राक्षस तो सो रहा है। चलो, पास चलकर देखते हैं। मगर राक्षस सो नहीं रहा था। जैसे ही ये बच्चे उसके पास पहुंचे, उसने झपटकर उषा को पकड़ लिया। उषा जोर से चिल्लाई— "बचाओ, बचाओ।"

तब पिंटू कुत्ते और चिंटू शेर उसकी मदद करने को झपटे। मदन और रक्षा भी उषा को बचाने आए।

पिंटू ने अपने नाखून जोर से राक्षस के शरीर में चुभो दिए। राक्षस नहीं मरा। फिर चिंटू ने उस राक्षस को जोर से काटा। चिंटू जोर-जोर से दहाड़ने लगा। पिंटू तेजी से भौंका। राक्षस ने भागना चाहा, तो मदन ने उसका रास्ता रोक लिया। वह दूसरी तरफ गया, तो पिंटू ने उसके ऊपर छलांग लगा दी। राक्षस बोला— "बच्चो, मुझे अपने इन पालतू जानवरों से बचाओ। मैं वायदा करता हूं, कभी किसी को तंग नहीं करूंगा। हमेशा के लिए यहां से चला जाऊंगा।" मदन ने चिंटू-पिंटू को पुकारा, तो वे दौड़े आए। घायल राक्षस उठा और भागता चला गया। जल्दी ही वह नजरों से ओझल हो गया। सारे बच्चे ताली बजा-बजाकर हंसने लगे। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह कोई सच्ची घटना थी या स्वप्न। **—ईशान गुप्ता, नई दिल्ली**

**इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : कपिल जैन, भिवानी; ममता बाजपेई, सीतापुर; निमिष गौतम बुलन्दशहर।**




# नई पुस्तकें

झिलमिल कथाएं— लेखक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पृष्ठ १३५; मूल्य : २० रुपए।

**पुस्तक में छोटी-छोटी ४९ कहानियां हैं। ये कहानियां छोटे बच्चों के लिए ही नहीं, वरन बड़े बच्चों के लिए उतनी ही शिक्षाप्रद और आनंद दायक हैं। कहानियों में विविधता है— एक कहानी में हवा और बादल बात कर रहे हैं, तो दूसरी में चिड़िया और पेड़ बतिया रहे हैं। एक कहानी में कौरव-पांडव हैं, तो दूसरी में चौधरी स्वरूप सिंह, तीर्थंकर नेमिनाथ हैं, तो सुभाषचंद्र बोस भी हैं। हर कहानी का अपना अलग एक रंग, एक अलग मिठास भी है। पूरी पुस्तक में रोचकता का तारतम्य है।**

देश-विदेश की लोक कथाएं— ले. विश्वनाथ गुप्त; प्रकाशक : परमेश्वरी प्रकाशन, बी-१०८ प्रीत विहार, दिल्ली-९२; मूल्य : ३० रुपए।

**भारत सहित विश्व के १४ देशों की लोक-कथाएं पुस्तक में हैं। अलग-अलग परिवेश की कथा होने के बावजूद भी, ये बच्चों को समान रूप से आकर्षित करती हैं। सरल और सुबोध भाषा होने के कारण पुस्तक बच्चों में लोकप्रिय हो सकती है। लेखक का नाम बाल साहित्य में जाना-पहचाना है। वह बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हैं। बोहिमीया की कहानी 'चूहे का बिल' के नायक का नाम 'दीपक' रख कर उसे पाठक के अधिक निकट ला दिया है। 'काठ के जूते' कहानी में सम्राट मीकाडो एक जाना-पहचाना नाम है।**

नन्हे-मुन्ने गीत (भाग-१ और भाग-२) — ले. प्रेमकिशोर पटाखा; प्रकाशक : एलाईड पब्लिकेशन (प्रा.) लि., १०४ ए. मायापुरी फेज-२ दिल्ली; मूल्य : ६ रुपए प्रत्येक।

**रंगीन चित्र और सुंदर छपाई, रोजमर्रा के विषयों पर छोटे-छोटे शिशु गीत, इन पुस्तकों की पहचान हैं। नन्ही पुस्तक नई कलम, शब्द मिलें हैं कम से कम। तितली जब स्कूल में आई, बच्चों ने आवाज लगाई, चार-चार पंक्तियों के ये गीत ऐसे लगते हैं, जैसे बच्चों के ही मुंह से निकल रहे हों। यही इन पुस्तकों की विशेषता है।**

रंग-बिरंगी कहानियां (भाग-१ और भाग-२)— ले. मधु बी. जोशी; प्रकाशक : रूपा एंड कं., ३८३१ पटौदी हाउस रोड, दरियागंज, दिल्ली-२; मूल्य : १० रुपए प्रत्येक।

**पांच-पांच कहानियों की ये दो पुस्तकें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। लोक-कथाओं पर आधारित लोभी ब्राह्मण चतुरा नारी जैसी कहानियां रोचक तो हैं ही, रेखांकन चित्रों ने इन्हें और अधिक आकर्षक बना दिया है। पुस्तकों के नाम यदि किसी कहानी पर आधारित होते, तो पुस्तक और अधिक आकर्षक हो जाती।**

राष्ट्र के प्रतीक— लेखक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक:पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८ ईस्ट पार्क रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-५; मूल्य : १२ रुपए।

**पुस्तक में कहानियों के द्वारा बच्चों को राष्ट्र के प्रतीकों से परिचित कराने का सफल प्रयत्न किया गया है। इन प्रतीकों में राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय भाषा की बातें तो पहले भी कई बार कही और सुनी गई हैं, लेकिन राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय मुहर और राष्ट्रीय सम्वत के बारे में पहली बार बच्चों को इस पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा। राष्ट्रीय प्रतीकों के रूप में 'लाल किले की सैर' की कहानी अनूठी है। चार प्रतीकों के पूरे पृष्ठ के रंगीन चित्र दिए गए हैं। पुस्तक बच्चों और बड़ों— सभी के लिए उपयोगी है।**

— बी. एन. गोयल

## आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. महिला की टोपी का ऊपरी फुदना सफेद है।
२. उसकी स्कर्ट कोट से लम्बी है।
३. ट्रे में रखे फलों में से एक बदल गया है।
४. फर्श पर पड़ा फीता एक जगह से सीधा हो गया है।
५. सोफे पर बैठे बूढ़े व्यक्ति की मूछें ऊपर की ओर तनी हैं।
६. जो मोजा उसने पकड़ा हुआ है, उसकी ऊपरी धारी संकरी है।
७. फर्श पर पड़ी पुस्तक के केवल दो पृष्ठ खुले हैं।
८. मेज पर रखी सुराही की डाट बड़ी है।
९. कोने में लगे झाड़ पर एक मोमबत्ती कम है।
१० तस्वीर में चित्रित व्यक्ति अधिक हैं।

# नई पुस्तकें

झिलमिल कथाएं— लेखक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पृष्ठ १३५; मूल्य : २० रुपए।

**पुस्तक में छोटी-छोटी ४९ कहानियां हैं। ये कहानियां छोटे बच्चों के लिए ही नहीं, वरन बड़े बच्चों के लिए उतनी ही शिक्षाप्रद और आनंद दायक हैं। कहानियों में विविधता है— एक कहानी में हवा और बादल बात कर रहे हैं, तो दूसरी में चिड़िया और पेड़ बतिया रहे हैं। एक कहानी में कौरव-पांडव हैं, तो दूसरी में चौधरी स्वरूप सिंह, तीर्थंकर नेमिनाथ हैं, तो सुभाषचंद्र बोस भी हैं। हर कहानी का अपना अलग एक रंग, एक अलग मिठास भी है। पूरी पुस्तक में रोचकता का तारतम्य है।**

देश-विदेश की लोक कथाएं— ले. विश्वनाथ गुप्त; प्रकाशक : परमेश्वरी प्रकाशन, बी-१०८ प्रीत विहार, दिल्ली-९२; मूल्य : ३० रुपए।

**भारत सहित विश्व के १४ देशों की लोक-कथाएं पुस्तक में हैं। अलग-अलग परिवेश की कथा होने के बावजूद भी, ये बच्चों को समान रूप से आकर्षित करती हैं। सरल और सुबोध भाषा होने के कारण पुस्तक बच्चों में लोकप्रिय हो सकती है। लेखक का नाम बाल साहित्य में जाना-पहचाना है। वह बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हैं। बोहिमीया की कहानी 'चूहे का बिल' के नायक का नाम 'दीपक' रख कर उसे पाठक के अधिक निकट ला दिया है। 'काठ के जूते' कहानी में सम्राट मीकाडो एक जाना-पहचाना नाम है।**

नन्हे-मुन्ने गीत (भाग-१ और भाग-२) — ले. प्रेमकिशोर पटाखा; प्रकाशक : एलाईड पब्लिकेशन (प्रा.) लि., १०४ ए. मायापुरी फेज-२ दिल्ली; मूल्य : ६ रुपए प्रत्येक।

**रंगीन चित्र और सुंदर छपाई, रोजमर्रा के विषयों पर छोटे-छोटे शिशु गीत, इन पुस्तकों की पहचान हैं। नन्ही पुस्तक नई कलम, शब्द मिलें हैं कम से कम। तितली जब स्कूल में आई, बच्चों ने आवाज लगाई, चार-चार पंक्तियों के ये गीत ऐसे लगते हैं, जैसे बच्चों के ही मुंह से निकल रहे हों। यही इन पुस्तकों की विशेषता है।**

रंग-बिरंगी कहानियां (भाग-१ और भाग-२)— ले. मधु बी. जोशी; प्रकाशक : रूपा एंड कं., ३८३१ पटौदी हाउस रोड, दरियागंज, दिल्ली-२; मूल्य : १० रुपए प्रत्येक।

**पांच-पांच कहानियों की ये दो पुस्तकें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। लोक-कथाओं पर आधारित लोभी ब्राह्मण चतुरा नारी जैसी कहानियां रोचक तो हैं ही, रेखांकन चित्रों ने इन्हें और अधिक आकर्षक बना दिया है। पुस्तकों के नाम यदि किसी कहानी पर आधारित होते, तो पुस्तक और अधिक आकर्षक हो जाती।**

राष्ट्र के प्रतीक— लेखक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक:पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८ ईस्ट पार्क रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-५; मूल्य : १२ रुपए।

**पुस्तक में कहानियों के द्वारा बच्चों को राष्ट्र के प्रतीकों से परिचित कराने का सफल प्रयत्न किया गया है। इन प्रतीकों में राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय भाषा की बातें तो पहले भी कई बार कही और सुनी गई हैं, लेकिन राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय मुहर और राष्ट्रीय सम्वत के बारे में पहली बार बच्चों को इस पुस्तक में पढ़ने को मिलेगा। राष्ट्रीय प्रतीकों के रूप में 'लाल किले की सैर' की कहानी अनूठी है। चार प्रतीकों के पूरे पृष्ठ के रंगीन चित्र दिए गए हैं। पुस्तक बच्चों और बड़ों— सभी के लिए उपयोगी है।**

— बी. एन. गोयल

## आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. महिला की टोपी का ऊपरी फुदना सफेद है।
२. उसकी स्कर्ट कोट से लम्बी है।
३. ट्रे में रखे फलों में से एक बदल गया है।
४. फर्श पर पड़ा फीता एक जगह से सीधा हो गया है।
५. सोफे पर बैठे बूढ़े व्यक्ति की मूछें ऊपर की ओर तनी हैं।
६. जो मोजा उसने पकड़ा हुआ है, उसकी ऊपरी धारी संकरी है।
७. फर्श पर पड़ी पुस्तक के केवल दो पृष्ठ खुले हैं।
८. मेज पर रखी सुराही की डाट बड़ी है।
९. कोने में लगे झाड़ पर एक मोमबत्ती कम है।
१० तस्वीर में चित्रित व्यक्ति अधिक हैं।

एक राजा थे वीरबाहू । उदार और जनप्रिय । दिन-रात प्रजा के दुःख-सुख की चिंता में खोए रहते थे । क्या मजाल कि उनसे कोई भी अन्याय हो जाए । दूसरे राजा उनसे मित्रता रखना अपना सौभाग्य समझते थे ।

एक बार की बात है । राजा वीरबाहू जंगल से शिकार खेलकर लौटे । बस, उसी दिन से उन्होंने स्वयं को महल में कैद कर लिया । न किसी से कुछ बोलते, न ही किसी को कुछ कहते । कुछ दिन तो मंत्री और सभासद चुप रहे । परंतु जब राज-काज में बाधा आने लगी, तो सबने मिल-जुलकर राजा से फरियाद की । फिर भी राजा ने कोई ध्यान नहीं दिया । उन सबकी बात अनसुनी कर दी ।

कुछ ही दिनों में राज्य में उत्पात होने लगे । धीरे-धीरे एक खुशहाल राज्य वीरान होने लगा । फिर भी राजा इस बात से बेखबर अपने महल की



# घर को वापसी

**— मनोजकुमार सिन्हा**

चहारदीवारी में ही बंद रहे । राजा के एक मित्र थे ललितदेव । वह जब भी राजा से मिलने आते, राजा उनका गर्मजोशी से स्वागत करते थे ।

इस बार जब ललितदेव राजा वीरबाहू से मिलने आए तो देखा, नगर में चारों ओर एक सन्नाटा छाया था । सभी के चेहरे पर उदासी झलक रही थी । ललितदेव कुछ अनहोनी से डरे । वह राजमहल पहुंचे, तो पहरेदारों ने उन्हें द्वार पर ही रोक दिया । यह देख, ललितदेव को बड़ा आश्चर्य हुआ । सोचने लगे— 'ये पहरेदार कभी उनके चरण छूते थे । आज उन्हें महल में जाने से रोक रहे हैं ?' फिर कुछ सोचकर पहरेदारों से पूछा— ''क्यों भई ! आज क्या बात है ! मुझे रोक क्यों रहे हो ? क्या तुम सब मुझे जान नहीं रहे ?''

''हम आपको जानते हैं, महानुभाव ! पर क्या करें ? महाराजा का ही आदेश है, किसी को उनके पास नहीं जाने दिया जाए ?''— पहरेदारों ने नम्रता पूर्वक कहा ।

पहरेदारों के आग्रह पर ललितदेव चुपचाप राजमहल से लौट पड़े । नगर में आकर पता किया, तो पता चला— महाराजा कुछ दिन पहले जंगल में आखेट को गए थे । वहां से लौटने पर उन्होंने यह हालत बना ली है ।''

ललितदेव चतुर थे। तुरंत भांप लिया— 'कोई न कोई अनहोनी घटना राजा के साथ घटी है ?' परंतु क्या ! यही जानना बाकी था ।

ललितदेव नगर में किसी के अतिथि बनकर रहने लगे । उन्होंने सर्वप्रथम उन सिपाहियों से बातचीत की, जो राजा के साथ शिकार पर गए थे । लेकिन उनसे भी राजा की उदासी का कारण पता नहीं चल सका । आखिर एक दिन ललितदेव नगर छोड़कर चल दिए ।

चलते-चलते उनके मन में एक विचार आया— 'क्यों न ! उस जंगल में ही चला जाए, जहां राजा शिकार को गए थे ?' बस, वह उसी बियावान जंगल में जा पहुंचे । रात घिरने को आ रही थी । ललितदेव ने रात घने जंगल में बिताने की सोची । वह एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गए ।

धीरे-धीरे आधी रात बीतने लगी । अचानक

ललितदेव ने देखा, उस पेड़ के नीचे एक भयानक सांप आया । उसके सिर पर मणि थी । मणि से प्रकाश फैल रहा था । ललितदेव का हलक सूख गया— 'कहीं सांप मुझे देख न ले ?' वह पेड़ के तने से और लिपटकर बैठ गए ।वह कुछ सोच ही रहे थे, तभी देखा— वह सांप एकाएक एक सुंदर कन्या बन गई । ललितदेव की आंखें हैरत से फैल गईं । उन्होंने सोचा— 'बुरे फंसे ! यहां तो एक पर एक जादुई करिश्मा हो रहा है । पता नहीं, आगे क्या होगा ?'

फिर ललितदेव ने देखा, वह कन्या एक अन्य पेड़ के पास जाकर खड़ी हो गई । वहां उसने धीमे स्वर में कुछ बुदबुदाया । तभी एक आसन प्रकट हुआ । कन्या उस आसन पर बैठ गई । इसके बाद वह विलाप करने लगी । उसकी रुलाई में इतनी करुणा थी कि ललितदेव की आंखों से भी आंसू निकल पड़े । विलाप करती कन्या को देख, ललितदेव सोचने लगे— 'लगता है, यह जादुई कन्या बहुत दुखी है । मैं शायद इसके काम आ सकूं ; जिससे मेरे मित्र का भी उद्धार हो।' वह पेड़ से नीचे उतर पड़े । अपनी जान की परवाह न कर, कन्या के पास पहुंचे । बोले— ''देवी, आप कौन हैं ? जंगल में इस तरह विलाप क्यों कर रही हैं ?''

ललितदेव के पूछने पर कन्या ने सुबकते हुए कहा— ''अपने दुर्भाग्य पर रो रही हूं ।''

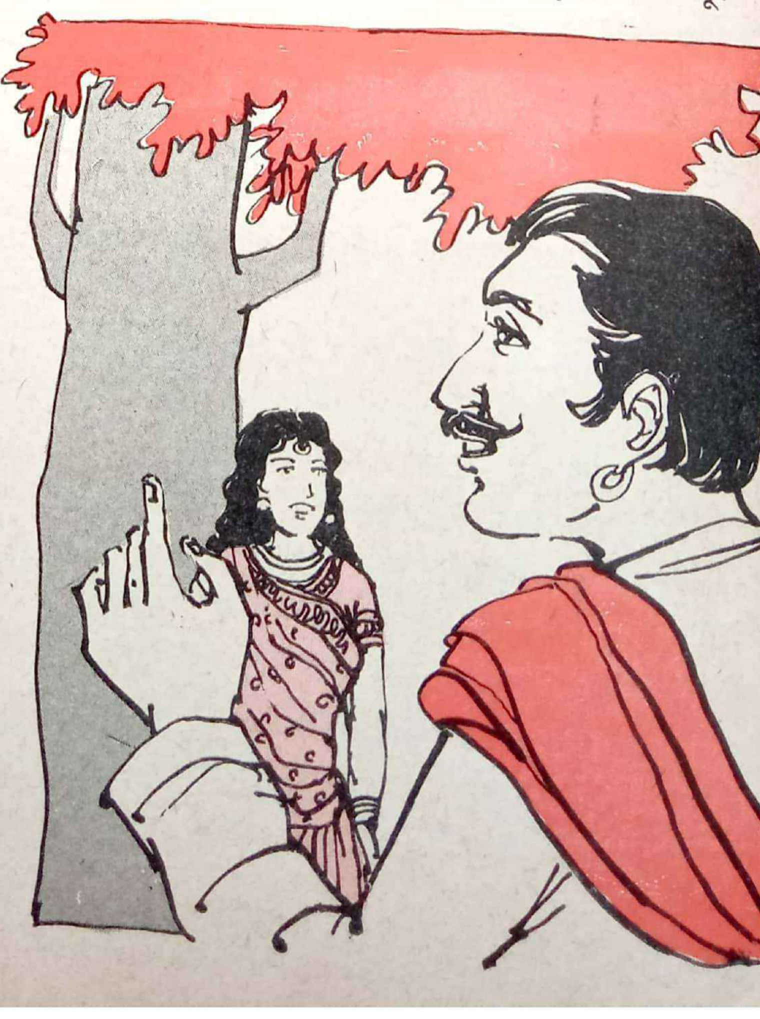
ललितदेव के बार-बार पूछने पर कन्या बताने लगी— ''मैं एक नाग कन्या हूं । मुझे सैर-सपाटे का बड़ा शौक था । मैं दिन भर अपनी सखी-सहेलियों के साथ घूमा-फिरा करती थी । एक दिन घूमते-घूमते मैं इस धरती लोक पर चली आई । यहां की मनोहारी छटा ने मेरा मन मोह लिया । मेरा जी यहां रहने को मचल उठा । मेरी सहेलियां नाग लोक लौट गईं, पर मैं अकेली यहां रह गई । मुझे इस धरती पर घूमते कुछ वर्ष बीत गए । जब मैं नाग लोक लौटी, तो वहां मेरे पिता की मृत्यु हो गई थी । नाग लोक का राजा कोई दूसरा नाग था । उसने मुझे फिर से धरती लोक पर जाने को कहा । मैं समझ गई कि नाग राजा मुझे नाग लोक से क्यों हटाना चाहते हैं ? मैं पिता की एकमात्र संतान थी । उनके बाद नाग लोक की उत्तराधिकारी मैं ही बनती । मैंने उसके आदेश को नहीं माना, तो उसने मुझे शाप दे दिया ।''

ललितदेव ने पूछा— ''उस शाप से आपको कब मुक्ति मिलेगी ?''

नाग कन्या ने कहा— ''कभी नहीं ! क्योंकि शाप बहुत कठिन है ।''

ललितदेव ने फिर पूछा— ''उसका कुछ न कुछ हल तो अवश्य होगा ?''

नाग कन्या ने कहा— ''नागराज ने मुझसे क्रोधित होते हुए कहा था— 'इतने दिन वहां धरती लोक पर रही । धरती लोक में रहने का ऋण तुम्हें चुकाना होगा । तुम्हें धरती लोक के किसी पुरुष के साथ विवाह करना होगा, तभी तुम वापस आ सकती हो ?' पर नाग लोक का होने के कारण मेरी मैत्री धरती वाले से सम्भव नहीं । मेरे सम्पर्क में जो आएगा, उसकी तुरंत मृत्यु हो जाएगी । आप ही बताइए,शाप कैसे दूर



हो ? मुझसे मेरी कहानी सुनकर मृत्यु के भय से कोई विवाह नहीं करना चाहता ।'' इतना कहकर नागकन्या फिर से विलाप करने लगी ।

ललितदेव ने नाग कन्या को चुप कराते हुए कहा— ''कुछ दिन पूर्व कोई और भी आपके पास हाल पूछने आया था ?''

नाग कन्या ने कहा— ''हां, वह अपने को राजा बता रहा था, पर मेरी कहानी सुनने के बाद चला गया ।''

ललितदेव अब सारा मामला समझ गए— 'तो मेरे मित्र की उदासी का कारण यही है । मैं अपने मित्र की खुशी वापस दूंगा ।' इसके बाद ललितदेव ने कुछ निर्णय करते हुए नाग कन्या से कहा— ''आप मेरे साथ चलें ।''

वह नाग कन्या को लेकर राजमहल के पास पहुंचे । राजा ने जब सुना कि उसका मित्र, एक कन्या के साथ आया है, तब दौड़े आए । फिर उस कन्या को देख, ठिठककर रुक गए । वह एकटक कभी उस कन्या को देखते, तो कभी अपने मित्र को ।

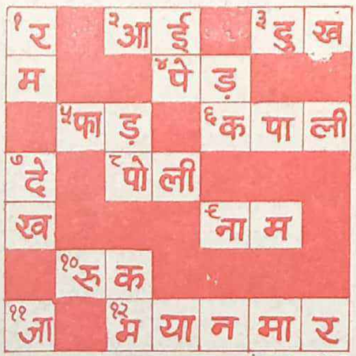
ललितदेव राजा वीरबाहू के करीब पहुंचे । धीरे से उनके कान में कुछ कहा ।

पंडित-पुरोहित बुलाए गए । विवाह की वेदी रची गई । राजा के मित्र ललितदेव नाग कन्या से विवाह कर रहे थे । जब नाग कन्या का हाथ अपने हाथ में पकड़ने का समय हुआ, तो ललितदेव ने हाथ नागकन्या की ओर बढ़ा दिया । नाग कन्या ने जैसे ही हाथ छुआ, वह विष की ज्वाला से भभक उठा । सभी डरे, किंतु ललितदेव बस पीछे हट गए । वह हाथ असली नहीं था, ललितदेव ने लकड़ी का हाथ पहले ही बनवा लिया था ।

विवाह की रस्म पूरी हो गई । नाग कन्या के स्पर्श से लकड़ी का हाथ भस्म हो गया। अब शाप भी मिट गया । सभी प्रसन्न थे । राजा वीरबाहू अपने मित्र की बुद्धिमानी की प्रशंसा कर रहे थे । तभी नाग कन्या अचानक गायब हो गई । वह नाग लोक को लौट गई थी । ●

---

## नंदन ज्ञान-पहेली : २५३
## परिणाम




इस बार कोई सर्वशुद्ध हल नहीं आया । प्रतियोगियों में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है :

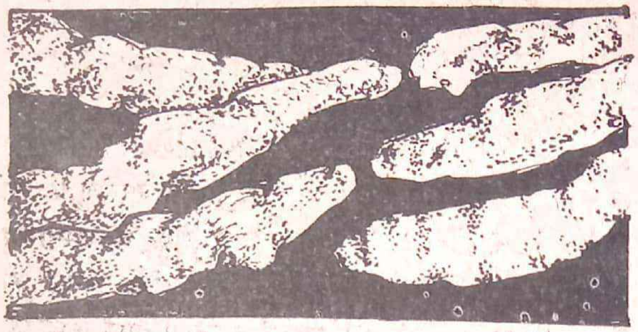
**एक गलती : पांच : प्रत्येक को सौ रुपए**

१. लक्ष्मीकांत खंडेलवाल, द्वारा रामदास गुप्ता, नए पोस्ट आफिस के पास, खेरली (अलवर); २. अवनीशकुमार ऋषि, द्वारा बैकुण्ठनाथ ऋषि, म. नं. ८५०, पंजाबी कालोनी, देवबंद (सहारनपुर); ३. अभिषेक शर्मा, द्वारा श्री यदुनाथ शर्मा, जी. आई. ७२०, सरोजनी नगर, नई दिल्ली; ४. अमृत मांडोत, रायपुर (भीलपाड़ा); ५. विजय कुमार धींगड़ा, ११-एल ब्लाक, धींगड़ा भवन, श्रीगंगानगर (राज.) ।

**दो गलती : तेरह : प्रत्येक को अड़तीस रुपए**

१. कुमार राका, नवादा (आरा); २. ओमप्रकाश मिश्र, बिजौली (औरंगाबाद); ३. अमरेन्द्र कुमार, हाजीपुर; ४. सौरभ सिन्हा, भागलपुर; ५. प्रकाशचंद्र कन्हैया, धुर्वा, रांची; ६. सुधीर मिश्र, धनबाद; ७. कविता गुप्ता, जयपुर; ८. मुकुलकुमार, पटना; ९. रंजना झा, चितरंजन (बर्दवान); १०. सुदीपकुमार, पटना; ११. अशोककुमार, बरौनी (बि.); १२. स्मिता, पटना; १३. संजय अग्रवाल, कर्सियांग (प. बंगाल) ।

# बातें रंग-बिरंगी



**हल्दी :** मसाले के रूप में हल्दी का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। पिसी हुई हल्दी को सब्जियों, अचारों, पुलाव आदि में रंग और महक पैदा करने के लिए काम में लाते हैं। हल्दी का रंग गहरा पीला होता है। इसका स्वाद तीखा और कसैला होता है।

हल्दी के पौधे का मूल स्थान दक्षिणी भारत और इंडोनेशिया माना जाता है। हिंद महासागर के टापुओं में हल्दी खूब होती है। इसके पौधे की जड़ों को उबालकर और सुखाकर हल्दी की गांठें प्राप्त की जाती हैं। इन सूखी गांठों को एक ड्रम में घुमाकर उन पर पालिश की जाती है। फिर गांठों को पीसकर हल्दी का पाउडर बनाया जाता है।

हल्दी औषधि गुणों से भी भरपूर है। चोट लगने पर दूध में हल्दी मिलाकर पीने से राहत मिलती है। हल्दी से सूजन कम हो जाती है। हल्दी के सेवन से रक्त का कोलस्टरो भी कम होता है। गले के विकारों को ठीक करने में भी हल्दी काफी प्रभावशाली है। हल्दी के औषधि गुणों की जानकारी के लिए अनेक संस्थानों में अनुसंधान किए जा रहे हैं। हैदराबाद का 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रीशन' हल्दी के विषय में खोज कार्य कर रहा है।

**धूल :** हवा में उड़ते पदार्थों के सूक्ष्म कणों को धूल कहा जाता है। धूल में मिट्टी, कोयला, लकड़ी, ईंट, पत्थर, धातुएं आदि अनगिनत पदार्थों के कण होते हैं। अधिकतर लोगों का विचार है कि धूल हमारे लिए बेकार है। लेकिन वास्तव में धूल हमारे लिए बहुत उपयोगी है।

बादलों में पानी की भाप धूल के कणों पर ही संघनित होकर बूंदों का रूप ले पाती हैं। ये ही बूंदे वर्षा के रूप में धरती को जीवनदान देती हैं। यदि बादलों में धूल कण न होते, तो वर्षा की बूंदें न बन पातीं।

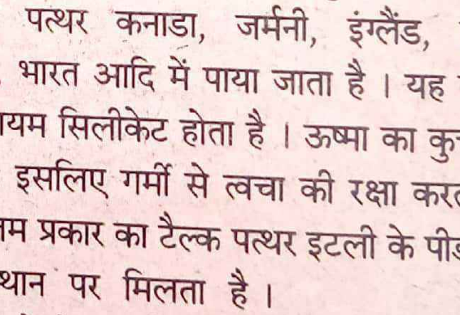
हमारे वायुमंडल में तैरते हुए धूल कणों द्वारा ही सूर्य का प्रकाश चारों ओर छितराता है। इसका लाभ यह होता है कि सूरज छिपने के बाद भी लगभग एक घंटे तक एकदम अंधेरा नहीं होता, बल्कि हलका-सा प्रकाश रहता है। गोधूलि बेला में सूर्य की सुंदर किरणें धूल कणों के कारण ही दिखती हैं।

**टैलकम पाउडर :** टैलकम पाउडर का प्रयोग दुनिया भर में किया जाता है। यह गर्मी से त्वचा की रक्षा करता है। पसीने से पैदा होने वाले चिपचिपेपन को रोकता है। टैलकम पाउडर एक प्रकार के सबसे मुलायम पत्थर को पीसकर और उसमें सुगंध मिलाकर बनाया जाता है। इस पत्थर को टैल्क या सोप स्टोन कहते हैं। यह चट्टानों से प्राप्त होता है। इसका रंग हल्का सिलेटी या हरापन लिए हुए होता है।

टैल्क पत्थर कनाडा, जर्मनी, इंग्लैंड, इटली, अमरीका, भारत आदि में पाया जाता है। यह वास्तव में मैग्नीशियम सिलीकेट होता है। ऊष्मा का कुचालक होता है। इसलिए गर्मी से त्वचा की रक्षा करता है। सबसे उत्तम प्रकार का टैल्क पत्थर इटली के पीड़मोन्ट नामक स्थान पर मिलता है।

टैल्क से केवल टैलकम पाउडर ही नहीं बनाया जाता, भट्टियों की ईंटें भी बनाई जाती हैं। इससे अम्ल रखने के बर्तन भी बनाए जाते हैं। दर्जी कपड़ों पर कटाई के लिए निशान लगाने के लिए टैल्क का प्रयोग करते हैं। संसार में प्राप्त होने वाले टैल्क का एक चौथाई हिस्सा हर वर्ष पेंट, टाइल, कागज तथा रबर बनाने के कार्य में आता है।

—राजीव गर्ग



# पत्र मिला

□ जनवरी अंक में सबसे अच्छा शिव-पार्वती का एलबम लगा। कैलेंडर तथा कहानियां भी एक से बढ़कर एक थीं। 'चीटू-नीटू' ने तो हंसा-हंसाकर लोट-पोट कर दिया।

**— प्रकाशचंद्र बडोला, आमेट, उदयपुर**

□ 'नंदन' के पचीस वर्ष पूरे होने पर बधाई। पत्रिका की प्रशंसा में दो पंक्तियां— अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है। मुर्दा है वह पुस्तकालय जहां 'नंदन' नहीं है।— **सुनीलकुमार अग्रवाल, डालटनगंज**

□ इस अंक में 'रानी के आंसू' और 'गांव का मंदिर' कहानियां विशेष प्रिय लगीं। मेरे पापा को 'नंदन' मुझसे भी ज्यादा अच्छा लगता है। और किसी चीज के लिए वह जल्दी पैसे नहीं देते, मगर 'नंदन' के लिए कभी मना नहीं करते।

**— अशोक गुप्ता, कपूरथला**

□ जनवरी अंक हर मायने में उत्कृष्ट लगा। 'फूल चढ़ाओ' और 'गांव का मंदिर' कहानियों ने सोचने को विवश कर दिया। नव वर्ष का कैलेंडर देकर आपने सचमुच हमें शुभकामनाएं दी हैं। — **समीरकुमार घोष, जगदीशपुर**

□ नव वर्ष के प्रथम अंक का बड़ी बेसब्री से इंतजार था। यह आशा से भी बढ़कर निकला। शास्त्री जी की चित्र-कथा, 'तीतर बोला,' 'तीसरी राजकुमारी,' 'सुगंध' कहानियां विशेष पसंद आई। 'नंदन' की तुलना किसी बाल मासिक से करना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है।

**— प्रशांत क्षीरसागर, बैतूल**

□ पत्रिका में वे सारे गुण हैं, जो एक अच्छे मित्र में होते हैं। एक ओर जहां मनभावन कहानियां और सरस कविताएं बच्चों का मनोरंजन करती हैं, वहीं उनकी शरारतों पर भी रोक लगाती हैं। — **रत्नेश्वरकुमार मिश्र, प. चम्पारण**

□ नए अंक की विशेषता थी— डा. हरीश निगम की कविताएं। नए वर्ष का कैलेंडर लगाने से हमारे कमरे की रौनक बढ़ गई। हम बाल समाचार की तो फाइल बना लेते हैं। 'बातें रंग-बिरंगी' स्तम्भ भी बहुत रोचक है।

**— रामेश्वर मिश्र, नरकटियागंज**

□ जनवरी अंक बेहद पसंद आया। चित्र-कथा से भूले-बिसरे शास्त्री जी के बारे में अच्छी जानकारी मिली। एलबम में शिव-पार्वती देखकर बहुत खुशी हुई।

**— देवेंद्रकुमार गौतम, राल, मथुरा**

**इनके पत्र भी उल्लेखनीय लगे : धर्मेंद्र शर्मा, रावतसर; अश्विनीकुमार आलोक, समस्तीपुर; राजकुमार बंसल, हिंडौन सिटी।**

# शीर्षक बताइए : परिणाम

इस बार भी बिलकुल चित्र की ही तरह, चहकते-महकते शीर्षक भेजे पाठकों ने। जनवरी अंक के रंगीन चित्र के लिए ये शीर्षक चुने गए—

**देख रहीं हूं मैं जहां,**
**फूल ही फूल हैं वहां।**

— आशु माहेश्वरी, ५३ गगन विहार, दिल्ली-५१।

**फूलों को ले जाऊंगी,**
**घर को मैं सजाऊंगी।**

— विभा अग्रवाल, वी-७ वसुंधरा बैंक कालोनी, जहांगीराबाद, भोपाल।

**इक फूल परी,**
**फूलों से घिरी।**

— सतविंदर संधु, गर्ल्ज हाई स्कूल के सामने, पो. संतोखगढ़, जि. ऊना (हि. प्र.)।

**इनके शीर्षक भी पसंद आए—** प्रिंसकुमार, पटना; सैयद शबाहत हुसैन, लखनऊ; संजयकुमार श्रीवास्तव, सतना; पीयूष कर्धनी, मुरादाबाद; आनंदकुमार झा, कांसबहाल (उड़ीसा); उषा सिंह, कलकत्ता; कनक राय, बर्नपुर (प. बं.); ब्रजमोहन बांसल, लुधियाना; प्रमोदकुमार नेवारे, सालेकसा (महा.)।



# पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ________________ आयु ________

पूरा पता ________________

________________

रुचि ________________

**पुस्तकें पढ़ने तथा लेखन में रुचि :**

१. मनोज जैन, १५ वर्ष, १६ इमामबाड़ा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र); २. आशुतोष स्वामी, १३, नवोदय विद्यालय, बोहानी (म.प्र.); ३. जसबीर सिंह, १७, २९, दयालबाग, अम्बाला छावनी; ४. राजेशकुमार, १५, अताउल्लाहपुर, लालगंज, वैशाली (बि.); ५. अवधेशकुमार बरनवाल, १७, स्टेशन रोड, बेतिया, जि. प. चम्पारण (बि.); ६. विनोदकुमार कासलीवाल, १५, द्वारा नेमीचंद राजकुमार कासलीवाल, पो. रानोली (सीकर); ७. मो. अकील, १४, द्वारा अब्दुल वाजिद, मो. भुल्लीयां, छीपी वाली मस्जिद, काशीपुर; ८. रणजीतकुमार, १६, द्वारा वीरेंद्रकुमार वर्मा, हिलसा (बि); ९. आनंद शर्मा, १४, द्वारा महेंद्रदेव शर्मा, एडवोकेट, डिस्ट्रिक्ट सिविल कोर्ट, बागपत (मेरठ); १०. संजयकुमार बीरुका, १५, द्वारा बालकिशन बीरुका, मकान नं. १६२/१९, मो. गस्तीवाड़ा, नारनौल (हरि.); ११. शशि गंगवार, १५, के-एच-१९९, नया कविनगर, गाजियाबाद; १२. मनीष गोयल, १२, सी.टी.-६३, यमुना कालोनी, देहरादून; १३. विकास गिरोत्रा, १७, द्वारा जगदीशचंद्र गिरोत्रा, वार्ड-३, बैरक ३७-ए, मकान नं. ८, गांधी नगर, रोहतक; १४. विकास जैन,१५, २२४, वीर नगर, मवाना (मेरठ); १५. सुरेश कु. जायसवाल, १७, सिकरा बाजार, प. चम्पारण (बि.); १६. धर्मेंद्रकुमार, १३, द्वारा अजितकुमार, गोगरी कालोनी, खगड़िया; १७. प्रेमप्रकाश अग्रवाल, १६, १००-बी. मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

**खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :**

१. मो. आशिक हसन, ११ वर्ष, जुरन छपरा रोड नं.४, मुजफ्फरपुर (बि.); २. रेखा रानी, १७, द्वारा हरिओम प्रकाश, ब्रह्म बाजार, हाथी वाली गली, चंदौसी, जि. मुरादाबाद (उ.प्र.); ३. रानीकुमारी, १०, यमुना प्र., चित्रगुप्त नगर, पोखरिया, जि. बेगुसराय (बि.); ४. नदीम अनवर, १५, मुंशीगंज, बाराबंकी, (उ.प्र.); ५. सतनाम सांगरा, १७, ग्रा.+पो. संतोखगढ़, जि. ऊना (हि.प्र.); ६. दीपिका विश्वास, १५, द्वारा विमलचंद विश्वास, पोस्ट आफिस रोड, सम्भल (मुरादाबाद); ७. रवींद्र मयूर, १६, ५५, टाट पट्टी, बाखल, इंदौर; ८. दीपककुमार, १२, कृष्णानंद प्रसाद, मो. मजहर टोला, साहिबगंज (बि.); ९. विष्णुकुमार केडिया, १३, जी.टी. रोड, मुर्गाशाल, आसनसोल, जि. बर्दवान; १०. सांवरलाल अग्रवाल, १६, रामदेव विनोदकुमार, रतन जी रोड, धनबाद; ११. आनंद रंजन, १२, द्वारा डा. दिवाकर पांडेय, अध्यक्ष, बेगूसराय क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, बेगूसराय; १२. शैलेंद्र, १६, द्वारा डा. के.एन. सिंह, क्वा. नं. २४९, सेक्टर ४-ए, स्ट्रीट ५, बोकारो स्टील सिटी (बि.); १३. रविशंकर सिंह, १५, जेल कम्पाउंड, दरभंगा; १४. वर्तिका माथुर, ९, ए-३/१६-डी. पश्चिम विहार, नई दिल्ली; १५. प्रदीप मित्तल, १७, रामकुमार, संदीपकुमार, जोडवां कुआं, कैराना (मुजफ्फरनगर); १६. अमित सक्सेना, १३, ८६ सेक्टर ४ तिमारपुर, दिल्ली; १७. दीप्ति राजपाल, ९ ७१-एक्स प्रिंस रोड, हरपाल नगर, मुरादाबाद; १८. मुकुलकुमार वशिष्ठ, १३, २४४/१० स्कूल ब्लाक, मंडावली, फाजलपुर, दिल्ली; १९. अस्त अली, १३, डमरू फैक्ट्री के पीछे, तेलीवाड़ा रोड, बीकानेर; २०. नरेशचंद्र पंत, १७, ग्रा. वंडिया, नहरवार, पो. किच्छा, नैनीताल।

**पहेली, डाक-टिकट संग्रह और घूमने में रुचि :**

१. निर्मला अग्रवाल, १६ वर्ष, २०-२-१७४ कबूतरखाना, हैदराबाद; २. सुनीलकुमार तिवारी, १३, द्वारा डा. नंदकिशोर तिवारी, निराला साहित्य मंदिर, सासाराम (बि.); ३. अशोककुमार कोरी, १७, २५ नरसिंह बोस लेन, रामकृष्णपुर, हावड़ा; ४. सुनीलकुमार गुप्ता, ११, कस्बा निजामाबाद, आजमगढ़; ५. अमरगगन, १५, हलवाई गली, चम्बा (हि.प्र.); ६. राजेशकुमार, १७, द्वारा हरकेशसिंह, मु. चिम्मन, चांदपुर (बिजनौर); ७. राजेंद्र सोलंकी, १७, लखोटियों का चौक, जैतारण, पाली (राज.); ८. आलोककुमार, १४, मुनेश्वर प्रसाद, पो.बा. नं. २, जि. मधुबनी (बि.); ९. जुहूरानी, १०, द्वारा कृष्णनंदन प्रसाद, मो. मजहर टोला, पो. साहिबगंज (बि.); १०. संदीप जेठलिया, १४, द्वारा लक्ष्मीनारायण जेठलिया, ५८, डोरे नगर, उदयपुर; ११. पुष्पदीप गुप्ता, ११, लवली प्रिंट स्टोर, नूरपुर, कांगड़ा (हि.प्र.); १२. विकास कु. मुरारका, १२, ध्वजा गली, सुलतानगंज, भागलपुर (बि.); १३. मनु दत्ता, १२. गुप्ता निवास, प्रताप गली, हमीरपुर (हि.प्र.); १४. मृत्युंजय कुमार, १४, द्वारा अनिरुद्ध प्रसाद, ब्लाक रोड, एकमा (सारण); १५. युवराजकुमार, १४, द्वारा आर.एन. शर्मा, १४, वीर कुंवरसिंह पथ, किताब भवन लेन, बोरिंग रोड, पटना; १६. हेमंतकुमार पुष्पकार, १७, क्वा. नं. ९०० एन-२, बी-सेक्टर, गोविंदपुरा, भेल, भोपाल; १७. आदित्यकुमार अग्रवाल, १२, मै. स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., पो. कतरासगढ़, जि. धनबाद (बि.)।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

**कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन**

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४